सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh

RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number :
F.2 (P-2) Press/2023

www.newsparivahan.com

परिवहन विशेष

वर्ष 03, अंक 58, नई दिल्ली । बुधवार, 08 मई 2025, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

आज का सुविचार

मेहनत करने से दरिद्रता नहीं रहती, धर्म करने से पाप नहीं रहता, मौन रहने से कलह नहीं होता

03 दिल्ली में हैं 32 हजार बांग्लादेशी और रोहिंग्या घुसपैठिये,
06 ...बदला हुआ भारत, बदला लेना जानता है
08 झारखंड आन्दोलन कारी भाई कपूर बागी को श्रद्धांजलि देने चांडिल पहुंचे मुख्यमंत्री

"परिवहन विशेष हिन्दी दैनिक समाचार पत्र" अपने द्वितीय वार्षिकी समारोह में आपको आमंत्रित करता है

"परिवहन विशेष" हिन्दी दैनिक समाचार पत्र आर .एन .आई . द्वारा मान्यता प्राप्त आपके द्वारा प्राप्त भरपूर सहयोग से निष्पक्ष समाचार प्रदान करते हुए अपने 2 साल पूरे करने में सक्षम रहा। इन दो सालों में समाचार पत्र को निष्पक्ष रूप से चलाने में आप सभी का भरपूर सहयोग रहा जिसके लिए प्रशासनिक विभाग परिवहन विशेष आप सभी का दिल से आभार व्यक्त करता है और आशा करता है की भविष्य में भी आपका सहयोग हमारे साथ ऐसे ही बना रहेगा। इन दो सालों में समाचार पत्र को राष्ट्रीय स्तर पर सभी शहरों और जिलों तक पहुंचाने और वहां की सही और सच्ची खबरें हम तक पहुंचाने वाले रिपोर्टर्स का दिल से धन्यवाद।

---- सम्मान समारोह -----

दिनांक 17 मई 2025,
स्थान :- कंस्टीट्यूशन क्लब आफ इंडिया, रफी मार्ग, नई दिल्ली,
समय :- प्रात 10 बजे से शाम 7 बजे तक,

मुख्य अतिथि ₹श्री शंभू सिंह₹, आई .ए .एस . सचिव
शिपिंग भारत सरकार (सेवा निवृत्त) शिपिंग मंत्रालय

आमंत्रित विशेष अतिथि

1. श्री चंद्रमोहन आईएएस सेवा निवृत
2. श्री अमर पाल सिंह जॉइंट कमिश्नर, भारत सरकार
3. श्री आर के भटनागर, आईएएस सेवा निवृत
4. साइकिलिस्ट योगेंद्र सिंह, परामर्शदाता
5. श्री एम के गिरी, अधिकृत वरिष्ठ अधिवक्ता उच्चतम न्यायालय भारत
6. श्री अनिल छिक्कारा, उपायुक्त परिवहन सेवा निवृत, परामर्शदाता
7. श्री महाराज सिंह, मोटर वाहन नियम/अधिनियम परामर्शदाता
8. श्री अजय शाह, सड़क सुरक्षा परामर्शदाता
9. पायलट अनिल शर्मा सड़क सुरक्षा परामर्शदाता
10. श्री प्रशांत चोपड़ा सड़क सुरक्षा परामर्शदाता
11. श्री राजीव शरद सड़क सुरक्षा परामर्शदाता
12. डॉ भरत सिंह, शिक्षाविद् (प्रिंस इंस्टीट्यूट आफ इन्नोवेटिव टेक्नोलॉजी ग्रेटर नोएडा गौतम बुद्ध नगर उत्तर प्रदेश)
13. श्री हेतराम
14. श्री अशोक
15. श्री राहुल गुप्ता
16. श्री ए ई कौशिक
17. श्री अशोक सक्सेना
18. श्री अशोक नारंग
19. श्री बरुड ठाकुर अधिवक्ता उच्चतम न्यायालय भारत
20. श्री नरेन्द्र

के साथ भारत देश में जनहित एवम् कल्याणकारी कार्यों में योगदान प्रदान करने वाले कार्यकर्ताओं/ संस्थाओं / ट्रस्ट को सम्मान प्रदान किया जाएगा।

'परिवहन विशेष हिन्दी दैनिक समाचार पत्र" के द्वितीय वार्षिकी समारोह में मुख्य रूप से

1. सड़को को जाम और दुर्घटनाओं से मुक्त करवाने,
2. दिल्ली को प्रदूषण मुक्त राज्य बनाने,
3. लेन ड्राइविंग कितनी अनिवार्य?"
4. "सड़क दुर्घटना से कैसे हो सकता हैं बचाव ?"
5. "दिल्ली को प्रदूषण मुक्त राज्य कैसे बनाया जा सकता है?"

पर परामर्शदाताओं के विचार आप को प्राप्त होगे। इसके साथ इस समारोह में

1. वक्ताओं को पुरस्कार से सम्मानित किया जाएगा,
2. परिवहन क्षेत्र में अच्छा कार्य करने वाले संगठनों को पुरस्कार से सम्मानित किया जाएगा,
3. सड़क सुरक्षा के प्रति कार्य करने वाले संगठनों के पदाधिकारियों को पुरस्कार से सम्मानित किया जाएगा,
4. परिवहन विशेषज्ञों को पुरस्कार से सम्मानित किया जाएगा,
5. समाचार पत्र से अलग अलग राज्यों से जुड़े श्रेष्ठ एंकर, वीडियोग्राफर, रिपोर्टर्स, लेखक, ज्योतिषाचार्य, कवि एवम् सहायकों को सम्मानित किया जाएगा।

– संजय कुमार बाटला
संपादक

दिल्ली परिवहन आयुक्त द्वारा परिवहन विभाग की एसटीए एवं आपरेशन शाखा की कार्यप्रणाली एवं कार्य प्रक्रिया की समीक्षा के लिए गठित की गई कमिटी

संजय बाटला

नई दिल्ली। अतिरिक्त मुख्य सचिव एवम् आयुक्त परिवहन जिनकी नजर में तकनीकी पदों पर गैर तकनीकी अधिकारियों की कार्यशैली बेहतर है और जिनके द्वारा स्वयं तकनीकी पदों पर से तकनीकी अधिकारियों को हटा कर ग़ैर तकनीकी अधिकारियों को नियुक्त कर दिया गया वह भी बेख़ौफ़ होकर माननीय सुप्रीम कोर्ट के दिशा निर्देशों को दरकिनार कर। उनके द्वारा एसटीए एवम् आपरेशन शाखा की कार्यप्रणाली ओर कार्य प्रक्रिया के आकलन के लिए कमेटी का गठन करना इस बात को सिद्ध करता है की वह अपने पक्ष को सिद्ध करने की कोशिश करने के लिए ही इस कमेटी का गठन कर रहे हैं क्योंकि इस कमेटी में लिए गए तीनों अधिकारी पद पर रहते हुए उनके सबसे करीबी और उनकी हा में हा मिलाने के लिए विख्यात रहे हैं, ऐसे करीबी और अपने विश्वासपात्र अधिकारियों को कमेटी में नियुक्त कर कैसे निर्णय आ सकते हैं इसका अंदाजा आम आदमी लगा सकते हैं।

हम यहां सिर्फ एक प्रश्न अतिरिक्त मुख्य सचिव एवम् आयुक्त परिवहन से पूछना चाहते हैं, क्या वह अपने वाहन को मोची से ठीक करवाना पसंद करेंगे ? अगर उनका जवाब हा है तो जो वह कर रहे हैं सब ठीक है वर्ना आप समझ ही सकते हो की दिल्ली की सड़को पर चलने वाले मुसाफिरों का आने वाले समय मे क्या हाल होने वाला है।

(आपकी जानकारी के लिए आदेश की हिन्दी रूपांतर की प्रति स्लगन)

राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली सरकार
परिवहन विभाग (एसटीए शाखा)
5/9 अंडर हिल रोड, दिल्ली-110054
सं.एफ. सचिव

(एसटीए)/टीपीटी/2025/एसटीए/19843, दिनांकः-02-05-202

आदेश

परिवहन विभाग, जीएनसीटीडी में काम करने का व्यापक अनुभव रखने वाले निम्नलिखित सेवानिवृत्त अधिकारियों की एक समिति एसटीए शाखा और ऑपरेशन शाखा में प्रचलित कार्यप्रणाली और कार्य प्रक्रिया की व्यापक समीक्षा और आकलन करने के लिए गठित की जाती है:

1. श्री. अजय सामल, उप. आयुक्त (सेवानिवृत्त)
2. श्री सुभाष चंद, पीसीओ (सेवानिवृत्त)
3. श्री. सुशील अहलूवालिया, डीएएसएस कैडर (सेवानिवृत्त)

संदर्भ की शर्तें

1. समिति राज्य परिवहन प्राधिकरण तथा परिचालन शाखा, परिवहन विभाग द्वारा जारी सभी दिशा-निर्देशों/आदेशों/परिपत्रों की व्यापक समीक्षा करेगी, उनका एक सार-संग्रह तैयार करेगी तथा ऐसे निर्देशों को उपयोगकर्ता अनुकूल बनाने, स्वयं व्यवसाय करने में आसानी लाने के लिए सुझाव देगी तथा बदले हुए आर्थिक परिवेश के अनुरूप आवश्यक नए उपाय सुझाएगी।
2. उपर्युक्त 1 के संदर्भ में, समिति के सदस्य न्यायालय के आदेशों को ध्यान में रखेंगे तथा अन्य राज्यों की सर्वोत्तम प्रथाओं के आधार पर अपने सुझावों की तुलना करेंगे।
3. समिति के सदस्य इस कार्य आदेश जारी होने की तिथि से 45 दिनों के भीतर अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत करेंगे
4. समिति के सदस्यों को उपरोक्त कार्य हेतु एकमुश्त 1 लाख रुपये (प्रत्येक) का भुगतान किया जाएगा।

यह आदेश अतिरिक्त मुख्य सचिव सह आयुक्त, परिवहन विभाग, जीएनसीटीडी के अनुमोदन और वित्त विभाग, जीएनसीटीडी की सहमति से यू.ओ. संख्या 14/एफ.आई.एन./डी.एस.आई./25-26 दिनांक 28-04-25 के तहत जारी किया जा रहा है।

जानकारी के लिए कॉपी करें:

1. माननीय परिवहन मंत्री, जीएनसीटीडी के निजी सचिव।
2. अपर मुख्य सचिव सह आयुक्त (परिवहन), जीएनसीटीडी के निजी सचिव।
3. विशेष आयुक्त (संचालन), परिवहन विभाग, जीएनसीटीडी,
4. उप सचिव, राज्य परिवहन विभाग, जीएनसीटीडी।
5. सभी उप आयुक्त, परिवहन विभाग, जीएनसीटीडी।
6. उप लेखा नियंत्रक, परिवहन विभाग, जीएनसीटीडी।
7. वरिष्ठ सिस्टम विश्लेषक, परिवहन विभाग, जीएनसीटीडी।
8. सभी डीटीओएस/पीसीओ/एसओ, परिवहन विभाग, जीएनसीटीडी।
9. सहायक सचिव, राज्य परिवहन विभाग, जीएनसीटीडी।

हनुमानजी की जन्मस्थली का जानिये सच

इन 3 स्थानों पर दावा किया जाता है हनुमानजी के जन्म का

हम में से बहुत कम लोग जानते हैं कि हनुमानजी का जन्म भारत में कहां हुआ था। हनुमानजी की माता का नाम अंजना है इसीलिए उन्हें आंजनेय भी कहा जाता है। उनके पिता का नाम केसरी है इसीलिए उन्हें केसरीनंदन भी कहा जाता है। केसरी को कपिराज भी कहा जाता था, क्योंकि वे कपिक्षेत्र के राजा थे। अब सवाल यह उठता है कि यह कपि क्षेत्र भारत में कहां स्थित है? इस विषय में विद्वानों में मतभेद हैं।

हनुमानजी का जन्म कल्पभेद से कई विद्वान चैत्र सुद 1 मघा नक्षत्र को मानते हैं। कोई कार्तिक वद 14, कोई कार्तिक सुद 15 को मानते हैं। कुछ चैत्र माह की पूर्णिमा को उनके जन्म का समय मानते हैं और कुछ कार्तिक, कृष्ण चतुर्दशी की महानिशा को, लेकिन ज्यादातर जगह चैत्र माह की पूर्णिमा को मान्यता मिली हुई है।

हनुमान जी की जन्मतिथि को लेकर मतभेद हैं। कुछ हनुमान जन्मोत्सव की तिथि कार्तिक कृष्ण चतुर्दशी मानते हैं तो कुछ चैत्र शुक्ल पूर्णिमा। इस विषय में ग्रंथों में दोनों के ही उल्लेख मिलते हैं, किंतु इनके कारणों में भिन्नता है। वास्तव में पहला जन्मदिवस है और दूसरा विजय अभिनन्दन महोत्सव।

1. डांग जिला का अंजनी पर्वतः- कुछ विद्वान मानते हैं कि नवसारी (गुजरात) स्थित डांग जिला पूर्व काल में दंडकारण्य प्रदेश के रूप में पहचाना जाता था। इस दंडकारण्य में राम ने अपने जीवन के 10 वर्ष गुजारे थे। डांग जिला आदिवासियों का क्षेत्र है। आजकल यहां ईसाई मिशनरी सक्रिय है। हालांकि आदिवासियों के प्रमुख देव राम हैं। आदिवासी मानते हैं कि भगवान राम वनवास के दौरान पंचवटी की ओर जाते समय डांग प्रदेश से गुजरे थे। डांग जिले के सुबिर के पास भगवान राम और लक्ष्मण को शबरी माता ने बेर खिलाए थे। शबरी भील समाज से थी। आज यह स्थल शबरी धाम नाम से जाना जाता है।

शबरीधाम से लगभग 7 किमी की दूरी पर पूर्णा नदी पर स्थित पंपा सरोवर है। यहीं मातंग ऋषिका आश्रम था। डांग जिले के आदिवासियों की सबसे प्रबल मान्यता यह भी है कि डांग जिले के अंजना पर्वत में स्थित अंजनी गुफा में ही हनुमान जी का जन्म हुआ था।

2. कैथल का अंजनी मंदिरः- कैथल हरियाणा प्रान्त का एक शहर है। इसकी सीमा करनाल, कुरुक्षेत्र, जिंद, और पंजाब के पटियाला जिले से मिली हुई है। इसे वानर राज हनुमान का जन्म स्थान माना जाता है। इसका प्राचीन नाम था कपिस्थल। कपिस्थल कुरू साम्राज्य का एक प्रमुख भाग था। आधुनिक कैथल पहले करनाल जिले का भाग था।

पुराणों के अनुसार इसे वानरराज हनुमान का जन्म स्थान माना जाता है। कपि के राजा होने के कारण हनुमानजी के पिता को कपिराज कहा जाता था। कैथल में पर्यटक ऐतिहासिक और पौराणिक कथाओं से जुड़े अवशेष भी देखे जा सकते हैं। इसके अलावा यहां पर हनुमानजी की माता अंजनी का एक प्राचीन मंदिर भी और अजान किला भी।

3. गुमला का पंपा सरोवरः- कुछ लोग मानते हैं कि हनुमानजी का जन्म झारखंड राज्य के उग्रवाद प्रभावित क्षेत्र गुमला जिला मुख्यालय से 20 किलोमीटर दूर आंजन गांव की एक गुफा में हुआ था। इसी जिले के पालकोट प्रखंड में बालि और सुग्रीव का राज्य था। माना यह भी जाता है कि यहीं पर शबरी का आश्रम था। यह क्षेत्र रामायण काल में दंडकारण्यण क्षेत्र का हिस्सा था। यहीं पर पंपा सरोवर हैं जहां राम और लक्ष्मण ने रुककर जल ग्रहण किया था।

जंगल और पहाड़ों में से घिरे इस आंजन गांव में एक अति प्राचीन गुफा है। यह गुफा पहाड़ की चोटी पर स्थित है। माना जाता है कि यहीं पर माता अंजना और पिताकेसरी रहते थे। यहीं पर हनुमानजी का जन्म हुआ था। गुफा का द्वार बड़े पत्थरों से बंद है लेकिन छोटे छिद्र से आदिवासी लोग उस स्थान के दर्शन करते हैं और अक्षत व पुष्प चढ़ाते हैं। लेकिन कुछ लोग मानते हैं कि यह स्थान माता अंजना के जन्म से जुड़ा है।

एक जनश्रुति के अनुसार आदिवासियों को इस बात का भान नहीं था कि हनुमानजी और उनके माता-पिता पवित्रता और धर्म के पालन करने वालों के प्रति प्रसन्न रहते हैं। आदिवासियों ने माता अंजना को प्रसन्न करने के लिए एक दिन उनकी गुफा के समक्ष बकरे की बलि दे दी। इससे माता अप्रसन्न हो गई और उन्होंने एक विशालकाय पत्थर से हमेशा-हमेशा के लिए गुफा का द्वार बंद कर दिया। अब जो भी इस गुफा के द्वार को खोलने का प्रयास करेगा उसके ऊपर विपत्ति आएगी। इस गुफा की लंबाई 1500 फीट से अधिक है। इसी गुफा से माता अंजना खटवा नदी तक जाती थीं और स्नान कर लौट आती थीं। खटवा नदी में एक अंधेरी सुरंग है, जो आंजन गुफा तक ले जाती है।

मान्यता अनुसार इस गुफा के आंजन पहाड़ पर रामायण काल में ऋषि-मुनियों ने सप्त जनाश्रम स्थापित किए थे। यहां सात जनजातियां निवास करतीं थीं- 1.शबर, 2.वानर, 3.निषाद, 4. गृद्धख 5.नाग, 6.किन्नर व 7.राक्षस। जनाश्रम के प्रभारी थे-अगस्त्य, अगस्त्यभ्राता, सुतीक्ष्ण, मांडकणि, अत्रि, शरभंग व मतंग। यहां छोटानागपुर में दो स्थानों पर आश्रम है- एक आंजन व दूसरा टांगीनाथ धाम है।

अन्य मतातंर से कुछ लोग राजस्थान के चुरु जिले के सुजानगढ़ में, कुछ हंफी में तो कुछ लोग नासिक के त्र्यंबकेश्वर के पास अंजनेरी पहाड़ी को हनुमान जी का जन्म स्थल मानते हैं।

जैसी हरी इच्छा हरी ही जाने

श्री हनुमान चालीसा में महाबली हनुमानजी के 109 नामों का उल्लेख श्री गोस्वामीजी ने बड़ी चतुराई के साथ किया है।

हनुमान चालीसा में हनुमान जी के 109 नाम हैं। श्री हनुमान चालीसा में (गुप्त रूप) से वर्णित 109 नामावली

1. हनुमान- विशाल टेढ़ी ठुड्डी वाले।
2. ज्ञानसागर - ज्ञान के अथाह सागर।
3. गुण सागर - गुणों के अथाह सागर।
4. कपीश - वानरों के राजा।
5. तीनों लोकों को उजागर करने वाले।
6. श्री बाबा रामचन्द्रजी के दूत बनने वाले।
7. अतुल बलशाली।
8. माता अंजनी के पुत्र कहलाने वाले।
9. पवन (वायुदेव) के पुत्र कहलाने वाले।
10. वीरों के वीर कहलाने वाले महावीर
11. विक्रम - विशेष पराक्रमी।
12. बजरंगी - वज्र के समान अंग वाले।
13. सभी प्रकार की कुमति का निवारण करने वाले।
14. सभी प्रकार की सुमति प्रदान करने वाले।
15. कंचन वर्ण- स्वर्ण के समान वेश धारण करने वाले।
16. सुवेशा - भली प्रकार से वेश धारण करने वाले।
17. कानों में कुण्डल धारण करने वाले।
18. कुंचीत केशा- घुंघराले बाल वाले।
19. हाथ में गदा धारण करने वाले।
20. हाथ में ध्वजा धारण करने वाले।

.

21. कांधे मुन्ज : कंधे पर मुन्ज जनेऊ धारण करने वाले।
22. परमात्मा : शिवशंकर के अवतारी।
23. वानरराज केशरी सुपुत्र।
24. तेज प्रताप धारण करने वाले।
25. महाजग वंदन : सारे विश्व से पुजित।
26. विद्यावान : सारी विद्याओं में पारंगत।
27. गुणी : सर्वगुण संपन्न।
28. अति चातुर : अत्यंत कार्यकुशल।
29. श्रीराम के कार्य हेतु सदा आतुर रहने वाले।
30. श्रीराम चरित्र सुनने में आनंद रस लेने वाले।
31. श्री राजा रामजी के हृदय में बसने वाले।
32. लक्ष्मणजी के हृदय में बसने वाले।
33. श्री सीताजी के हृदय में बसने वाले।
34. अति लघुरूप धारण करने वाले।
35. अति भयंकर रूप धारण करने वाले।
36. लंका दहन करने वाले।
37. भीमकाय (विशाल) रूप धारण करने वाले।
38. असुरों का नाश करने वाले।
39. श्री रामचन्द्रजी के काज संवारने वाले।
40. संजीवनी बूटी लाने वाले।

.

41. लक्ष्मणजी के प्राण बचाने वाले।
42. रघुपतिजी का आलिंगन पाने वाले।
43. रघुपतिजी से प्रशंसा पाने वाले।
44. श्री भरतजी के समान प्रेम पाने वाले
45. हजारों मुखों से यशोगान श्रवण करने वाले।
46. सनकादिक ऋषियों, महर्षियों द्वारा। यशोगान श्रवण करने वाले।
47. मुनियों द्वारा यशोगान श्रवण करने वाले।
48. ब्रह्माजी द्वारा यशोगान श्रवण करने वाले।
49. देवताओं द्वारा यशोगान करने वाले।
50. नारदजी द्वारा यशोगान श्रवण करने वाले।
51. सरस्वती द्वारा यशोगान श्रवण करने वाले।
52. शेषनागजी द्वारा यशोगान श्रवण करने वाले।
53. यमराजजी द्वारा यशोगान श्रवण करने वाले।
54. कुबेरजी द्वारा यशोगान श्रवण करने वाले।
55. सब दिशाओं के रक्षकों द्वारा यशोगान श्रवण करने वाले।
56. कवियों द्वारा यशोगान श्रवण करने वाले।
57. विद्वानों द्वारा यशोगान श्रवण करने वाले।
58. पंडितों द्वारा यशोगान श्रवण करने वाले।
59. श्री सुग्रीवजी पर उपकार करने वाले।

60. श्री सुग्रीवजी को रामजी से मिलाने वाले।

.

61. श्री सुग्रीवजी को राजपद दिलाने वाले।
62. श्री विभीषणजी को मंत्र प्रदान करने वाले।
63. श्री विभीषणजी को लंकापति बनाने वाले।
64. हजारों योजन तक उड़ने वाले।
65. श्री सूर्यनारायण को फल समझकर निगलने वाले।
66. श्रीराम नाम मुद्रिका मुख में रखने वाले।
67. जलधी (समुद्र) को लांघने वाले।
68. कठिन कार्य को सरल बनाने वाले।
69. श्री रामचन्द्रजी के द्वार के रखवाले।
70. श्री रामचन्द्रजी के दरबार में प्रवेश की आज्ञा प्रदान करने वाले (श्री रामजी की आज्ञा के बगैर कहीं न जाने वाले)
71. शरणागत को सब सुख प्रदान करने वाले।
72. निज भक्तों को निर्भय (रक्षा) प्रदान करने वाले।
73. अपने वेग को स्वयं ही संभालने वाले।
74. अपनी ही हांक से तीनों लोक कम्पायमान करने वाले।
75. भूतों के भय से भक्तों को मुक्त करने वाले।
76. पिशाचों के भय से भक्तों को मुक्त करने वाले।
77. महावीर श्रीराम नाम श्रवण करने वाले।
78. भक्तों के सभी रोगों का नाश करने वाले।
79. भक्तों की सभी पीड़ाओं का नाश करने वाले।
80. मन से ध्यान करने वालों के संकट से छुड़ाने वाले।
81. कर्म से ध्यान करने वालों को संकट से छुड़ाने वाले।
82. वचन से ध्यान करने वालों के संकट से छुड़ाने वाले।
83. तपस्वी राजा रामजी के कार्य को सहज करने वाले।
84. भक्तों के मनोरथ (कामनाएं) पूर्ण करने वाले।
85. भक्तों को जीवन फल (रामभक्ति) प्रदान करने वाले।
86. चारों युगों में अपना यश (प्रताप) फैलाने वाले।
87. कीर्ति को सर्वत्र फैलाने वाले।
88. जगत में ज्ञान का उजियारा करने वाले।
89. सज्जनों की रक्षा करने वाले।
90. दुष्टों का नाश करने वाले।
91. श्रीरामजी का असीम प्रेम पाने वाले।
92. अष्ट सिद्धि प्रदान करने वाले।
93. नवनिधि प्रदान करने वाले।
94. माता सीताजी से वरदान पाने वाले।
95. रामनाम औषधि रखने वाले।
96. श्री रघुपतिजी के दास कहलाने वाले।
97. अपने भजन से रामजी की प्राप्ति कराने वाले।
98. जन्म-जन्मांतर के दुख दूर करने वाले।
99. अंतकाल में राम दरबार में पहुंचाने वाले।
100. निज भक्तों को श्रीरामभक्त बनाने वाले।

.

101. अपने सेवकों को सब सुख प्रदान करने वाले।
102. अपने सेवकों के संकट मिटाने वाले।
103. अपने सेवकों की सब पीड़ा मिटाने वाले।
104. श्री हनुमानजी बलियों के वीर।
105. श्री सद्गुरुदेव स्वरूप श्री हनुमानजी।
106. अपने भक्तों को बंधनों से छुड़ाने वाले।
107. अपने भक्तों को महासुख प्रदान करने वाले।

भागवत रहस्य

बिना सत्संग के सुख नहीं मिलता। पर स्वयं संत बने बिना सच्चा संत नहीं मिलेगा।

जैसी दृष्टी वैसी सृष्टि।

एकनाथ महाराज रामायण के सुंदरकांड की कथा कर रहे थे।

सुंदरकांड में सभी सुन्दर है। सुन्दरकांड का यह नाम इसलिए ही रखा गया है.

इसमें हनुमानजी को माता सीताजी की पराभक्ति के दर्शन हुए है।

एकनाथ महाराज कथा में कहते है कि

जब हनुमानजी अशोक वन में आये तब वहाँ अशोक वाटिका में सफ़ेद फूल खिल रहे थे।

जहाँ सीताजी वहाँ अशोक वन। जहाँ भक्ति (सीताजी=पराभक्ति) वहाँ अ - शोक (शोक का अभाव).

हनुमानजी वहाँ (एकनाथजी की कथामे) कथा सुनने के लिए आये थे।

उन्होंने प्रकट होकर विरोध करते हुए कहा कि महाराज, आप कह रहे है।

अशोक वन में उस समय लाल फूल खिले हुए थे, सफ़ेद नहीं। मैंने अपनी आँखों से प्रत्यक्ष देखा था।

एकनाथ महाराज ने कहा कि मै तो अपने सीताराम को मनाकर कथा कर रहा हूँ और मुझे जैसा दिखाई दे रहा है, वैसा कह रहा हूँ। अंत में झगडे को लेकर दोनों राम के पास गए।

रामचन्द्रजी ने कहा कि आप दोनों की बात सही है।

क्रोधवश से लाल आँखे होने के कारन हनुमानजी ने फूल लाल दिखे थे, अन्यथा फूल तो सफ़ेद ही थे।

जिसकी दृष्टी जैसी होगी उसे वैसी ही सृष्टि दिखाई देगी।

दुर्योधन को जगत में कोई संत न मिला, उसने सभी को दुर्जन ही पाया।

युधिष्ठिर को कोई दुर्जन नहीं मिला, उसने सभी सज्जन ही पाया।

संतो के धर्म में तितिक्षा को प्राधान्य दिया गया है। संतो के चरित्र पढ़ो। संतो को कई दुःख सहने पड़े है।

किन्तु उन दुःखो का संतो पर कुछ असर नहीं होता।

एकनाथ महाराज पैठण में रहते थे। गोदावरी नदी की ओर जाने वाले मार्ग पर एक पठान रहता था।

एकनाथ महाराज उसी रस्ते से स्नान करने के लिए जाते थे। वह पठान महाराज को बहुत सताता था।

महाराज सब सहन करते थे।

एक दिन पठान ने सोचा कि यह ब्राह्मण क्रोधित नहीं होता है तो आज मै उसे क्रोधित करके ही रहूँगा।

महाराज स्नान करके वापस आ रहे थे तो पठान ने उनपर थूका। महाराज दूसरी बार स्नान करने गए।

फिर पठान ने उनपर थूका। ऐसा कई बार हुआ किन्तु महाराज क्रोधित नहीं हुए।

गोदावरी से कहने लगे कि तेरी कृपा है कि तू मुझे स्नान करने के लिए बार -बार बुला रही है।

वह पठान चाहे दुर्जनता करता रहे, मै अपनी सज्जनता नहीं छोड़ना चाहता।

पठान ने एक सो आठ बार उन पर थूका और उतनी बार महाराज ने गोदावरी में स्नान किया।

अन्त में वह पठान लज्जित हुआ। उसने महाराज के पाँव छुए और क्षमा मांगी।

उसने कहा -महाराज आप संत है, ईश्वर है। मै आपको पहचान न सका। महाराज ने उत्तर दिया कि क्षमा का

कोई सवाल नहीं है। तुम्हारे कारण तो आज मुझे एक सौ आठ बार गोदावरी स्नान का पुण्य मिला।

शान्ति उसी की बनी रहती है जो अंदर से ईश्वर के साथ सम्बन्ध रहे।

जो ईश्वर से दूर है, उसे शान्ति कहाँ से मिलेगी?

एक नहीं घर में रखे दो शंख

मान्यताओं के अनुसार, घर में हमें एक नहीं बल्कि दो शंख रखना चाहिए. एक शंख जिसका इस्तेमाल पूजा में किया जाना चाहिए और दूसरे शंख को बजाने के लिए इस्तेमाल किया जाना चाहिए. ज्योतिषों के अनुसार, पूजा करने के लिए हमेशा दक्षिणावर्ती शंख का इस्तेमाल करना चाहिए.

घर में पूजा के लिए दक्षिणावर्ती शंख रखना चाहिए, जिसे लक्ष्मी शंख भी कहते हैं। यह शंख शुभ माना जाता है और पूजा में इसका इस्तेमाल करने से घर में सुख, शांति और समृद्धि आती है. इसके अलावा, घर में दो शंख रखना भी अच्छा माना जाता है, एक पूजा के लिए और दूसरा बजाने के लिए.

शंख रखने के कुछ नियमः

पूजा के लिए दक्षिणावर्ती शंखः

दक्षिणावर्ती शंख को पूजा में इस्तेमाल करना चाहिए, क्योंकि यह शुभ और समृद्धि लाता है.

बजाने के लिए शंखः

एक और शंख बजाने के लिए रखा जा सकता है.

उत्तर, पूर्व या ईशान कोण मेंः

पूजा कक्ष में शंख को उत्तर, पूर्व या ईशान कोण में रखना चाहिए,

किसी साफ कपड़े परः

शंख को जमीन पर नहीं रखना चाहिए, बल्कि किसी साफ कपड़े या स्टैंड पर रखना चाहिए,

खुला भाग ऊपरः

पूजा के समय शंख को खुला हुआ भाग ऊपर की ओर रखना चाहिए,

अन्य प्रकार के शंखः

मोती शंखः

घर में मोती शंख रखने से सदस्यों की सेहत अच्छी रहती है,

ऐरावत शंखः

घर में ऐरावत शंख रखने से वास्तु दोष दूर होता है,

अन्नपूर्णा शंखः

अन्नपूर्णा शंख रखने से घर में धन और अन्न की प्राप्ति होती है,

हिम्मत को अपने अंग-संग रखकर बुढ़ापे को दूर रखिए

तुलसीदास हों या सूरदास अथवा वाल्मीकि, आयु का बड़ा भाग पाकर भी वे कर्म से सदैव जुड़े रहे। भीष्म पितामह बहुत बड़ी आयु प्राप्त करके भी युद्धभूमि में अविचल खड़े रहे, हरदिन व हरपल संघर्षरत रहे।

श्रीकृष्ण तो बड़े अनोखे रहे, जन्म के पहले से ही उनके दुश्मन थे; जन्म लेते ही उनके संघर्ष शुरू हो गए। कोई छोटे-मोटे संघर्ष नहीं, अत्यन्त वीभत्स, जटिल और डरावने। ऐसी-ऐसी चुनौतियाँ, जिनसे निपटना सामान्य मानव के लिए सम्भव नहीं।

श्रीकृष्ण आयु का बड़ा भाग सामने रखते हैं और संसार के सामने विविध लीलायें करते हैं। उन्होंने सदा ही सन्देश दिया कि हमेशा कर्म से जुड़े रहो।

सुकरात, प्लूटो, पाइथागोरस, ओमर, गैलीलियो, आइन्स्टीन, कोपरनिकस या टालस्टाय आदि जितने भी महापुरुष हुए, वे चाहे दार्शनिक हों अथवा कवि या वैज्ञानिक; उन्होंने कभी भी यह नहीं माना कि हम बूढ़े हो गये।

बड़ी आयु होने के बाद भी टालस्टाय का ज्ञान विकसित होता गया, उनका मन सेवा की तरफ लगातार बढ़ता गया। कवि टेनिसन ने बूढ़े होने के बाद भी कभी अपने-आपको वृद्ध महसूस नहीं किया। जिस समय टेनिसन 80 वर्ष की आयु में पहुँचे, जब व्यक्ति का मस्तिष्क और क्षमतायें हिलने लगती हैं, तब उनने अपनी एक प्रसिद्ध पुस्तक 'क्रासिंग द वार'' का लेखन पूरा किया।

एच.जी.वेल्थ की टांग टूट गयी और वह बिस्तर पर पड़े हुए थे, तब उन्होंने पढ़ना शुरू किया और अपार ज्ञान प्राप्त किया तथा लोगों में उसे बाँटा।उसके कईयों वर्ष बाद तक उन्होंने कभी हार नहीं मानी।

आपको हैरानी होगी कि एच.जी.वेल्थ जब 70 साल की उम्र में पहुँचे, तब उन्होंने अपने-आपसे प्रश्न किया कि मेरी शक्ति कहीं हल्की तो नहीं पड़ रही? उनने सत्तर की वय के बाद 12 पुस्तकें लिखीं।

बन्धुओं! जब आप मन से मान लेते हैं कि हम बूढ़े हो गये, तब समझ लेना कि बुढ़ापा आ धमका है। जब तक आप अपने काम स्वयं करते रहेंगे, दूसरे की तरफ आशाभरी निगाह से नहीं देखेंगे, जब तक आप परमुखापेक्षी नहीं होगें, तब तक आपको किसी की सहायता की आवश्यकता नहीं। जब तक आपकी हिम्मत आपका साथ दे रही है, आपकी उम्र कितनी भी हो गयी हो, यह मान लेना कि बुढ़ापा मुझसे अभी बहुत दूर है।

जब आपको पग-पग पर दूसरों की मदद और सहारे की जरूरत पड़ने लगे, आपकी हिम्मत साथ छोड़ जाये, निराशायें आपमें बढ़ जायें, आप हर समय भाग्य का रोना रोने लग जायें, हर समय किसी न किसी के सहारे की चाहना होने लगे, तो समझ लेना कि अब बुढ़ापा शुरू हो गया है।

उस समय आपकी उम्र कम ही क्यों न हो। इसलिए मैं आपसे कहूँगा कि आप जीवन के अन्तिम समय तक हिम्मत को अपने अंग-संग रखें। मनोबल आपका सबसे बड़ा हथियार है, उससे आप हर लड़ाई जीत सकते हैं। जी हाँ! ज़िन्दगी की लड़ाई भी।

ऐसी जड़ी बूटियां जिनसे दिमाग को कम्प्यूटर से भी तेज बनाया सकते हैं

जानिये उन 5 जड़ी बूटियों के बारे में..

(1). हल्दी:

हल्दी का इस्तेमाल कैंसर के इलाज में अचूक औषधि है। कैलीफोर्निया यूनिवर्सिटी में हुए एक शोध में पाया है की हल्दी में करक्यूमिन नामक एक रसायन पाया जाता है। जो की हमारे दिमाग को सवस्थ रखता है। और दिमाग की मृत या निषक्रिय कोशिकाओं को सक्रीय कर दिमाग को तेज बनता है।

(2). शंख पुष्पी:

शंख पुष्पी दिमाग की शक्ति बढ़ाने के लिए बढ़िया औषधि है। अगर आप चाहते की आपका दिमाग तेज हो जाये तो आधा चम्मच शंख पुष्पी को एक कप गर्म पानी में मिला कर लें। इसका सेवन करने से रक्त का सही संचार होता है। जिससे याद करने और सिखने की क्षमता बढ़ती है।

(3). दालचीनी:

दालचीनी को हम एक मसाले के रूप में जानते है। लेकिन ये एक जड़ी बूटी भी है। शहद में एक चुटकी दालचीनी का पाउडर डालकर रात को सोने से पहले नियमित रूप से सेवन करें। इससे मानसिक तनाव में राहत मिलती है और दिमाग तेज होता है।

(4). ब्राह्मी:

ब्राह्मी दिमाग को स्वस्थ रखने और तेज करने के उत्तम औषधि में से एक है। इस औषधि का नियमित प्रयोग करने से स्मरण शक्ति बढ़ती है। आधा ब्राह्मी और एक चम्मच शहद को गर्म पानी में मिलाकर पीने से दिमाग तेज होता है।

(5). तुलसी:

तुलसी के बारे में तो सभी लोग जानते है की ये एक एंटीबॉयोटिक जड़ी बूटी है। तुलसी में मौजूद शक्तिशाली एंटी ऑक्सीडेंट तत्व जो मस्तिष्क और हृदय में रक्त के प्रवाह को सही करता है जिससे दिमाग अच्छी तरह कार्य करता है।

दिल्ली आपातकाल के लिए कितनी तैयार? मॉक ड्रिल से परखी गई क्षमता

दिल्ली में आपदा प्रबंधन प्राधिकरण (डीडीएमए) के नेतृत्व में 55 स्थानों पर एक साथ मॉक ड्रिल आयोजित की गई। इस अभ्यास का उद्देश्य हवाई हमले आग लगने जैसी आपात स्थितियों से निपटने की तैयारियों का आकलन करना था। आइजीआइ एयरपोर्ट खान मार्केट जैसे क्षेत्रों में बचाव अभियान चलाया गया। साथ ही लुटियन जोन में ब्लैक आउट भी किया गया। इस मॉक ड्रिल में विभिन्न एजेंसियों ने भाग लिया।

नई दिल्ली। दिल्ली किसी भी आपात स्थिति के लिए तैयार है। प्रशासन ने शाम चार बजे एक साथ 55 स्थानों पर मॉक ड्रिल कर बचाव अभ्यास को परखा। दिल्ली आपदा प्रबंधन प्राधिकरण (डीडीएमए) के नेतृत्व में विभिन्न एजेंसियों के सहयोग से आइजीआइ एयरपोर्ट, खान मार्केट, पालिका केंद्र व सिविक सेंटर समेत विभिन्न बाजारों, राम मनोहर लोहिया समेत विभिन्न अस्पतालों, आवासीय कॉलोनियों, स्कूलों व सरकारी कार्यालयों व भीड़भाड़ वाले इलाकों में बचाव अभियान चलाया गया।

पूरे लुटियन जोन में ब्लैक आउट

इतना ही नहीं, रात आठ बजे से सवा आठ बजे तक 15 मिनट के लिए पूरे लुटियन जोन में ब्लैक आउट कर दिया गया। रात में कुछ देर के लिए राष्ट्रपति भवन, नॉर्थ ब्लॉक व साउथ ब्लॉक समेत अन्य हिस्से अंधेरे में डूब गए।

मॉक ड्रिल में मुख्य रूप से हवाई हमले, आग लगने की घटनाओं और घायल लोगों को बचाने के साथ ही उन्हें सुरक्षित स्थानों पर पहुंचाने का अभ्यास किया गया।

इतना ही नहीं, 650 स्कूलों में छात्रों को बचाव का प्रशिक्षण भी दिया गया। घायलों को दुर्घटना स्थल पर ही प्राथमिक उपचार दिया गया और उन्हें तत्काल उपचार के लिए नजदीकी अस्पतालों में ले जाया गया।

भूमिगत मेट्रो स्टेशनों को महत्वपूर्ण बचाव स्थल बनाया गया। अधिकारियों के अनुसार, देश की सीमा पर मौजूदा हालात को देखते हुए यह मॉक ड्रिल भविष्य में भी जारी रहेगी। समय-समय पर बचाव और राहत उपायों का परीक्षण होता रहेगा।

बुधवार को एनडीआरएफ, डीडीए, एमसीडी, एनडीएमसी, दिल्ली फायर सर्विसेज, कैट्स एंबुलेंस, दिल्ली पुलिस, दिल्ली ट्रैफिक पुलिस के साथ-साथ दिल्ली जल बोर्ड, स्वास्थ्य सेवाएं और अन्य एजेंसियों ने मॉक ड्रिल का आयोजन किया।

इसी तरह 2,000 से अधिक सिविल डिफेंस वॉलंटियर्स और 1,200 आपदा मित्रों के साथ-साथ बड़ी संख्या में नेशनल कैडेट कोर (एनसीसी) और राष्ट्रीय सेवा योजना (एनएसएस) के वॉलंटियर्स ने बचाव की जिम्मेदारी संभाली। यह मॉक ड्रिल जिला मजिस्ट्रेट और वरिष्ठ पुलिस अधिकारियों की निगरानी में आयोजित की गई।

पहलगाम आतंकी हमले के बाद पाकिस्तान के साथ युद्ध की आशंका को देखते हुए गृह मंत्रालय ने बुधवार को राज्यों को मॉक ड्रिल करने का आदेश दिया था। अब ऑपरेशन सिंदूर के जरिए पाकिस्तान में नौ आतंकी ठिकानों पर भारत के हमले के बाद घबराए पड़ोसी देश के मद्देनजर गृह मंत्रालय ने बुधवार को राज्यों को मॉक ड्रिल करने का आदेश दिया है।

दिल्ली के लोगों ने भी इस मॉक ड्रिल की गंभीरता को समझा और इसमें हिस्सा लिया। दुकानदारों के साथ-साथ स्थानीय लोग और खरीदार भी बचाव एजेंसियों के निर्देशों का पालन करते दिखे। इस दौरान कई लोगों को घोषित मॉक ड्रिल के बारे में जानकारी नहीं थी। इसलिए उन्होंने इसे असली हमला मान लिया और डरे-सहमे नजर आए।

दिल्ली सरकार ने सेना के पराक्रम को सराहा, कहा-पहलगाम आतंकी हमले में मारे गए नागरिकों को मिला न्याय

परिवहन विशेष न्यूज

दिल्ली सरकार और भाजपा ने आपरेशन सिंदूर की सराहना की है। CM रेखा गुप्ता की अध्यक्षता में हुई कैबिनेट बैठक में सेना को समर्थन देने के लिए प्रधानमंत्री मोदी का आभार जताया। सरकार ने कहा कि यह आपरेशन एकता ताकत और देश की रक्षा करने के संकल्प का प्रमाण है।

नई दिल्ली: दिल्ली सरकार और भाजपा ने Operation Sindoor की सराहना की है। कहा, पहलगाम आतंकी हमले में मारे गए नागरिकों व उनके स्वजनों को न्याय मिला है।

दिल्ली सरकार की कैबिनेट की बैठक मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता की अध्यक्षता में हुई। प्रस्ताव पारित कर भारतीय सेना को नेतृत्व व समर्थन देने के लिए प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का आभार जताया गया।

CM रेखा गुप्ता ने कहा, 140 करोड़ भारतीयों को मिला सम्मान

कहा, सेना ने बहादुरी, सटीकता के साथ आतंकियों के विरुद्ध कार्रवाई की है। आतंकवाद के विरुद्ध भारत एकजुट है। यह ऑपरेशन ताकत, एकता और नागरिकों और देश की भूमि की रक्षा करने के संकल्प का प्रमाण है।

पहलगाम हमले में मारे गए नागरिकों के स्वजनों के प्रति संवेदना जताई गई। दिल्ली सरकार उनके साथ खड़ी है। मुख्यमंत्री ने कहा, प्रधानमंत्री के निर्णय से 140 करोड़ भारतीयों को सम्मान मिला है।

कपिल मिश्रा ने कहा, एक चुटकी सिंदूर की कीमत समझ आ गई होगी

दिल्ली सरकार के पर्यटन मंत्री कपिल मिश्रा ने कहा कि इस ऑपरेशन के बाद एक चुटकी सिंदूर की कीमत आतंकवादियों को बहुत अच्छे से समझ में आ गई होगी। पूरी दुनिया भारत के सैन्य पराक्रम को देख रही है।

ऑपरेशन सिंदूर हमारे सैन्य बलों के पराक्रम की पराकाष्ठा: सचदेवा

दिल्ली भाजपा के अध्यक्ष वीरेंद्र सचदेवा ने कहा कि ऑपरेशन सिंदूर हमारे सैन्य बलों के पराक्रम की पराकाष्ठा है।

वायुसेना ने अपने सभी पूर्व निर्धारित आतंकी ठिकानों को तो नष्ट कर डाला पर किसी सामान्य नागरिक को क्षति पहुंचे ऐसी कोई गलती नहीं की।

भाजपा के सभी कार्यकर्ता इस ऑपरेशन के लिए भारतीय सेना के प्रति आभार प्रकट करते हैं। पूरा देश सैनिकों के साथ खड़ा है।

दिल्ली की 400 किलोमीटर सड़कों पर अतिक्रमण, हर इलाके में चलेगा बुलडोजर; एलजी के सख्त निर्देश

परिवहन विशेष न्यूज

दिल्ली में पीडब्ल्यूडी की 400 किलोमीटर सड़कों पर अतिक्रमण है जिससे शहर की रफ़्तार धीमी हो रही है और दुर्घटनाएं बढ़ रही हैं। ड्रोन सर्वे में 50 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र अतिक्रमणग्रस्त पाया गया। उपराज्यपाल ने अतिक्रमण हटाने के सख्त निर्देश दिए हैं। सेंट्रल और नई दिल्ली की 25-30% सड़कें अतिक्रमण से प्रभावित हैं। दिल्ली में ऐसा कोई इलाका नहीं है जहां यह समस्या न हो।

नई दिल्ली। राष्ट्रीय राजधानी में लोक निर्माण विभाग (पीडब्ल्यूडी) की 1400 किलोमीटर लंबी सड़कों में से करीब 400 किलोमीटर सड़कें किसी न किसी तरह के अतिक्रमण की चपेट में हैं। खासकर घनी आबादी वाले और व्यावसायिक इलाकों में सड़कों पर अतिक्रमण की समस्या दिन-ब-दिन विकराल होती जा रही है।

दिल्ली के हर इलाके में अतिक्रमण की समस्या

दिल्ली में ऐसा कोई इलाका नहीं है जहां यह समस्या न हो। ज्यादातर जगहें अतिक्रमण से प्रभावित हैं जैसे रेहड़ी-पटरी, अवैध अस्थायी दुकानें और स्थायी अवैध निर्माण, धार्मिक संरचनाएं आदि। इन्हें हटाने के लिए कार्रवाई भी की गई है लेकिन इसका कोई खास असर नहीं दिखता।

2024 में सड़कों पर अतिक्रमण की वास्तविक स्थिति जानने के लिए डीडीए, एमसीडी और सर्वे ऑफ इंडिया ने संयुक्त रूप से ड्रोन सर्वे शुरू किया। सर्वे में पता चला कि दिल्ली शहरी क्षेत्र में 50 वर्ग किलोमीटर का इलाका अतिक्रमण की गिरफ्त में है।

इन्हें होती है दिक्क्त

सड़कों पर यह अतिक्रमण न केवल शहर की गति को धीमा कर रहा है, बल्कि सड़क दुर्घटनाओं को भी आमंत्रित कर रहा है। सबसे ज्यादा खतरा दोपहिया वाहन, साइकिल और पैदल चलने वालों को होता है। व्यस्त घंटों के दौरान, एम्बुलेंस और अन्य आपातकालीन वाहनों का गुजरना मुश्किल हो जाता है।

एलजी सक्सेना का सख्त निर्देश

यह समस्या किस हद तक गंभीर हो चुकी है, इसका अंदाजा इस बात से आसानी से लगाया जा सकता है कि दिल्ली के उपराज्यपाल वीके सक्सेना ने हाल ही में सभी जिलाधिकारियों को सख्त निर्देश दिए हैं कि वे विशेष टास्क फोर्स (एसटीएफ) और जिला टास्क फोर्स (डीटीएफ) के माध्यम से मध्य और नई दिल्ली में अतिक्रमण हटाने के लिए तत्काल कार्रवाई करें।

सेंट्रल दिल्ली और नई दिल्ली में रिंग रोड (आईएसबीटी से एम्स), आउटर रिंग रोड (मोदी मिल से आईआईटी), भैरों मार्ग, मथुरा रोड, आईटीओ क्षेत्र, प्रगति मैदान और दिल्ली सचिवालय से जुड़ी सड़कों का रखरखाव पीडब्ल्यूडी करता है।

इन सड़कों की कुल लंबाई करीब 300 किलोमीटर मानी जाती है। जो दिल्ली में पीडब्ल्यूडी की कुल 1400 किलोमीटर सड़कों का एक बड़ा हिस्सा है। इन पर भी अतिक्रमण एक गंभीर समस्या है। इनमें से 25 से 30 फीसदी सड़कें अतिक्रमण की गिरफ्त में हैं।

दक्षिणी दिल्ली की मुख्य सड़कों में से एक मां आनंदमयी मार्ग, गुरु रविदास मार्ग, ओखला एस्टेट मार्ग की आधी से ज्यादा सड़कों पर दुकानदारों, रेहड़ी-पटरी वालों और सब्जी मंडी वालों ने कब्जा कर रखा है।

सड़क किनारे अवैध रूप से आठ से दस फीट तक दुकानें बना ली गई हैं, जिससे पैदल चलने वालों से लेकर वाहन चालकों तक को काफी परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। हर समय जाम की स्थिति बनी रहती है।

अस्थायी अतिक्रमण: सड़क किनारे दुकानदार, फेरीवाले, छोटे दुकानदार, अनाधिकृत पार्किंग और पंडाल। साथ ही, कूड़ा-कचरा, निर्माण मलबा और बिजली के खंभे।

स्थायी अतिक्रमण: सड़क किनारे बने धार्मिक ढांचे, अन्य धार्मिक ढांचे, दुकानों-मकानों, बालकनियों और सीढ़ियों का अवैध विस्तार, अनाधिकृत होर्डिंग।

अतिक्रमण वाले प्रमुख इलाके

आइटीओ, प्रगति मैदान, भैरों मार्ग, मथुरा रोड, मथुरा रोड, महरौली, और आउटर रिंग रोड

पांच वर्षों में अतिक्रमण पर कार्रवाई

2017 में सुप्रीम कोर्ट के आदेश पर टास्क फोर्स द्वारा सेंट्रल दिल्ली को साउथ दिल्ली और फरीदाबाद से जोड़ने वाले मथुरा रोड को अतिक्रमण से मुक्त करने की कार्रवाई

जनवरी 2020: नई दिल्ली और सेंट्रल दिल्ली, आईटीओ और नई दिल्ली रेलवे स्टेशन क्षेत्र

2022: दिल्ली हाईकोर्ट के आदेश पर चित्तरंजन पार्क में अतिक्रमण हटाया गया

प्रगति मैदान-सराय काले खां रिंग रोड, भैरों मार्ग से सुंदियाल रोड तक चार किलोमीटर सड़क से अवैध निर्माण हटाया गया

जुलाई 2023: आईटीओ, लुटियंस जोन में धार्मिक ढांचे हटाए गए, अन्य 19 सड़कों पर भी यही कार्रवाई

अक्टूबर-नवंबर 2024: 80 प्रमुख सड़क खंडों पर अतिक्रमण हटाने की कार्रवाई

अप्रैल 2025: सेंट्रल और नई दिल्ली रोड डिवीजन में अतिक्रमण हटाने की कार्रवाई

आउटर रिंग रोड, आईआईटी फ्लाईओवर से मोदी मिल फ्लाईओवर तक 7.2 किलोमीटर खंड पर अतिक्रमण हटाने का काम

दिल्ली में 500 जगहों पर फहराए जाएंगे नए तिरंगे, विभाग खर्च करेगा 27 करोड़ रुपये

परिवहन विशेष न्यूज

दिल्ली में तूफान से क्षतिग्रस्त हुए 500 भारतीय झंडों को एक महीने के भीतर बदल दिया जाएगा। लोक निर्माण विभाग ने झंडों को हटाकर नई निजी फर्म को काम सौंपा है। 2022 में लगाए गए इन झंडों का रखरखाव एक ही एजेंसी द्वारा किया जा रहा था जिसका अनुबंध समाप्त हो गया है। नए झंडों की स्थापना पर 27 करोड़ रुपये खर्च होंगे।

नई दिल्ली। तूफान में क्षतिग्रस्त हुए झंडों को जल्द ही बदला जाएगा। लोक निर्माण विभाग (पीडब्ल्यूडी) ने शहर के चारों ओर से क्षतिग्रस्त 500 भारतीय झंडों को हटा दिया है और एक महीने के भीतर उन्हें बदल दिया जाएगा। ये वही झंडे हैं जो शहर में पिछले दिनों आए कई तूफ़ानों के बाद फट गए थे और उन्हें बदलने की ज़रूरत थी।

नए झंडे लगाए जाने की संभावना

पीडब्ल्यूडी झंडों को बदलने के लिए एक नई निजी फर्म को भी नियुक्त करेगा क्योंकि पिछली फर्म के साथ अनुबंध समाप्त हो गया है। अधिकारियों ने कहा कि अगले महीने के भीतर नए झंडे लगाए जाने की संभावना है। ये झंडे 2022 में लगाए गए थे, जब दिल्ली सरकार के बजट में स्वतंत्रता की 75वीं वर्षगांठ मनाने के लिए इन झंडों का प्रावधान किया गया था। तब से, इन झंडों का रखरखाव एक ही एजेंसी द्वारा किया जा रहा था। पीडब्ल्यूडी के एक अधिकारी ने बताया, ₹हमने एक नई एजेंसी से यह काम संभालने और शहर भर में ऐसे सभी झंडों की मरम्मत करने और उन्हें बदलने को कहा है। पिछली एजेंसी का अनुबंध हाल ही में समाप्त हो गया है। काम जल्द ही शुरू हो जाएगा, लेकिन इस बीच, हमने उन सभी झंडों को उतार दिया है, जिनके क्षतिग्रस्त होने की सूचना मिली थी। ऐसा आमतौर पर आंधी या बारिश के कारण होता है।

पीडब्ल्यूडी द्वारा बनाए गए अधिकांश झंडे 35 गुणा 50 मीटर आकार के हैं और इन्हें 115 मीटर लंबे हाई मास्ट पोल पर लगाया गया है। कुछ पोल ज़मीनी स्तर पर स्थित हैं जबकि अन्य कंक्रीट के प्लेटफ़ॉर्म पर स्थापित किए गए हैं।

अधिकारियों ने कहा कि प्लेटफ़ॉर्म, पोल और कपड़े के झंडे सहित पूरे ढांचे की मरम्मत और रखरखाव किया जाएगा।

27 करोड़ की लागत से होगा पूरा काम

विभाग ने इस काम के लिए करीब 27 करोड़ रुपए रखे हैं, जिसमें सिविल मरम्मत के लिए 24.5 करोड़ और बिजली के काम के लिए 2.5 करोड़ रुपए शामिल हैं, क्योंकि झंडे के मुख्य हिस्से को एलईडी स्ट्रिप लाइट और प्रोफाइल लाइट से सजाया गया है।

लोगों ने की थी शिकायत दर्ज

पिछले कुछ दिनों में शहर भर से फटे झंडों की कई शिकायतें दर्ज की गई हैं। इंटरनेट मीडिया पर निवासियों ने नेहरू प्लेस, द्वारका, सोनिया विहार रोड, कालकाजी मंदिर के पास, नांगलोई, मयूर विहार, नजफगढ़ रोड, निर्माण विहार, साउथ एक्सटेंशन, आईटीओ हरि नगर, जेएलएन स्टेडियम, कोटला मुबारकपुर, बारापुला फ्लाईओवर के पास और दिल्ली सचिवालय के पास फटे झंडों की तस्वीरें भी पोस्ट की हैं।

दिल्ली में हैं 32 हजार बांग्लादेशी और रोहिंग्या घुसपैठिये, गृह मंत्रालय में हुई बैठक में तय हुई रणनीति, अब तोड़ी जाएंगी झुग्गियां

दिल्ली पुलिस राजधानी में अवैध रूप से रह रहे बांग्लादेशी और रोहिंग्या घुसपैठियों के खिलाफ कार्रवाई तेज करेगी। गृह मंत्रालय के निर्देश पर झुग्गियों को तोड़ने की कार्रवाई भी होगी। दिल्ली पुलिस की ओर से छह महीने में 32 हजार से अधिक संदिग्ध बांग्लादेशी घुसपैठियों की पहचान की गई है।

नई दिल्ली: राजधानी में वर्षों से अवैध रूप से रह रहे बांग्लादेशी घुसपैठियों व रोहिंग्याओं की धर पकड़ अभियान में दिल्ली पुलिस और तेजी लाएगी।

सोमवार को गृह मंत्रालय में गृह मंत्री अमित शाह के साथ मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता, मुख्य सचिव और पुलिस आयुक्त संजय अरोड़ा के बीच हुई बैठक में इस मसले पर भी चर्चा की गई। कार्रवाई में तेज करने के निर्देश मिले।

पिछले छह माह में दिल्ली पुलिस ने करीब 32 हजार से अधिक संदिग्ध बांग्लादेशियों की पहचान की है। जिनके आधार कार्ड, वोटर कार्ड समेत अन्य दस्तावेज की जांच की जा रही है।

400 बांग्लादेशियों की जानकारी विशिष्ट पहचान प्राधिकरण से मांगी

मंत्रालय के निर्देश पर अब राजधानी में झुग्गियों को तोड़ने में भी तेजी लाई जाएगी। 400 से अधिक बांग्लादेशी को शार्ट लिस्ट कर दिल्ली पुलिस ने उनके बारे में भारतीय विशिष्ट पहचान प्राधिकरण से जानकारी मांगी हैं।

प्राधिकरण को यह जानकारी मुहैया करने के लिए कहा गया कि इन्होंने आधार कार्ड बनाने के लिए क्या-क्या दस्तावेज जमा किए थे। जानकारी मिलने पर पुलिस उक्त दस्तावेज की सत्यता के बारे में पता लगा रही है।

मंगलवार को इस मसले पर पुलिस मुख्यालय में भी पुलिस आयुक्त संजय अरोड़ा के साथ इंटेलिजेंस यूनिट के विशेष आयुक्त सागर प्रीत हुड्डा व स्पेशल ब्रांच के अन्य अधिकारियों की समीक्षा बैठक हुई।

अभियान तेज करने की रणनीति 15 जिलों के डीसीपी से बताई जाएगी

सूत्रों की मानें तो बैठक में इस अभियान को और अधिक प्रभावी बनाने के लिए रणनीति तय की गई। नए एजेंडे के बारे में जल्द ही सभी 15 जिले के डीसीपी को बताया जाएगा।

पुलिस अधिकारी का कहना है कि अबतक 255 बांग्लादेशी घुसपैठिये को वापस बांग्लादेश भेज दिए गए हैं। 100 से अधिक बांग्लादेशियों को सराय रोहिल्ला स्थित बांग्लादेशियों के डिटेंशन सेंटर में रखा गया है।

डिपोर्ट करने की प्रकिया है लंबी, पुलिस को पेश आती है परेशानी

पुलिस अधिकारी का कहना है कि बांग्लादेशियों को वैध प्रक्रिया के तहत डिपोर्ट करने की लंबी प्रक्रिया है।

लंबे समय तक बांग्लादेशी को रखने, खाने का बंदोबस्त, निरंतर मेडिकल चेकअप कराने व फिर उनका टिकट करवा बांग्लादेश भेजने में काफी खर्च उठाना पड़ता है।

ऑपरेशन सिंदूर पर जमात-ए-इस्लामी हिंद के अध्यक्ष सैयद सदातुल्लाह हुसैनी का बयान

मुख्य संवाददाता /सुषमा रानी

जमात-ए-इस्लामी हिंद आतंकवाद को एक गंभीर खतरा और मानवता के खिलाफ एक जघन्य अपराध मानता है, तथा देश और इसके लोगों की सुरक्षा, संरक्षा और शांति के लिए इसके पूर्ण उन्मूलन को आवश्यक मानता है।

आतंकवाद के खिलाफ देश के सशस्त्र बलों और सुरक्षा एजेंसियों द्वारा की गई कार्रवाई का पूरे देश द्वारा समर्थन किया जा रहा है - सभी धर्मों और समुदायों द्वारा। भारत के लोग हमारी सेनाओं के साथ एकजुट हैं।

साथ ही, हम इस बात पर जोर देते हैं कि इस महत्वपूर्ण क्षण में, सभी नागरिकों के लिए एक साथ आना और एकजुट होकर इस चुनौती का सामना करना अनिवार्य है। विभाजन या सांप्रदायिक तनाव फैलाने के लिए राष्ट्रीय सुरक्षा के मुद्दे का फायदा उठाना देश के हित के खिलाफ है और इसे स्पष्ट रूप से खारिज किया जाना चाहिए। हम सभी राजनीतिक, सामाजिक और धार्मिक संगठनों और समूहों से देश की एकता, सांप्रदायिक सद्भाव और आपसी सम्मान को बनाए रखने और सामूहिक एकजुटता और जिम्मेदार नागरिकता का प्रदर्शन करने की अपील करते हैं।

ऑपरेशन सिंदूर की सफलता पर भारतीय सैन्य बलों, प्रधानमंत्री एवं 140 करोड़ देशवासियों को बधाई : वीरेन्द्र सचदेवा

मुख्य संवाददाता /सुषमा रानी

नई दिल्ली। दिल्ली भाजपा के अध्यक्ष वीरेन्द्र सचदेवा ने भारतीय सेना, भारत सरकार, प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को ऑपरेशन सिंदूर की सफलता पर बधाई दी है और कहा है कि यह हमारे सैन्य बलों के पराक्रम की पराकाष्ठा है कि इतने बड़े ऑपरेशन सिंदूर में वायुसेना ने अपने सभी पूर्व निर्धारित आतंकी ठिकानों को तो नष्ट कर डाला पर किसी सामान्य नागरिक को क्षति पहुंचे ऐसी कोई गलती नहीं की।

वीरेन्द्र सचदेवा ने कहा है कि गत लगभग 2 सप्ताह से 140 करोड़ भारतीय आतंक के सरपरस्त पाकिस्तान पर जिस सैन्य कार्रवाई का बेताबी से इंतजार कर रहे थे वह भारत के जाबांजों ने प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के सफल नेतृत्व में आज पूर्ण की है। पाकिस्तान के पंजाब प्रांत तक जा कर आज जिस तरह आतंक पर एक निर्णायक प्रहार किया है उसने 2016 एवं 2019 के हमलों की याद ताज़ा कर दी है। दिल्ली भारतीय जनता पार्टी के सभी कार्यकर्ता भारतीय सेना के प्रति आभार प्रकट करते हैं और सैनिकों को आश्वस्त करते हैं की पूरा देश आपके साथ खड़ा है।

रामायण में छुपे दस रहस्य, जिनसे हम अपरिचित हैं...

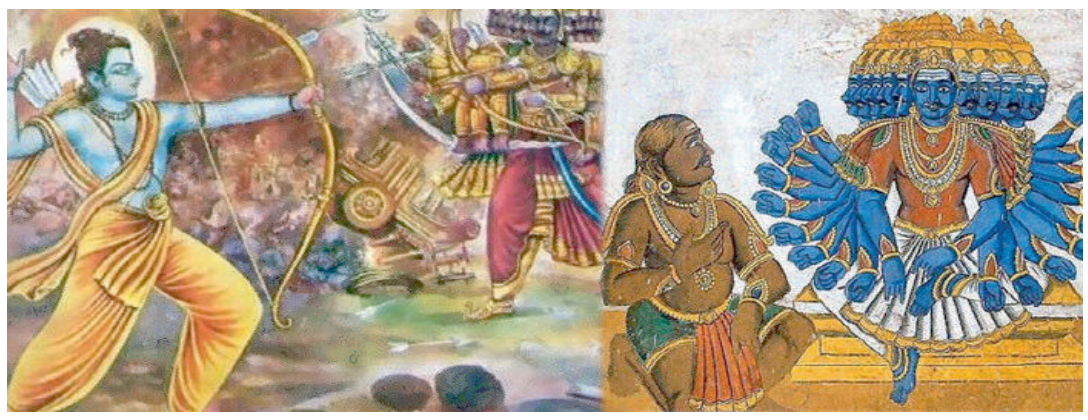

रामायण की लगभग सभी कथाओं से हम परिचित ही हैं, लेकिन इस महाकाव्य में रहस्य बनकर छुपी हैं कुछ ऐसी छोटी छोटी कथाएं जिनसे हम लोग परिचित नहीं हैं। तो आइये जानते हैं वे कौन सी दस बातें है।

1. रामायण राम के जन्म से कई साल पहले लिखी जा चुकी थी। रामायण महाकाव्य की रचना महर्षि वाल्मीकि ने की है। इस महाकाव्य में 24 हजार श्लोक, पांच सौ उपखंड तथा उत्तर सहित सात कांड हैं।

2. वाल्मीकि रामायण के अनुसार भगवान श्रीराम का जन्म चैत्र मास के शुक्ल पक्ष की नवमी तिथि को, पुनर्वसु नक्षत्र में कर्क लग्न में हुआ था। उस समय सूर्य, मंगल, शनि, गुरु और शुक्र ग्रह अपने-अपने उच्च स्थान में विद्यमान थे तथा लग्न में चंद्रमा के साथ गुरु विराजमान थे। यह सबसे उत्कृष्ट ग्रह दशा होती है, इस घड़ी में जन्म बालक अलौकिक होता है।

3. जिस समय भगवान श्रीराम वनवास गए, उस समय उनकी आयु लगभग 27 वर्ष थी। राजा दशरथ श्रीराम को वनवास नहीं भेजना चाहते थे, लेकिन वे वचनबद्ध थे। जब श्रीराम को रोकने का कोई उपाय नहीं सूझा तो उन्होंने श्रीराम से यह भी कह दिया कि तुम मुझे बंदी बनाकर स्वयं राजा बन जाओ।

4. रामायण के अनुसार समुद्र पर पुल बनाने में पांच दिन का समय लगा। पहले दिन वानरों ने 14 योजन, दूसरे दिन 20 योजन, तीसरे दिन 21 योजन, चौथे दिन 22 योजन और पांचवे दिन 23 योजन पुल बनाया था। इस प्रकार कुल 100 योजन लंबाई का पुल समुद्र पर बनाया गया। यह पुल 10 योजन चौड़ा था। (एक योजन लगभग 13-16 किमी होता है)

5. सभी जानते हैं कि लक्ष्मण द्वारा शूर्पणखा की नाक काटे जाने से क्रोधित होकर ही रावण ने सीता का हरण किया था, लेकिन स्वयं शूर्पणखा ने भी रावण का सर्वनाश होने का श्राप दिया था। क्योंकि रावण की बहन शूर्पणखा के पति विद्युतजिव्ह का वध रावण ने कर दिया था। तब शूर्पणखा ने मन ही मन रावण को श्राप दिया कि मेरे ही कारण तेरा सर्वनाश होगा।

6. कहते हैं जब हनुमान जी ने लंका में आग लगाई थी, और वे एक सिरे से दूसरे सिरे तक जा रहे थे, तो उनकी नजर शनी देव पर पड़ गयी ! वे एक कोठरी में बंधे पड़े थे ! हनुमान जी ने उन्हें बंधन मुक्त किया ! मुक्त होने पर उन्होंने हनुमान जी के बल बुद्धी की भी परिक्षा ली और जब उन्हें यकीन हो गया कि वह सचमुच में भगवान रामचंद्र जी के दूत हनुमान जी हैं तो उन्होंने हनुमान जी से कहा कि ₹इस पृश्वी पर जो भी आपका भक्त होगा उसे मैं अपनी कुदृष्टि से दूर ही रखूंगा, उसे कभी कोइ कष्ट नहीं दूंगा।₹ इस तरह शनिवार को भी मदिरों में हनुमान चालीसा का पाठ होता है तथा आरती गाई जाती है !

7. जब खर दूषण मारे गए, तो एक दिन भगवान राम चन्द्र जी ने सीता जी से कहा, ₹प्रिये अब मैं अपनी लीला शुरू करने जा रहा हूँ ! खर दूषण मारे गए, सूर्पनखां जब यह समाचार लेकर लंका जाएगी तो रावण आमने सामने की लड़ाई तो नहीं करेगा बल्कि कोई न कोई चाल खेलेगा और मुझे अब दुष्टों को मारने के लिए लीला करनी है। जब तक मैं पूरे राक्षसों को इस धरती से नहीं मिटा देता तब तक तुम अग्नि की सुरक्षा में रहो।₹ भगवान-रामचंद्र जी ने उसी समय अग्नि प्रज्वलित की और सीता जी भगवान जी की आज्ञा लेकर अग्नि में प्रवेश कर गयी ! सीता माता जी के स्थान पर ब्रह्मा जी ने सीता जी के प्रतिबिम्ब को ही सीता जी बनाकर उनके स्थान पर बिठा दिया !

8. अग्नि परीक्षा का सच : रावण जिन सीतामाता का हरण कर ले गया था वे सीता माता का प्रतिबिम्ब थीं, और लौटने पर श्री राम ने यह पुष्टि करने के लिए कि कहीं रावण द्वारा उस प्रतिबिम्ब को बदल तो नहीं दिया गया, सीतामाता से अग्नि में प्रवेश करने को कहा जो कि अग्नि के घेरे में पहले से सुरक्षित ध्यान मुद्रा में थीं, अपने प्रतिबिम्ब का संयोग पाकर वे ध्यान से बाहर आईं और राम से मिलीं।

9. आधुनिक काल वाले वानर नहीं थे हनुमान जी : कहा जाता है कि कपि नामक एक वानर जाति थी। हनुमानजी उसी जाति के ब्राह्मण थे।शोधकर्ताओं के अनुसार भारतवर्ष में आज से 9 से 10 लाख वर्ष पूर्व बंदरों की एक ऐसी विलक्षण जाति में विद्यमान थी, जो आज से लगभग 15 हजार वर्ष पूर्व विलुप्त होने लगी थीऐ और रामायण काल के बाद लगभग विलुप्त ही हो गई। इस वानर जाति का नाम कपि था। मानवनुमा यह प्रजाति मुख और पूंछ से बंदर जैसी नजर आती थी। भारत से दुर्भाग्यवश कपि प्रजाति समाप्त हो गई, लेकिन कहा जाता है कि इंडोनेशिया देश के बाली नामक द्वीप में अब भी पुच्छधारी जंगली मनुष्यों का अस्तित्व विद्यमान है।

10. विश्व में रामायण का वाचन करने वाले पहले वाचक कोई और नहीं बल्कि स्वयं भगवान श्री राम के पुत्र लव और कुश थे। जिन्होंने रामकथा स्वयं अपने पिता श्री राम के आगे गायी थी। पहली रामकथा पूरी करने के बाद लव कुश ने कहा भी था हे ₹पितु भाग्य हमारे जागे, राम कथा कहि श्रीराम के आगे।

मोहिनी एकादशी व्रत आज

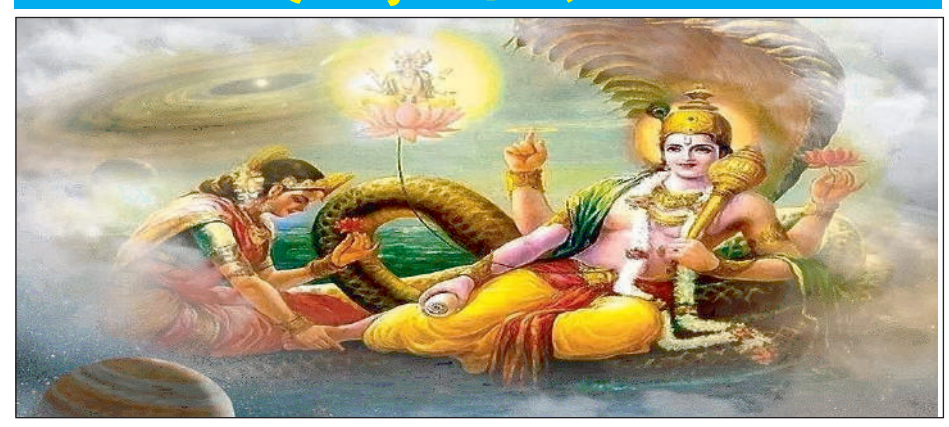

हर माह दो एकादशी होती हैं। इस दिन भगवान विष्णु की उपासना की जाती है। मई महीने में हजार गायों के दान के बराबर फल देने वाला मोहिनी एकादशी और 100 यज्ञों के बराबर फल देने वाली मोहिनी एकादशी का व्रत रखा जाएगा।

कहते हैं कि एकादशी के दिन धरती की स्थिति ऐसी होती है, जब ब्रह्मांड की ऊर्जा का प्रवाह हो रहा होता है। इसलिए उस दिन जीवों को भूख कम महसूस होती है। इसीलिए एकादशी की तिथि को साधु-संत व्रत करते थे, ताकि वे भी उस ऊर्जा के साथ खुद को जोड़ सकें। व्रत करने से शरीर की शुद्धि भी हो जाती है।

धार्मिक मान्यताओं के अनुसार, एकादशी व्रत करने से मनुष्य पापों से मुक्त हो जाता है। सुख-समृद्धि के साथ जीवन का आनंद उठाने के बाद अंत में मोक्ष को प्राप्त करता है। मोहिनी एकादशी व्रत कथा पढ़ने या सुनने से एक हजार गायों के दान के बराबर पुण्य मिलता है।

मोहिनी एकादशी की तिथि

==========

हिंदू पंचांग के अनुसार, हर साल वैशाख माह के शुक्ल पक्ष में मोहिनी एकादशी व्रत रखा जाता है। एकादशी तिथि 7 मई को सुबह 10:19 मिनट पर होगी और अगले दिन यानी 8 मई को दोपहर 12:29 मिनट पर तिथि खत्म होगी। इस साल मोहिनी एकादशी 8 मई 2025 को गुरुवार के दिन मनाई जाएगी।

व्रत पारण का समय

==========

मोहिनी एकादशी व्रत का पारण 9 मई 2025 को किया जाएगा। व्रत पारण का मुहूर्त सुबह 5:34 मिनट से सुबह 8:16 मिनट तक रहेगा।

मोहिनी एकादशी का महत्व

==========

मोहिनी एकादशी का व्रत करने से व्यक्ति के सभी पाप नष्ट हो जाते हैं। इस दिन भगवान विष्णु के मोहिनी स्वरूप की पूजा की जाती है। समुद्र मंथन के बाद निकले अमृत को जब असुरों ने छीन लिया था, तब भगवान विष्णु ने मोहिनी रूप धारण किया था। उसी घटना को याद करते हुए मोहिनी एकादशी का व्रत किया जाता है।

मोहिनी एकादशी की पूजा विधि

==========

एकादशी के दिन की शुरुआत देवी-देवताओं के नाम से करें।

स्नान करने के बाद मंदिर में गंगाजल का छिड़काव करें।

चौकी पर पीला कपड़ा बिछाकर भगवान विष्णु और मां लक्ष्मी की प्रतिमा को विराजमान करें।

देसी घी का दीपक जलाकर आरती करें।

विधिपूर्वक आरती करें।

विष्णु चालीसा का पाठ करें।

श्रीहरि के मंत्रों का जप करें।

पंचामृत, फल और मिठाई समेत आदि चीजों का भोग लगाएं।

आखिरी में लोगों में प्रसाद का वितरण करें।

ब्लैक आउट के लिए कानपुर में सफलतापूर्वक की गई मॉकड्रिल

सुनील बाजपेई

कानपुर। उत्तर प्रदेश के अति संवेदनशील कानपुर में भी भारत-पाकिस्तान के बीच युद्ध की आशंकाओं के चलते हवाई हमले से बचाव को लेकर तेज हुई तैयारियों के क्रम आज बुधवार शाम 4 बजे से शहर के 13 स्थानों पर मॉकड्रिल की गई। जिसमें 10 स्थानों पर अग्निसुरक्षा और 3 स्थानों पर रेस्क्यू के लिए भी ड्रिल की गई।

आग से बचाव की मॉकड्रिल यहां के बड़ा चौराहा, डॉ.एसके सिंह चौराहा, लखनपुर, अनुराग हास्पिटल शारदा नगर चौराहा, संतनगर चौराहा, मलिक गेस्ट हाउस, रामादेवी चौराहा, बासमंडी चौराहा, पाल चौराहा, दबौली मोड, श्रीमुनि इंटर कालेज गोविंद नगर और यशोदा नगर इंटर कालेज में रात साढ़े 9 बजे से 10 बजे तक शहर के अंदर ब्लैकआउट में सफलता के लिए की गई। इसी क्रम में डिप्टी डिवीजनल वार्डन प्रखंड रतनलाल नगर दीपनारायण दीक्षित ओमी और अन्य पदाधिकारी की मौजूदगी में दबौली मोड चौराहे पर भी गोविंद नगर के अतिरिक्त इंस्पेक्टर अभय सिंह और रतनलाल नगर के चौकी प्रभारी मनीष चौहान के साथ सब इंस्पेक्टर सूरज कुमार आदि की टीम ने भी मॉकड्रिल के

आयोजन को सफलता पूर्वक करवाया।

इस मॉक ड्रिल के बारे में अभी अवगत कराते चले कि इतने बड़े पैमाने पर यह कानपुर समेत देश में वर्ष-1971 में हुए युद्ध के दौरान हुई थी। इसमें सेना, एयरफोर्स, पुलिस, सिविल डिफेंस, एनसीसी, एसडीआरएफ जवान शामिल हुए।

हमनें अक्सर पुरुषों को यह कहते हुए सुना होगा कि महिलाओं की बुद्धि उनके घुटनों में होती हैं। लेकिन आज एक पुरुष की बुद्धि उसके घुटनों में देखी

बस स्टाप के पास, एक छोले-कुलचे वाले को अपनी दुकान ज़माते देखा। दुकान ज़माने से पहले उसने वहां झाड़ू लगाया। वह झाड़ू ऐसे लगा रहा था जैसे झाड़ू ना लगाकर हाथ के पंखे से कूड़ा इधर-उधर कर रहा हो। उसको ना तो हवा का ज्ञान था और ना ही सफाई करने का तरीका पता था। वह बस कूड़ा किसी एक तरफ नहीं बल्कि कई तरफ कर रहा था। उसको देख कर मन में तुरंत यही बात आई कि 'कहीं इसकी अक्ल इसके घुटनों में तो नहीं?' वह हवा की विपरीत दिशा में झाड़ू लगा रहा था जिससे सारी धूल उसके खुद के उपर और उसकी दुकान पर ही जा रही थी। इससे हमें यह पता चलता है कि जो लगातार जिस काम को करता हैं वह उसमें निपुण हो जाता हैं और जो काम किसी को कभी-कभी करना पड़ता हैं तो उसमें गलतियां होना सामान्य/नार्मल हैं। लेकिन पुरुषों ने यही सीखा होता हैं कि महिलाओं को हमेशा ही नीचा दिखाना चाहिए इसलिए तुरंत बोल देते हैं कि इनका दिमाग़ घुटने में हैं और महिलाओं को सिखाया जाता हैं चुपचाप बरदाश्त करना, इसलिए वह सुन भी लेती हैं। ध्यान रहे कि मल्टीटास्किंग में परफेक्ट होना एक मिथ हैं। परफेक्शन तो किसी एक काम को लगातार करने से ही आता हैं और जो काम लगातार करते हैं उसमें दिमाग़ बहुत तेजी से काम करता हैं। और उसमें फिर नये-नये आईडियाज/ideas भी आते रहतें हैं। यह हमने अपने अनुभव से सीखा हैं कि किसी नये काम में दिमाग़ ज्यादा लगाना पड़ता हैं और गलतियां होना भी सम्भावित होता हैं क्योंकि गलतियों से ही हमें किसी काम की बारीकी का पता चलता हैं। गलतियों से ही हम नई चीजें खोजने में सक्षम होते है। वहीं से हम निपुणता/परफेक्शन की ओर बढ़ते हैं। इसमें किसी के दिमाग़ का घुटने में होने से कोई लेना-देना नहीं होता। यह मात्र निपुणता/परफेक्शन पाने की एक प्रक्रिया होता हैं जिसे पूरा करके ही कोई निपुण/परफेक्ट होता हैं।

ऑपरेशन सिंदूर-पाकिस्तान में घुसकर 9 आतंकी ठिकानों को निशाना बनाकर ध्वस्त किया- सिविल डिफेंस मॉकड्रिल के कुछ घंटे पूर्व कार्रवाई

भारत ने आतंकवाद के खिलाफ़ अपनी लड़ाई को नया आयाम दिया-घर में घुसकर पाकिस्तान को ऑपरेशन सिंदूर से करारा जवाब दिया-एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानीं गोंदिया महाराष्ट्र

वैश्विक स्तरपर पूरी दुनियाँ की निगाहें भारत पर टिकी हुई थी कि पहलगाम में मारे गए 26 सैलानियों का जवाब दोषियों उनके आकाओं योजनाक़ारो सहयोगियों को किस तरह देगा, क्योंकि भारत की रणनीतिक तैयारी घटना के दिन से ही शुरू हो गई थी। रणनीतिक रूप से मीटिंगों का दौरा, अंतर्राष्ट्रीय देशों से सलाह मशविरा फिर 7 मई 2025 को पूरे भारत के 244 जिलों में सिविल डिफेंस मॉकड्रिल को आयोजित किया गया था, परंतु उसके कुछ घंटे के पूर्व ही रात्रि करीब 1.44 ए.एम पर पाकिस्तान पर भारतीय वायुसेना ने ऑपरेशन सिंदूर के तहत सफल टारगेटेड सर्जिकल स्ट्राइक कर 9 आतंकी ठिकानों को तबाह कर दिया, यह हमला बहावलपुर कोटली और मुजफ्फराबाद में किया गया है, जिसमें सभी आतंकी कैंप तबाह हो गए हैं। कार्रवाई को सफलता से अंजाम दिया गया, इसके पश्चात रात्रि में ही एक्सः पोस्ट पर सभी संदेश आना शुरू हो गए मैंने सुबह 6 बजे तक लगातार मीडिया चैनलों पर नज़र गाड़ाए रखा था तो सुबह 2.46 बजे राजनाथ सिंह का एक्सः पर पोस्ट आया भारत माता की जय, वहीं कांग्रेस नेता प्रियंका चतुर्वेदी का का 3 बजे के बाद पोस्ट आया माथे का सिंदूर मिटने वालों को उसका जवाब देकर रहेंगे, जय जवान ! जयहिंदुस्तान ! जय हिंद ! इसी प्रकार तेजस्वी यादव, उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ, आदित्य ठाकरे इत्यादि के सुबह 4 बजे के आसपास बयान आना शुरू हो गए। मेरा मानना है कि इस सर्जिकल स्ट्राइक का नाम ऑपरेशन सिंदूर इसलिए रखा गया होगा, क्योंकि पहलगाम में अनेकों भारतीय बेटियां अपना हनीमून मनाने गई थी जिनकी चर्चा हम नीचे पैराग्राफ में करेंगे, उनका सिंदूर उजड़ गया था उनसे जात धर्म पूछकर उनके पतियों को मार गिराया गया था, इसलिए इस ऑपरेशन के जरिए उन बेटियों को इंसाफ देने की थोड़ी सी कोशिश की गई है यानी यूं कहें कि यह तो केवल टेलर है अब खेला तो शुरू होगा। चूँकि भारतीय वायुसेना ने पाकिस्तान में घुसकर ऑपरेशन सिंदूर के तहत 9 आतंकी ठिकानों पर सफ़ल टारगेटेड कार्रवाई कर उन्हें ध्वस्त कर दिया है, जिससे भारत नें आतंकवाद के खिलाफ़ अपनी लड़ाई को नया आयाम दिया है, क्योंकि ऑपरेशन सिंदूर से घर में घुसकर पाकिस्तान को करारा जवाब दिया है, इसलिए आज हम मीडिया में उपलब्ध जानकारी के सहयोगसे इस आर्टिकल के माध्यम से चर्चा करेंगे, ऑपरेशन सिंदूर- भारत ने पाकिस्तान में घुसकर 9 आतंकी ठिकानों को निशाना बनाकर ध्वस्त किया, सिविल डिफेंस मॉक ड्रिल के कुछ घंटे पूर्व की कार्रवाई हुई।

साथियों बात अगर हम दिनांक 7 मई 2025 को अर्ली मॉर्निंग सिविल डिफेंस मॉकड्रिल के कुछ घंटे पहले पाकिस्तान में घुसकर सर्जिकल एयर स्ट्राइक की करें तो, भारत ने पाकिस्तान पर की एयर स्ट्राइक, 9 आतंकी ठिकानों पर किया हमला।भारत ने आतंकवाद के खिलाफ अपनी लड़ाई को एक नया आयाम देते हुए 'ऑपरेशन सिंदूर' को लॉन्च किया है। इस ऑपरेशन में भारतीय वायु सेना ने पाकिस्तान और पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर (पीओके) में स्थित 9 आतंकी ठिकानों पर टारगेटेड स्ट्राइक की है। यह कार्रवाई 6 मई 2025 की देर रात डेढ़ बजे के आसपास अंजाम दी गई। भारत ने आतंकवाद के खिलाफ अपनी लड़ाई को एक नया आयाम देते हुए 'ऑपरेशन सिंदूर' को लॉन्च किया है। शुरुआती जानकारी के मुताबिक, भारतीय वायु सेना ने अत्यन्त सटीक और सावधानीपूर्वक इन ठिकानों को निशाना बनाया है।पीआईबी ने जानकारी दी है कि 'ऑपरेशन सिंदूर' की प्लानिंग को बहुत ही रणनीतिक रूप से तैयार किया गया ताकि आतंकवादियों की गतिविधियों को करारा जवाब दिया जा सके, इस ऑपरेशन के दौरान पाकिस्तान की सैन्य सुविधाओं को नहीं छुआ गया है, जिससे यह सुनिश्चित हो सके कि कार्रवाई का असल मकसद आतंक को खत्म करना है, न कि पड़ोसी मुल्क के साथ संघर्ष को बढ़ाना, वायु सेना की तरफ से ये स्ट्राइक भारत के कमोबेश 300 लोकेशन पर होने वाले मॉक ड्रिल से कुछ घंटे पहले किया गया है। पीआईबी के मुताबिक, ये कदम पहलगाम में हुए बर्बर आतंक वादी हमले के बाद उठाए गए हैं, जिसमें 26 भारतीय और एक नेपाली नागरिक की हत्या कर दी गई थी। भारत अपनी इस प्रतिबद्धता पर खरा उतरा है कि इस हमले के लिए जिम्मेदार लोगों को जवाबदेह ठहराया जाएगा। पीआईबी ने बताया कि 'ऑपरेशन सिंदूर' पर आगे की जानकारी जल्द ही दी जाएगी। भारतीय सेना ने जम्मू और कश्मीर स्थित पहलगाम में हुए आतंकी हमले का बदला ले लिया है सशस्त्र बलों ने पाकिस्तान के कब्जे वाले कश्मीर स्थित मुजफ्फराबाद में भारतीय सेना ने आतंकी ठिकानों पर स्ट्राइक की।

साथियों बात अगर हम रक्षा मंत्रालय द्वारा जारी बयान की करें तो, भारतीय सशस्त्र बलों ने पाकिस्तान व पाकिस्तान के कब्जे वाले जम्मू और कश्मीर में आतंकवादी बुनियादी

ढांचे को निशाना बनाते हुए 'ऑपरेशन सिंदूर' शुरू किया, जहाँ से भारत के खिलाफ आतंकवादी हमलों की योजना बनाई गई. कुल मिलाकर, नौ (9) स्थलों को निशाना बनाया गया है. बयान में कहा गया- हमारी कार्रवाई केंद्रित, सधी और उकसाने से बचने वाली रही, किसी भी पाकिस्तानी सैन्य ठिकानों को निशाना नहीं बनाया गया है भारत ने ठिकानों के चयन और उन्हें तबाह करने तरीके में काफी संयम दिखाया है, बयान के अनुसार ये कदम पहलगाम में हुए आतंकवादी हमले के मद्देनजर उठाए गए हैं जिसमें 25 भारतीय और एक नेपाली नागरिक की हत्या कर दी गई थी, मंत्रालय ने कहा कि हम इस प्रतिबद्धता पर खरे उतर रहे हैं कि इस हमले के लिए जिम्मेदार लोगों को जवाबदेह ठहराया जाएगा, बाद में ऑपरेशन सिंदूर पर विस्तृत जानकारी दी जाएगी।

साथियों बात अगर हम सर्जिकल स्ट्राइक का नाम ऑपरेशन सिंदूर रखने से संभावित कारणों की करें तो, इसके पीछे सरकार का मकसद क्या रहा होगा, डिफेंस एक्सपर्ट की मानें तो पहलगाम में आतंकियों ने कई ऐसे लोगों को मारा जनिकी चंद दिनों पहले शादी हुई थी। भारत ने इन महलिाओं की आंखों में आंसू देखे थे, तभी कसम खाई थी कि एक-एक आंसू का हसिाब लयिा जाएगा, इनमें गुरुग्राम की हमिांशी नरवाल भी थीं, जिनकी 16 अप्रैल को शादी हुई थी, वह पत लेफ्टिनेंट विनय नरवाल के साथ हनीमून मनाने गई थीं, लेकिन आतंकयिों ने विनय को मार डाला।इसी तरह जयपुर की प्रियंका शर्मा को आतंकयिों को दर्द दयिा, प्रयिंका अपने पत रोहित के साथ पहलगाम में हनीमून मनाने गई थीं, हमले के दौरान रोहित को गोली लगी और उनकी मौके पर ही मौत हो गई, प्रियंका घायल हुई और उन्हें श्रीनगर के अस्पताल में भर्ती कराया गया।शमिला की रहने वाली अंजलि ठाकुर अपने पत विवेक ठाकुर के साथ गई थीं, इनकी भी इसी साल 12 अप्रैल को शादी हुई थी, विवेक और अंजलि पहलगाम में ट्रेकिंग के लिए गए थे, लेकिन आतंकयिों ने उन्हें भी नहीं बख्शा, अंजलि किसी तरह बच गईं, अंजलि ने बाद में कहा, हमारी जिंदगी शुरू होने से पहले ही खत्म हो गई. उनकी बातों ने सबको हलिा दयिा था। पुणे की रहने वाली स्नेहा पाटिल अपने पत अमित पाटिल के साथ हनीमून पर गई थीं, 10 अप्रैल को ही इनकी शादी हुई थी, अमित और स्नेहा पहलगाम में छुट्टियां मना रहे थे, तभी आतंकयिों ने उन्हें गोली मार दी, स्नेहा ने अस्पताल में कहा, आतंकियों ने हमारा सब कुछ छीन लिया।सिंदूर मिटाने पर 'ऑपरेशन सिंदूर' पहलगाम के आतंकियों ने जब बैसरन में हमला किया तो वहां उन्होंने किसी भी महिला की जान नहीं ली, दरअसल, इस ऑपरेशन के नाम के पीछे भी एक कारण छिपा है।जब आतंकी हमारी महिलाओं का सिंदूर छीनने की साजिश करें, तो जवाब उसी प्रतीक से दिया जाए, यह संदेश स्पष्ट है, भारत ने ऑपरेशन सिंदूर के जरिए न सिर्फ आतंकियों को सबक सिखाया है, बल्कि यह भी जता दिया है कि अब किसी भी महिला के सिंदूर पर हाथ डालना सीधा युद्ध के बराबर माना जाएग।

साथियों बात अगर हम ऑपरेशन सिंदूर बेहद सीमित सटीक, रणनीतिक व कानून के दायरे में होने की करें तो, यह कार्रवाई बेहद सीमित, रणनीतिक रही, किसी भी पाकिस्तानी सैन्य ठिकाने को निशाना नहीं बनाया गया है। भारत ने आतंकियों के ठिकाने पर मिसाइले दाग कर यह संदेश देने की कोशिश की है कि वह आतंक के खिलाफ सख्त कदम उठाने के लिए हमेशा प्रतिबद्ध है, इससे यह भी साफ हो गया कि भारत अब केवल चेतावनी नहीं देगा, बल्कि जवाबी कार्रवाई भी करेगा। भारत की यह कार्रवाई पूरी तरह से अंतरराष्ट्रीय कानून के दायरे में रही, कोई असैन्य ठिकाना या आम नागरिक इस कार्रवाई की चपेट में नहीं आया, भारतीय विदेश मंत्रालय और रक्षा मंत्रालय ने स्पष्ट कर दिया है कि यह ऑपरेशन केवल आतंकवाद के खिलाफ था, न कि पाकिस्तान की संप्रभुता पर हमला, हालांकि, इससे पाकिस्तान में घबराहट साफ देखी जा सकती है, कई आतंकी ठिकानों को खाली करा लिया गया है और सीमा पर हाई अलर्ट घोषित कर दिया गया है। ऑपरेशन सिंदूर' ने पाकिस्तान को यह भी दिखा दिया है कि अब भारत पुरानी नीति पर नहीं चलेगा, 2016 की सर्जिकल स्ट्राइक और 2019 की बालाकोट एयरस्ट्राइक के बाद यह तीसरी बड़ी कार्रवाई है, जो सीधे पाकिस्तान की धरती पर जाकर की गई है। इसका एक बड़ा संदेश यह भी है कि भारत अब बात नहीं, केवल जवाबी कार्रवाई में विश्वास रखता है पाक को अब तय करना है, वह आतंक की पनाहगाह बना रहेगा या जिम्मेदार पड़ोसी की तरह व्यवहार करेगा।

अतः अगर हम उपरोक्त पर्यावरण का अध्ययन कर इसका विश्लेषण करें तो हम पाएंगे कि ऑपरेशन सिंदूर-पाकिस्तान में घुसकर 9 आतंकी ठिकानों को निशाना बनाकर ध्वस्त किया-सिविल डिफेंस मॉकड्रिल के कुछ घंटे पूर्व कार्रवाई।भारतीय वायुसेना ने पाकिस्तान में घुसकर ऑपरेशन सिंदूर कर 9 आतंकी ठिकानों पर सफ़ल टारगेटेड कार्रवाई की।भारत ने आतंकवाद के खिलाफ़ अपनी लड़ाई को नया आयाम दिया-घर में घुसकर पाकिस्तान को ऑपरेशन सिंदूर से करारा जवाब दिया।

मारुति सुजुकी कार पर बंपर डिस्काउंट ऑफर; वैगन आर, ऑल्टो K10 और सेलेरियो पर 65,000 रुपये की छूट

परिवहन विशेष न्यूज

मई 2025 के लिए Maruti Suzuki ने अपनी गाड़ियों के लिए डिस्काउंट ऑफर लेकर आई है। मई 2025 में Maruti Wagon R Swift और Celerio पर बंपर डिस्काउंट ऑफर मिल रहा है। इनपर 65000 रुपये तक की छूट दी जा रही है। इस महीने NEXA डीलर के जरिए बिकने वाली मारुति की गाड़ियों पर 1.25 लाख रुपये तक की छूट दी जा रही है।

नई दिल्ली। Maruti Suzuki ने हाल ही में NEXA डीलर के जरिए बिकने वाली गाड़ियों पर मई 2025 के लिए डिस्काउंट ऑफर का एलान किया था। अब कंपनी ने मारुति सुजुकी अरिना डीलर मई 2025 के लिए भी डिस्काउंट की घोषणा कर दी है। मई 2025 में Maruti Ertiga के अलावा बाकी सभी पर मॉडल पर नकद छूट या एक्सचेंज और लॉयल्टी बोनस या स्क्रैपेज स्कीम का ऑफर दिया जा रहा है। आइए जानते हैं कि मई 2025 में Maruti Suzuki की गाड़ियों पर कितना डिस्काउंट मिल रहा है।

1. Maruti Wagon R

Wagon R के 1.0-लीटर और 1.2-लीटर पेट्रोल इंजन ऑप्शन के AMT गियरबॉक्स वाले वेरिएंट पर 68,000 रुपये की छूट मिल रही है। इसके मैनुअल और CNG वर्जन 63,000 रुपये तक का डिस्काउंट दिया जा रहा है। भारतीय बाजार में इसे 5.79 लाख रुपये से 7.62 लाख रुपये की एक्स-शोरूम कीमत में ऑफर किया जाता है।

2. Maruti Celerio

Celerio के AMT वेरिएंट पर मई 2025 में 68,000 रुपये तक का डिस्काउंट दिया जा रहा है। वहीं, इसके पेट्रोल-मैनुअल और सीएनजी वर्जन पर 63,000 रुपये तक की छूट दी जा रही है। भारत में इसे 5.64 लाख रुपये से 7.37 लाख रुपये की एक्स-शोरूम कीमत में पेश किया जाता है।

3. Maruti Alto K10

Wagon R और Celerio की तरह ही AMT वेरिएंट पर 68,000 रुपये तक का डिस्काउंट मिल रहा है। इसके साथ ही मैनुअल और CNG वेरिएंट पर 63,000 रुपये तक की छूट दी जा रही है। भारतीय बाजार में मारुति ऑल्टो K10 को 4.23 लाख रुपये से लेकर 6.21 लाख रुपये की एक्स-शोरूम कीमत में पेश किया जाता है।

4. Maruti S-Presso

S-Presso के AMT वेरिएंट पर अधिकतम 63,000 रुपये का डिस्काउंट दिया जा रहा है। भारतीय बाजार में S-Presso को 4.27 लाख रुपये से 6.12 लाख रुपये की एक्स-शोरूम कीमत में पेश किया जाता है।

5. Maruti Swift

Swift पर पिछले महीने की तरह ही मई 2025 में 53,000 रुपये तक का डिस्काउंट ऑफर दिया जा रहा है। वहीं, इसके मैनुअल और स्विफ्ट CNG वेरिएंट पर 48,000 रुपये तक की छूट दी जा रही है। भारत में Swift को 6.49 लाख रुपये से लेकर 9.64 लाख रुपये तक की एक्स-शोरूम कीमत में पेश किया जाता है।

6. Maruti Brezza

Brezza के टॉप-स्पेक ZXI और ZXI+ वेरिएंट पर कुल 35,000 रुपये तक का डिस्काउंट ऑफर दिया जा रहा है, जिसमें 10,000 रुपये की नकद छूट भी शामिल है। इसके लोअव ट्रिम पर 25,000 रुपये तक की छूट दी जा रही है, वो भी एक्सचेंज या स्क्रैपेज बोनस के साथ। इसे भारत में 8.69 लाख रुपये से लेकर 14.14 लाख रुपये की एक्स-शोरूम कीमत में पेश किया जाता है।

7. Maruti Dzire

चौथी जनरेशन की मारुति डिजायर पर 25,000 रुपये तक का एक्सचेंज या स्क्रैपेज बोनस दिया जा रहा है। इसपर कोई नकद छूट नहीं दी जा रही है। भारतीय बाजार में Dzire को 6.84 लाख रुपये से 10.19 लाख रुपये की एक्स-शोरूम कीमत में पेश किया जाता है।

बजाजा प्लेटिना का नया वेरिएंट लॉन्च; नया कलर स्कीम, USB चार्जिंग पोर्ट समेत मिला नया इंजन

2025 Bajaj Platina 110 NXT को भारत में लॉन्क कर दिया गया है। यह Bajaj Platina का नया वेरिएंट है। इसमें नया कलर स्कीम नया ग्राफिक्स USB चार्जिंग पोर्ट समेत कई बेहतरीन फीचर्स दिए गए हैं। इसके साथ ही इसे नया इंजन भी दिया गया है जो OBD-2B के अनुरूप है। इसे बेस वेरिएंट से ऊपर लॉन्च किया गया है।

नईदिल्ली। बजाज ऑटो ने भारत में 2025 Bajaj Platina 110 NXT को भारत में लॉन्च कर दिया है। यह मोटरसाइकिल का नया वेरिएंट है। इसमें कई नए फीचर्क के साथ ही नया ग्राफिक और कलर भी दिया गया है। इसके साथ ही इसका इंजन अब OBD-2B अनुरूप हो गया है। आइए जानते हैं कि बजाज प्लेटिना 110 NXT का नया वेरिएंट किन फीचर्स के साथ लॉन्च किया गया है?

नया कलर स्कीम और ग्राफिक्स

2025 Bajaj Platina 110 NXT को बेस वेरिएंट से ऊपर लॉन्च किया गया है। इसे बेस वेरिएंट से ज्यादा प्रीमियम दिखाया गया है। बाइक में हेटलाइट के चारों तरफ क्रोम बेजल दिया गया है और इसमें इंटीग्रेटेड LED DRLs भी दिया गया है। इस वेरिएंट को रेड-ब्लैक, सिल्वर-ब्लैक और येलो ब्लैक के कॉम्बिनेशन में लेकर आया गया है, जबकि स्टैंडर्ड वेरिएंट में एबोनी ब्लैक ब्लू, एबोनी ब्लैक रेड और कॉकटेल वाइन रेड-ऑरेंज कलर स्कीम मिलता है।

नए कलर स्कीम के साथ मोटरसाइकिल के फ्यूल टैंक, साइड पैनल और हेडलाइट काउल पर नए ग्राफिक्स भी दिए गए हैं, जो देखने में काफी शानदार दिखते हैं। इसके अलावा, बजाज ऑटो ने बाइक को और भी बेहतर बनाने के लिए ब्लैक आउट एलॉय व्हील्स पर रिम डेकल्स भी दिए हैं।

OBD-2B अनुरूप हुआ इंजन

2025 Bajaj Platina 110 NXT में दिया गया इंजन अब नवीनतम उत्सर्जन मानदंडों को पूरा करने के लिए OBD-2B अनुरूप हो गया है। बाइक में लेक्ट्रॉनिक कार्बोरेटर को अब FI (फ्यूल इंजेक्शन) सिस्टम से बदल दिया गया है। हालांकि, इसमें पहले की तरह ही 115.45cc इंजन का इस्तेमाल किया गया है, जो 8.5PS की पावर और 9.81Nm का टॉर्क है। जनरेट करेगा।

सस्पेंशन और ब्रेकिंग सिस्टम

Platina 110 NXT में 17-इंच अलॉय व्हील्स, टेलिस्कोपिक फोर्क और गैस-चार्ज्ड प्रीलोड-एडजेस्टेबल ट्विन रियर शॉक एब्जॉर्बर दिया गया है। इसमें अभी भी CBS (कंबाइंड ब्रेकिंग सिस्टम) के साथ 130mm फ्रंट और 110mm रियर ड्रम ब्रेक दिया गया है। बाइक का वजन 122kg (कर्ब) है और सीट की ऊंचाई 807mm है। इसमें 200mm का ग्राउंड क्लीयरेंस दिया गया है।

फीचर्स

बाइक की फीचर लिस्ट काफी बेसिक है। इसमें अभी भी हैलोजन हेडलाइट और डिजिटल इनसेट के साथ एनालॉग इंस्ट्रूमेंट कंसोल दिया गया है। इसमें कंसोल के ठीक ऊपर एक USB चार्जिंग पोर्ट दिया गया है और इसमें बाकी वेरिएंट के मुकाबले आरामदायक सीट कुशनिंग दी गई है।

कीमत

2025 Bajaj Platina 110 NXT को भारत में 74,214 रुपये की एक्स-शोरूम कीमत में लॉन्च किया गया है, जो बेस वेरिएंट से 2,656 रुपये ज्यादा है, जिसकी एक्स-शोरूम कीमत 71,558 रुपये

मई 2025 में हुंडई की कारों पर मिल रहा लाखों रुपये बचाने का मौका, जानें किस गाड़ी पर क्या है ऑफर

साउथ कोरियाई वाहन निर्माता Hyundai की ओर से भारतीय बाजार में कई सेगमेंट में वाहनों की बिक्री की जाती है। May 2025 में अगर आप कंपनी की गाड़ी खरीदने का मन बना रहे हैं तो इस महीने किन कारों पर कितना डिस-काउंट कंपनी की ओर से ऑफर किया जा रहा है। आइए जानते हैं।

नईदिल्ली। साउथ कोरियाई वाहन निर्माता हुंडई की ओर से भारतीय बाजार में कई सेगमेंट में वाहनों की बिक्री की जाती है। निर्माता की ओर से कई कारों और एसयूवी पर May 2025 में भी डिस्काउंट ऑफर किया जा रहा है। किस गाड़ी को इस महीने खरीदने पर कितनी बचत की जा सकती है। हम आपको इस खबर में बता रहे हैं।

Hyundai Ioniq पर होगी सबसे ज्यादा बचत

हुंडई की ओर से प्रीमियम इलेक्ट्रिक एसयूवी सेगमेंट में Hyundai Ioniq5 की बिक्री की जाती है। निर्माता की ओर से इस महीने इस गाड़ी को खरीदने पर चार लाख रुपये तक का डिस्काउंट ऑफर किया जा रहा है।

Hyundai Tucson पर क्या है ऑफर

May 2025 में हुंडई की ओर से ट्यूशॉन एसयूवी पर भी हजारों रुपये के डिस्काउंट ऑफर किए जा रहे हैं। कंपनी की ओर से इस महीने में इस एसयूवी को खरीदने पर अधिकतम 80 हजार रुपये बचाए जा सकते हैं।

Hyundai Grand Nios i10 पर कितनी होगी बचत

हुंडई की ओर से भारत में सबसे सस्ती गाड़ी के तौर पर हैचबैक सेगमेंट में Hyundai Grand Nios i10 को लाया जाता है। इस गाड़ी को इस महीने में खरीदने पर हजारों रुपये बचाए जा सकते हैं। जानकारी के मुताबिक कंपनी की इस गाड़ी पर अधिकतम 80 हजार रुपये तक के ऑफर्स को दिया जा रहा है।

Hyundai Venue पर भी मिलेगा ऑफर

सब फोर मीटर एसयूवी के तौर पर Hyundai Venue को ऑफर किया जाता है। इस महीने इस गाड़ी को खरीदने पर अधिकतम 75 हजार रुपये तक बचाए जा सकते हैं।

Hyundai i20 पर भी मिल रहा Discount Offer

कंपनी की ओर से प्रीमियम हैचबैक के तौर पर Hyundai i20 को लाया जाता है। इस एसयूवी पर इस महीने में 65 हजार रुपये तक बचाए जा सकते हैं। इसके एन लाइन वर्जन पर भी इस महीने में अधिकतम 60 हजार रुपये तक के डिस्काउंट ऑफर्स को दिया जा रहा है।

Hyundai Aura पर मिलेगा हजारों रुपये की बचत का मौका

हुंडई की ओर से कॉम्पैक्ट सेडान कार के तौर पर Hyundai Aura को भारतीय बाजार में ऑफर किया जाता है। जानकारी के मुताबिक इस महीने में इस गाड़ी को खरीदा जाता है तो अधिकतम 65 हजार रुपये तक की बचत की जा सकती है।

Hyundai Verna पर भी होगी बचत

कंपनी की ओर से मिड साइज सेडान कार के तौर पर Hyundai Verna को ऑफर किया जाता है। अगर आप इस महीने इस गाड़ी को खरीदने का मन बना रहे हैं तो आपको अधिकतम 65 हजार रुपये तक के ऑफर्स दिए जा सकते हैं।

होंडा ऐलीवेट के बेस वेरिएंट एसवी को घर है लाना, 2 लाख डाउन पेमेंट के बाद देनी होगी इतनी ईएमआई

परिवहन विशेष न्यूज

Honda Cars की ओर से SUV सेगमेंट में Honda Elevate को ऑफर किया जाता है। इसके बेस वेरिएंट को खरीदकर घर लाने का मन बना रहे हैं तो सिर्फ दो लाख रुपये की Down Payment करने के बाद हर महीने कितने रुपये की EMI देकर एसयूवी सेगमेंट की गाड़ी को घर लाया जा सकता है। आइए जानते हैं।

नई दिल्ली। जापानी वाहन निर्माता Honda की ओर से भारतीय बाजार में सिर्फ मिड साइज एसयूवी के तौर पर Honda Elevate को बिक्री के लिए उपलब्ध करवाया जाता है। Honda Elevate के बेस वेरिएंट SV को अगर आप भी घर लाने का मन बना रहे हैं, तो दो लाख रुपये की Down Payment करने के बाद हर महीने कितने रुपये की EMI देकर इसे घर लाया जा सकता है। हम आपको इस खबर में बता रहे हैं।

Honda Elevate SV Price

Honda की ओर से Elevate SUV के बेस वेरिएंट के तौर पर SV को ऑफर किया जाता है। कंपनी इस मिड साइज एसयूवी के बेस वेरिएंट को 11.91 लाख रुपये की एक्स शोरूम कीमत पर बिक्री के लिए उपलब्ध करवा रही है। अगर इसे दिल्ली में खरीदा जाता है तो 11.91 लाख रुपये की एक्स शोरूम कीमत के साथ ही इस पर रजिस्ट्रेशन टैक्स और आरटीओ की कीमत भी देनी होगी। इस गाड़ी को खरीदने के लिए 1.19 लाख रुपये आरटीओ, करीब 55 हजार रुपये इंश्योरेंस के देने होंगे। टीसीएस चार्ज के तौर पर 11910 रुपये भी देने होंगे। जिसके बाद गाड़ी की दिल्ली में ऑन रोड कीमत 13.77 लाख रुपये हो जाती है।

दो लाख रुपये Down Payment के बाद कितनी EMI

अगर Honda Elevate SUV के बेस वेरिएंट SV को आप खरीदते हैं, तो बैंक की ओर से एक्स शोरूम कीमत पर ही फाइनेंस किया जाएगा। ऐसे में दो लाख रुपये की डाउन पमेंट करने के बाद आपको करीब 11.77 लाख रुपये की राशि को बैंक से फाइनेंस करवाना होगा। बैंक की ओर से अगर आपको नौ फीसदी ब्याज के साथ सात साल के लिए 11.77 रुपये दिए जाते हैं, तो हर महीने सिर्फ 18943 रुपये की EMI आपको अगले सात साल के लिए देनी होगी।

कितनी महंगी पड़ेगी Car

अगर आप नौ फीसदी की ब्याज दर के साथ सात साल के लिए 11.77 लाख रुपये का बैंक से Car Loan लेते हैं, तो आपको सात साल तक 18943 रुपये की EMI हर महीने देनी होगी। ऐसे में सात साल में आप Honda Elevate के SV वेरिएंट के लिए करीब 4.13 लाख रुपये बतौर ब्याज देंगे। जिसके बाद आपकी कार की कुल कीमत एक्स शोरूम, ऑन रोड और ब्याज मिलाकर करीब 17.91 लाख रुपये हो जाएगी।

किनसे होता है मुकाबला

Honda की ओर से Elevate को मिड साइज एसयूवी सेगमेंट में लाया जाता है। इस सेगमेंट में इसका सीधा मुकाबला Hyundai Creta, Kia Seltos, Tata Harrier, Maruti Grand Vitara, Toyota Urban Cruiser Hyryder जैसी SUVs के साथ होता है।

भारत में जल्द लॉन्च होगी नई होण्डा CBR650R, E-क्लच सिस्टम समेत कई बेहतरीन फीचर्स से होगी लैस

परिवहन विशेष न्यूज

होंडा बिगविंग इंडिया ने Honda CBR650R का एक फोटो टीजर जारी किया है। जिसके बाद से इसके भारतीय बाजार में लॉन्च होने की उम्मीद बढ़ गई है। इसे साल 2025 के आखिरी तक भारत में लॉन्च किया जा सकता है। इस बाइक को E-Clutch सिस्टम से लैस किया जा सकता है जिससे इसे ड्राइव करना पहले से ज्यादा आरामदायक हो जाएगा।

नई दिल्ली। होंडा बिगविंग इंडिया ने Honda CBR650R की एक फोटो जारी किया है। इस फोटो के साथ ही कंपनी ने लिखा है कि पावर, प्रिसिज़न और आने वाले समय में और भी बहुत कुछ"। जिससे साफ पता चलता है कि CBR650R को जल्द ही भारतीय बाजार में नए फीचर्स समेत नए डिजाइन के साथ लॉन्च किया जा सकता है। वह यह टीजर अंतरराष्ट्रीय स्तर पर उपलब्ध ई-क्लच सिस्टम की तरफ भी इशारा कर रहा है। आइए जानते हैं कि होंडा ई-क्लच सिस्टम क्या है और कैसे काम करता है? वहीं, भारत में नई Honda CBR650R को कब लॉन्च किया जाएगा।

क्या है Honda E-Clutch सिस्टम

Honda CBR650R में होंडा ई-क्लच सिस्टम का इस्तेमाल होने के बाद इसका 211 किलोग्राम तक वजन बढ़ जाएगा। इसकी मदद से राइडर क्लट क्लीयर का इस्तेमाल किए बिना ही गियर बदल सकते हैं। ई-क्लच होंडा के मौजूदा क्विकशिफ्टर और डुअल क्लच ट्रांसमिशन (DCT) सिस्टम से प्रेरणा लेता है, लेकिन इसे मानक गियरबॉक्स और क्लच सेटअप के साथ काम करने के लिए डिजाइन किया गया है। यह सिस्टम सिस्टम क्लच एंगेजमेंट को इलेक्ट्रॉनिक रूप से प्रबंधित करने के लिए एक्ट्यूएटर्स की एक जोड़ी और कई सेंसर का इस्तेमाल करता है, जो स्टॉप-गो ट्रैफिक में क्लचलेस गियर चेंज और स्टॉल-फ्री ऑपरेशन देता है।

कैसे करता है काम?

यह राइडर्स को पारंपरिक और क्लचलेस राइडिंग के बीच ऑप्शन देता है। राइडर्स क्लच लीवल को छुए बिना गियर बदलने के लिए बस शिफ्ट पेडल का इस्तेमाल कर सकते हैं। यह स्टार्ट या स्टॉप करते समय क्लच ऑपरेशन को भी हैंडल करता है, जिससे बाइक इस्तेमाल करना काफी आसान हो जाता है। होंडा ने शिफ्ट फील के लिए कस्टमाइज़ेशन विकल्प भी बनाए हैं, जिससे राइडर्स अपशिफ्ट और डाउनशिफ्ट दोनों के लिए सॉफ्ट, मीडियम और हार्ड रेजिस्टेंस सेटिंग्स के बीच चुनाव कर सकते हैं। इसके अलावा यह सिस्टम राइडर को डाउनशिफ्ट करने के लिए अलर्ट भी करेगी, अगर बाइक हाई गियर में है, जिस स्पीड में राइडर बाइक चला रहा है उस गियर के हिसाब से नहीं है।

कितनी बदलेगी Honda CBR650R?

इसमें पहले की तरह ही 649cc इन-लाइन फोर इंजन देखने के लिए मिलेगा, जो 95hp की पावर और 63Nm का टॉर्क जनरेट करता है। इसकी स्टाइलिंग और डिजाइन में कुछ बदलाव देखने के लिए मिल सकते हैं। इसके इंजन पर ई-क्लच ब्रांडिंग और क्लच केस जो सामान्य से थोड़ा ज्यादा बाहर निकले हुए दिखाई दे सकते हैं।

कब होगी लॉन्च?

कंपनी की तरफ से अभी तक नई Honda CBR650R के लॉन्च होने की तारीख की घोषणा नहीं की गई है, लेकिन इसके टीजर से यह जरूर पक्का हो गया है कि ई-क्लच के साथ CBR650R को भारत में जल्द ही लॉन्च किया जाएगा। मौजूदा से इसकी कीमत थोड़ी ज्यादा हो सकती है। मौजूदा CBR650R की एक्स-शोरूम कीमत 9.99 लाख रुपये है।

...बदला हुआ भारत, बदला लेना जानता है

डॉ. आशीष वशिष्ठ

पहलगाम में आतंकी हमला कोई पहली घटना नहीं था जिसको पाक का समर्थन प्राप्त था। दशकों से पाकिस्तान में पले–बढ़े और प्रशिक्षित आतंकी भारत में आतंकी घटनाओं को अंजाम देते आए हैं। लेकिन हर बार घटना के बाद भारत सरकार का रवैया जबानी जमा खर्च तक रहा।
जम्मू–कश्मीर के पहलगाम में हुए आतंकी हमले के एक पखवाड़े बाद भारत ने इसका जवाब उपयुक्त और निर्णायक ढंग से दिया। 6/7 मई की मध्यरात्रि भारतीय सेना ने पाकिस्तान और पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर यानी पीओके में आतंकियों के ठिकानों को निशाना बनाकर एयर स्ट्राइक की।

भारत ने इस जवाबी कार्रवाई को नाम दिया है 'ऑपरेशन सिंदूर'। ये नाम उन महिलाओं को समर्पित है, जिनके पतियों की पहलगाम में आतंकियों ने धर्म पूछकर हत्या कर दी थी। इस सैन्य कार्रवाई को केवल रणनीतिक पलटवार नहीं, बल्कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के उस स्पष्ट संकल्प की पुष्टि के रूप में देखा जा रहा है, जो उन्होंने हमले के दो दिन बाद बिहार के मधुबनी से दिया था।

24 अप्रैल को पंचायती राज दिवस के मौके पर मधुबनी पहुंचे प्रधानमंत्री मोदी ने पहलगाम हमले पर गहरा शोक प्रकट किया और देशवासियों से दो मिनट का मौन रखवाया। इसके बाद उन्होंने एक कड़े और प्रतिज्ञाबद्ध स्वर में कहा था— ₹मैं बहुत स्पष्ट शब्दों में कहना चाहता हूं कि जिन्होंने ये हमला किया है, उन आतंकियों को और इस हमले की साजिश रचने वालों को उनकी कल्पना से भी बड़ी सज़ा मिलेगी।₹ बिहार मधुबनी में प्रधानमंत्री का दिया गया बयान अब 'ऑपरेशन सिंदूर' के रूप में धरातल पर उतर चुका है, जिसमें आतंकी नेटवर्क की जड़ें हिलाकर रख दी गई हैं। ऑपरेशन सिंदूर के लिए जिन आतंकी ठिकानों को मिट्टी में मिलाया गया है, उनमें से चार पाकिस्तान में और पांच पीओके में हैं।

पहलगाम में आतंकी हमला कोई पहली घटना नहीं था जिसको पाक का समर्थन प्राप्त था। दशकों से पाकिस्तान में पले—बढ़े और प्रशिक्षित आतंकी भारत में आतंकी घटनाओं को अंजाम देते आए हैं। लेकिन हर बार घटना के बाद भारत सरकार का रवैया जबानी जमा खर्च तक रहा। दो चार दिन की बयानबाजी और कागजी कार्रवाई के बाद गाड़ी पुरानी पटरी पर दौड़ती रही। और पाकिस्तान अपनी कारस्तानियों से बाज नहीं आया।

26 नवंबर 2008 की रात, भारत की आर्थिक राजधानी मुंबई उस समय दहल उठी जब पाकिस्तान के आतंकी संगठन लश्कर-ए-तैयबा के 10 आतंकियों ने समुद्र के रास्ते शहर में प्रवेश किया। हमले के दौरान, भारतीय सुरक्षा बलों, जिसमें मुंबई पुलिस, एनएसजी और अन्य कमांडो शामिल थे, ने तीन दिनों तक ऑपरेशन चलाया। इस ऑपरेशन में 9 आतंकी मारे गए, लेकिन अजमल कसाब को 27 नवंबर 2008 को जुहू चौपाटी पर जिंदा पकड़ लिया गया। इस हमले में 166 लोग मारे गए, जिनमें 26 विदेशी नागरिक भी शामिल थे और 300 से अधिक लोग घायल हुए।

तत्कालीन कांग्रेस नीत यूपीए सरकार केंद्र की सत्ता में थी। प्रधानमंत्री थे डॉ. मनमोहन सिंह। इस घटना के बाद तत्कालीन भारत सरकार का रवैया जगजाहिर है। असल में तत्कालीन सत्तासीन दल का पूरा जोर इस बात पर था कि इस हमले में शामिल लोगों को हिंदू साबित किया जाए, जिससे वो हिंदू आतंकवाद की थ्योरी को स्थापित कर सके। गनीमत यह रही कि आतंकी अजमल कसाब जिंदा पकड़ लिया गया। वरना सुरक्षाबलों द्वारा मारे गए आतंकियों के हाथों मे षड्यंत्र पूर्वक बंधे कलावे से ही सरकार हिंदू आतंकवाद की थ्योरी स्थापित करने में सफल हो जाती।

12 मार्च 1993 को मुंबई के विभिन्न इलाकों खासकर हिंदू आबादी बहुल में 13 सिलसिलेवार बम धमाके हुए, जिसमें 257 निर्दोष नागरिकों की जान चली गई और 700 से ज्यादा निर्दोष नागरिक घायल हो गए। उस समय केंद्र में कांग्रेस की सरकार थी। पीवी नरसिंह राव देश के प्रधानमंत्री थे। 13 दिसंबर 2001 को, जैश-ए-मोहम्मद और लश्कर-ए-तैय्यबा नामक आतंकवादी संगठनों के पांच आतंकवादियों ने भारत की संसद पर एक घातक हमला किया। इस आतंकी हमले का मुख्य आरोपी मोहम्मद अफजल गुरु था। इस हमले में दिल्ली पुलिस के पांच जवान, एक महिला कांस्टेबल और दो सुरक्षा गार्ड शहीद हो गए।

24 सितंबर 2002... शाम के करीब पौने पांच बजे का समय, ये वो दिन था जब गुजरात के अक्षरधाम मंदिर को आतंकियों ने अपना निशाना बनाया। इस आतंकी हमले में मंदिर परिसर में मौजूद 32 श्रद्धालुओं और 3 सुरक्षाकर्मियों की जान गई थी। आतंकियों ने हथियारों से लैस होकर

श्रद्धालुओं को निशाना बनाया था। इस घातक हमले में लश्कर-ए-तैयबा से जुड़े आतंकवादियों का संबंध था। आतंकवादियों को एनएसजी कमांडो ने मार गिराया था। संसद और अक्षरधाम हमले के समय देश में भाजपा नीत एनडीए के नेता प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी गठबंधन की सरकार चला रहे थे।

देश में आतंकी घटनाओं की लंबी फेहरिस्त है। चूंकि देश में सबसे ज्यादा लंबे समय तक कांग्रेस का राज रहा है। ऐसे में पाक समर्थित आतंकवाद से निपटने के लिए बयानबाजी और डोजियर भेजने का जो तरीका कांग्रेस की सरकार ने शुरू किया, वो रिवायत 2014 तक जारी रही। हर आतंकी हमले के बाद भारत ने जिस तरह रिएक्ट किया, उससे पूरी दुनिया में यह मैसेज गया कि भारत एक 'सॉफ्ट स्टेट' है। भारत के इस टालू और ठंडे रवैये से पाकिस्तान के हौसले बुलंद हुए। 2004 से 2014 में कांग्रेस नीत यूपीए सरकार के शासन में आतंकियों के हौसले इतने बुलंद थे कि वो जहां चाहते थे आसानी से हमले को अंजाम दे देते थे। उन्हें पता था कि भारत सरकार का रवैया बयानबाजी और कागजी लिखा पढ़ी से ज्यादा कुछ नहीं होगा।

वर्ष 2014 में केंद्र की सत्ता में भाजपा नीत एनडीए सरकार का आगमन हुआ। जिसका नेतृत्व प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी कर रहे हैं। मोदी सरकार ने सत्ता संभालने के साथ आतंकवाद के खिलाफ जीरो टॉलरेंस की नीति पर काम करना शुरू किया। जिसका नतीजा यह रहा है कि कश्मीर को छोड़कर देश के किसी हिस्से में आतंकी घटनाओं की खबर सामने नहीं आई। कश्मीर में स्थानीय लोगों की मदद से आतंकियों और उनके सरगनाओं के हौसले बुलंद है। 2019 में धारा 370 को हटाने के बाद घाटी के हालात तेजी से बदले। के बाद से देश में आतंकी घटनाओं का ग्राफ गिरा है।

18 सितंबर 2016 में जम्मू-कश्मीर स्थित उरी भारतीय सेना के ब्रिगेड हेडक्वार्टर पर जैश-ए-मोहम्मद के चार आतंकवादियों ने सुबह सवेरे घात लगाकर हमला किया। हमले में हमारे कई जवान शहीद हुए। इस हमले के महज 10 दिन बाद भारतीय जवानों ने 28-29 सितंबर की दरम्यानी रात को पीओके में सीमा के भीतर तीन किलोमीटर अंदर तक घुसकर आतंकी ठिकानों को नेस्तनाबूद कर डाला। पाकिस्तान को सबक सिखाने का इससे बेहतर तरीका नहीं हो सकता था। जम्मू कश्मीर के पुलवामा में 14 फरवरी 2019 की शाम करीब तीन बजे सीआरपीएफ के एक काफिले को श्रीनगर-जम्मू हाईवे पर आतंकी हमला हुआ था। इस हमले में 40 जवान शहीद हो गए थे। इस हमले का बदला लेने के लिए भारत ने एयर स्ट्राइक का विकल्प चुना था।

इन दो बड़ी घटनाओं के बाद मोदी शासनकाल में पहलगाम घटना सामने आई है। जिसका प्रत्युत्तर मोदी सरकार ऑपरेशन सिंदूर के तौर पर दिया है। चूंकि आतंकियों ने धर्म पूछकर हिंदू पुरुषों की हत्या उनकी पत्नी और परिवार के सामने की। आतंकियों ने हिंदू महिलाओं का सुहाग उजाड़ कर उनके माथे के गौरव सुहाग चिह्न सिंदूर को पोंछने का कुकृत्य किया था। इसलिए प्रधानमंत्री मोदी ने नापाक पाकिस्तान को सबक सिखाने के लिए हुए ऑपरेशन का नामकरण सिंदूर रखकर दुनिया को यह संदेश दिया है कि निर्दोष नागरिकों को मारकर सुहाग उजाड़ने और सिंदूर मिटाने वाले ज्यादा दिन सांस नहीं ले पाएंगे।

पहलगाम आतंकी घटना में हुई नृंशसता के बारे में भारत की बेटियों ने रो—रोकर पूरी दुनिया को बताया था। पाकिस्तान के आतंकी ठिकाने उजाड़ने के बाद भारतीय सैनिकों की वीरता की कहानी भी प्रेस वार्ता के माध्यम से भारत की दो बेटियों कर्नल सोफिया कुरैशी और विंग कमांडर व्योमिका सिंह ने ही पूरी दुनिया के सामने रखी। इस ऑपरेशन के जरिये भारत ने फिर स्पष्ट किया है कि अब कोई आतंकी हमला बिना जवाब के नहीं जाएगा। यह कार्रवाई सिर्फ एक सैन्य उपलब्धि नहीं, बल्कि 140 करोड़ भारतीयों की सामूहिक इच्छा का परिणाम है। प्रधानमंत्री के शब्दों में—"अब आतंकियों की बची-खुची जमीन को भी मिट्टी में मिलाने का समय आ गया है।"

सिंदूर के ठीक पूर्व जाति जनगणना- नीलकंठाय संघवे अमृतेषाय सर्वाय

डॉ. प्रवीण दाताराम

भारत की एकता-अनेकता, खंडन-मंडन-विखंडन, रसता-समरसता, श्रेय-हेय, उत्कर्ष-निष्कर्ष, सफलता-असफलता, सबलता-निर्बलता आदि-आदि जैसे सभी तत्व हमारी जाति व्यवस्था के सुफलित होने पर ही निर्भर करता है। पाकिस्तानी आतंकियों द्वारा बाईस अप्रैल के पहलगाम अटैक के बाद कुछ लोग कह रहे थे कि यह देश का ध्यान बाँटने का केंद्र सरकार का प्रयत्न है। वस्तुतः जाति आधारित जनगणना की घोषणा का यदि कोई देवयोग था, तो वह पाकिस्तान पर भारतीय हमले की यह पूर्वसंध्या ही थी। यह देश को एक करने, एक रखने, एक दिशा में बढ़ाने का सर्वाधिक सटीक समय है। अब राष्ट्रीय संकट के इन दिनों, महीनों या वर्षों में हम जातिगत गणना भी करेंगे और सभी जातियाँ एकात्म होकर भारतीय सेना के संग खड़ी भी दिखेंगी। यही है नया भारत।

मूल बात- "संघ का दृष्टिकोण- यदि, जातिगत जनगणना का उद्देश्य न्याय और कल्याण है, तो समर्थन है; यदि इसका उद्देश्य राजनीति और समाज को बांटना है, तो उसका सदैव ही विरोध है"।

भारत की एकता-अनेकता, खंडन-मंडन-विखंडन, रसता-समरसता, श्रेय-हेय, उत्कर्ष-निष्कर्ष, सफलता-असफलता, सबलता-निर्बलता आदि-आदि जैसे सभी तत्व हमारी जाति व्यवस्था के सुफलित होने पर ही निर्भर करता है। जाति व्यवस्था के उत्कृष्ट प्रयोग से हम हमारे देश संगठन का समुत्कर्ष प्राप्त कर सकते हैं तो निकृष्ट उपयोग से हम रसातल में भी जा सकते हैं। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की भारतीय जाति व्यवस्था को लेकर यही राय रही है। इस राय के अनुरूप ही आरएसएस भारतीय जाति व्यवस्था पर समय-समय पर प्रयोग-अनुप्रयोग करता है और करता रहेगा।

अपनी सौ वर्षों की यात्रा में संघ का यह जाति विमर्श देश के समक्ष प्रामाणिकता से स्पष्ट व स्थापित है। इस अवसर पर आरएसएस सौ वर्षीय प्रामाणिक जातीय दृष्टिकोण निश्चित ही देश को इस निर्णय की व्यापक पूर्व अध्ययन जनित पीठिका का आभास देता है। "संघ जो करेगा ठीक ही करेगा", आज देश का जनमानस ऐसा सोचने की सुलभ-सहज स्थिति में है। यह सब एकाएक नहीं हुआ है, यह संघ की शतवर्षीय अनथक, अनवरत यात्रा से उपजा तपोबल है। जनता स्पष्टतः जानती है, यदि भाजपा ने जातिगत गणना में तनिक भी राजनैतिक दृष्टिकोण रखा तो सर्वप्रथम संघ ही उसे रोकेगा।

संघ इस निर्णय को तब तक ही मानेगा जब तक यह ₹न्याय और कल्याण₹ का उपकरण है। सामयिक, सटीक, नवनुतन रहने वाले संघ ने इस नवीन तथ्य को माना है कि "कल्याणकारी शासकीय योजनाओं की सटीकता हेतु विवेचक सांख्यिकी अनिवार्य हैं। इस सांख्यिकी के बिना, शासकीय योजनाएं अनुचित वर्ग को लाभान्वित करती हैं, और, दूसरी ओर वंचित वर्ग वंचित ही रह जाता है।

'उन्हें इतना सारा मिला, हमें केवल ही इतना मिला', जैसे भाव समाज में उभरने की पर्याप्त संभावनाएँ हैं। इन भावों के उन्मूलन में भी निश्चित ही अपनी सांगठनिक शक्ति, समाज में पैठ व शुचिता के आधार पर, संघ, देश की मदद कर पायेगा यह विश्वास है। बल्कि, यह भी कहा जा सकता है कि जातिगत जनगणना के मंथन में जो विष निकलेगा उसे पीना और नीलकंठ बनना केवल राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के वश की ही बात है। सुधिजन, श्रेष्ठीजन यहाँ यह प्रश्न कर सकते हैं कि यदि संघ को इस मंथन से विष निकलने का इतना ही विश्वास है तो फिर इस मंथन को संघ रोकने का प्रयास क्यों नहीं कर रहा?! इसका उत्तर है कि "एक समय विशेष या कालखंड विशिष्ट में समाज का मंथन भी आवश्यक है और उससे निकले गरल कंठस्थ करना, नीलकंठ बनना और समाज को अमृतपान कराना भी आवश्यक है"। निश्चित ही संघ इस कार्य को भली भाँति कर पायेगा।

मूल भारतीय समाज में, अर्थात हिंदू व हिंदू जनित अन्य धर्मावलंबियों के मानस में एक बात बड़ी स्पष्ट है- "यदि समाज का कोई अंग पीछे है तो उसे आगे लाना ही है" जातिगत सांख्यिकी और उनके विकास के सटीक आंकड़ों से, कई आशंकाओं, विसंगतियों व विराधाभासों का शमन हो जाएगा।

इस आधार पर ही संघ ने केंद्र सरकार के जाति आधारित जनगणना के निर्णय के तत्काल बाद कहा- "यदि जातिगत जनगणना का उद्देश्य न्याय और कल्याण है, तो समर्थन योग्य है; और, यदि इसका उद्देश्य राजनीति और समाज को बांटना है, तो उसका सदैव ही विरोध"। एक पंक्ति का कथन और सभी को स्पष्ट और दो टूक मार्गदर्शन! इस अवसर पर मुझे एक प्रसंग स्मरण में आता है- 'पिछले वर्षों की ही बात है, संघ का एक उच्चस्तरीय पंच दिवसीय चिंतन शिविर बड़ोदरा में आयोजित था। इस कार्यशाला में सर संघचालक जी, सभी सरकार्यवाह जी सहित, समूचा शीर्षस्थ नेतृत्व पूरे समय बिना किसी प्रोटोकाल के सभी कार्यकर्ताओं के मध्य ही भोजन, चर्चा, विश्राम में निमग्न रहता था। कार्यशाला के दूसरे दिन सत्र के मध्य ही किसी अन्य स्वयंसेवक ने मेरी जाति आधारित किसी बात पर तीक्ष्ण प्रतिक्रिया व्यक्त कर दी। मैंने कोई प्रतिक्रिया, प्रत्युत्तर नहीं दिया। पाँचवे दिन अपने समापन भाषण में संघ नेतृत्व ने बिना किसी का नाम लिए इस घटना उल्लेख किया- "जिसने जातीय दृष्टिकोण से अपनी बात रखी उसने अपने अध्ययन से, सुधार की सकारात्मक आशा से बात रखी, किंतु, जिसने प्रतिक्रिया दी, उसने केवल जाति विशेष का प्रतिनिधि बनकर उत्तर दिया। ध्यान रहे, हम सब इस कार्यशाला में केवल और केवल एक स्वयंसेवक के रूप में सम्मिलित हुए हैं, किसी जाति का प्रतिनिधि बनकर नहीं।" संघ के उन शीर्षस्थ अधिकारी ने जिस कठोर शैली में अपनी इस बात को रखा था उससे संघ का यह स्पष्ट मत, पुनर्प्रसारित हुआ कि संघ के आयोजनों, चर्चाओं में जब हम आते हैं तो केवल एक स्वयंसेवक बनकर आना ही उचित होता है। अपनी जातिगत पहचान को हम अपने जूतों के साथ कक्ष के बाहर ही छोड़ आते हैं।

जाति आधारित जनगणना के निर्णय के संदर्भ में कुछ मत आए हैं, जैसे- जाति जनगणना, हिन्दुत्व की पुर्णाहुति है। और जैसे, अगर जाति जनगणना होती है तो यह संघ की नाभि नाल में जहर भर देने जैसा होगा। ऐसी और कितनी ही कठोर आशंकाओं के मध्य भी यदि संघ या भाजपा ने सुधार या सोशल रिफार्म का गरल होकर नीलकंठ होने का प्रयास किया है तो यह संघ की नित्य प्रार्थना के इस भाव को ही व्यक्त करता है- श्रुतं चैव यत्कण्टकाकीर्ण मार्गं, स्वयं स्वीकृतं नः सुगं कारयेत्।। अर्थात, हे भारतमाता, हमें ऐसा ज्ञान दे कि स्वयं स्वीकृत व चयनित यह कंटकाकीर्ण (कांटो भरा) यह मार्ग सुगम हो जाये। स्वयंसेवक बाहुल्य वाली भाजपा ने जाति आधारित जनगणना का यह कांटो भरा मार्ग, राष्ट्रहितार्थ स्वयं ही चुना है।

संघ की जाति संदर्भित अकाट्य व सर्वस्वीकृत मान्यता भी स्वयंसिद्ध सिद्धांत ही तो है- ₹जातिवाद एक सामाजिक विकृति है, उसे समाज सुधार से हटाया जाना चाहिए, कानून से नहीं थोपना चाहिए।₹ संघ में बहुधा ही कहीं जाने वाली एक बड़ी सरल, सहज, सिद्ध पंक्ति भी संघ के जाति दर्शन को स्पष्ट करती है- "हर समस्या का हाल केवल एक- हम सब हिंदू एक, हम सब हिंदू एक"।

संघ पूज्य श्रीगुरुजी ने जो कहा, ₹हमारा हिंदू समाज एक महासागर है- उसमें कोई उथला नहीं, कोई गहरा नहीं।₹ बाला साहब देवरस ने दोहराया- "यदि स्वयं ईश्वर धरा पर उतरकर इस जातिगत भेदभाव को स्वीकार करने को कहेंगे, तो मैं उनकी बात भी नहीं मानूँगा"। तो आइए हम सभी जातियां मिलकर एक दूजे को सिंदूर लगाएँ और संघ की यह बात भी दोहराएँ कि "जाति, हिंदू समाज की पहचान नहीं, उसका असंतुलन है। उसे दूर करना हमारी प्राथमिक जिम्मेदारी है।"

विदेश मंत्रालय, भारत सरकार में सलाहकार, राजभाषा

.....तो क्या 'ऑपरेशन सिंदूर' के प्रतिरक्षात्मक मायने को समझ पाएगी 'आतंकी दुनिया'? या फिर.....!

कमलेश पांडे

ताजा सैन्य कार्रवाई की खास बात यह है कि भारतीय सेना ने सिर्फ पाकिस्तान स्थित आतंकी ठिकानों को ही निशाना बनाया है और वहां के किसी भी सरकारी बिल्डिंग या फिर पाकिस्तान के किसी नागरिक को निशाना नहीं बनाया गया है, जो भारत की शांतिप्रियता और आतंकवाद के खिलाफ शून्य सहिष्णुता की नीति को दर्शाता है।

पहलगाम 'सांप्रदायिक' आतंकी हमले के बाद भारत ने अपने पड़ोसी शत्रु देश पाकिस्तान के ऊपर आरोप लगाते हुए वहां स्थित 9 आतंकी ठिकानों पर अपने इंडियन आर्मी के तीनों धड़ों के एक संयुक्त अभियान के मार्फ़त जो ताबड़तोड़ एयर स्ट्राइक किए हैं, वह भारतीय स्वाभिमान की रक्षा की दिशा में उठाया हुआ एक उचित कदम है। उम्मीद है कि मोदी सरकार अब इस सिलसिले को थमने नहीं देगी, खासकर तबतक जबतक कि आतंकियों का समूल रूप से नाश नहीं हो जाए। सूत्रों के अनुसार खबर आ रही है कि पीएम आवास से पीएम मोदी पूरा ऑपरेशन देख रहे थे। ऑपरेशन सिंदूर पर पीएम मोदी की नजर थी।

वहीं, एहतियाती तौर पर भारत सरकार ने अपने देश को इंडियन एयरफोर्स के सहारे हाई अलर्ट मोड पर रखे हुए है, ताकि पाकिस्तान के किसी भी दुस्साहस का जवाब दिया जा सके। हमारा स्पष्ट मानना है कि भारत के इस पलटवार के प्रतिरक्षात्मक मायने को न केवल पाकिस्तान, पूर्वी पाकिस्तान यानी बंगलादेश और चीन को समझना चाहिए, बल्कि वर्ल्ड इस्लामिक काउंसिल (ओआईसी) और उनके आका पश्चिमी देशों को भी यह समझना चाहिए कि भारतीय जनभावनाओं की शांति के लिए ऐसा निर्णायक कदम उठाना भारत सरकार के लिए कितना जरूरी था।

.....और हां, इंडियन आर्मी या एयरफोर्स या नेवी ने या फिर उनकी संयुक्त कमान ने पाकिस्तान की सरजमीं पर घुसकर ऐसा निर्णायक प्रहार कोई पहली बार नहीं किया है, बल्कि उरी आतंकी हमले और पुलवामा आतंकी हमले के बाद भी भारतीय सेनाएं ऐसा कर चुकी हैं। इससे उम्मीद बंधती है कि भारतीय सेना उचित समय पर पाकिस्तान का सही इलाज करना जानती है और उसकी राह में कोई भी अंतरराष्ट्रीय दबाव काम नहीं आता है। इसबार भी लगभग यही नजर आया।

ताजा सैन्य कार्रवाई की खास बात यह है कि भारतीय सेना ने सिर्फ पाकिस्तान स्थित आतंकी ठिकानों को ही निशाना बनाया है और वहां के किसी भी सरकारी बिल्डिंग या फिर पाकिस्तान के किसी नागरिक को निशाना नहीं बनाया गया है, जो भारत की शांतिप्रियता और आतंकवाद के खिलाफ शून्य सहिष्णुता की नीति को दर्शाता है। चूंकि भारत ने एक बार फिर से पाकिस्तान में मौजूद आतंकी ठिकानों पर जोरदार एयर और मिलिट्री स्ट्राइक की है, जिसे 'ऑपरेशन सिंदूर' का नाम दिया गया है। लिहाजा इसके ऐतिहासिक और सांस्कृतिक मायने भी स्पष्ट हैं।

बता दें कि भारतीय संस्कृति में सिंदूर का विशेष महत्व है और इसकी लाज रखने के लिए भारतीय शूरवीरों और उनकी पटरानियों ने या फिर आम आदमी ने भी एक बार नहीं बल्कि बार-बार निर्णायक कदम उठाए हैं। जिनका पूरा वृत्तांत हमारी लोकगाथाओं में दर्ज है। समझा जाता है कि हिंदूवादी भारत सरकार ने उनसे प्रेरणा ली और करारा कार्रवाई करने से भी नहीं हिचकिचाई। वैसे तो आजाद भारत में 1947 से शुरू हुए सांप्रदायिक दंगों और आतंकी या फियादीन हमलों में अपनी सुहाग यानी सिंदूर गंवाने वाली महिलाओं की संख्या अब लाखों में पहुंच चुकी है। इस लिहाज से बदला लेने की जो निर्णायक कार्रवाई अब शुरू की गई है, वह थमनी नहीं चाहिए। यही देशवासियों की अपेक्षा है।

बताया जाता है कि इस ताजातरीन 'ऑपरेशन सिंदूर' के तहत पाकिस्तान के 9 आतंकी ठिकानों पर जो स्ट्राइक की गई है, उसकी सबसे पहले जानकारी रक्षा मंत्रालय ने ही दी है, जिसमें बताया गया है कि भारतीय सेना ने पाकिस्तान स्थित आतंकी ठिकानों को ही निशाना बनाया है। इस क्रम में वहां के किसी भी सरकारी बिल्डिंग या फिर पाकिस्तान के किसी नागरिक को निशाना नहीं बनाया गया है। बल्कि भारतीय सेना ने स्पष्ट कहा है कि हमने पहले भी ऐलान किया था कि पहलगाम आतंकी हमले के जिम्मेदार लोगों को जवाबदेह ठहराया जाएगा और अब हम इस प्रतिबद्धता पर खरे उतर रहे हैं। इससे हम समझ सकते हैं कि यहां देर आयद, दुरुस्त आयद की कहावत एक बार फिर से चरितार्थ की गई है।

बकौल रक्षा मंत्रालय, "कुल मिलाकर, 9 स्थलों को निशाना बनाया गया है। हमारी कार्रवाई केंद्रित, मापी गई और प्रकृति में गैर-उग्र रही है। किसी भी पाकिस्तानी सैन्य सुविधा को निशाना नहीं बनाया गया है। भारत ने लक्ष्यों के चयन और निष्पादन के तरीके में काफी संयम दिखाया है। ये कदम पहलगाम में हुए बर्बर आतंकवादी हमले के मद्देनजर उठाए गए हैं जिसमें 25 भारतीयों और एक नेपाली नागरिक की हत्या कर दी गई थी। हम इस प्रतिबद्धता पर खरे उतर रहे हैं कि इस हमले के लिए जिम्मेदार लोगों को जवाबदेह ठहराया जाएगा।"

विश्वस्त अधिकारियों के अनुसार, भारतीय सेना द्वारा सफलतापूर्वक निशाना बनाए गए 9 ठिकानों में से चार पाकिस्तान में और पांच पाकिस्तान के कब्जे वाले कश्मीर में हैं। पाकिस्तान में स्थित ठिकानों में बहावलपुर, मुरीदके और सियालकोट शामिल

हैं। जहां पर मौजूद आतंकी शिविरों को निशाना बनाने के लिए विशेष सटीक हथियारों का इस्तेमाल किया गया। तीनों सेनाओं ने संयुक्त रूप से इस ऑपरेशन को अंजाम दिया। वहीं, रक्षा विशेषज्ञ प्रफुल बख्शी ने कहा है कि, "भारत ने ऐसा किया है। नौ जगहों को निशाना बनाया गया है। यह हवाई और तोपखाने से किया गया मिलाजुला हमला है। पाकिस्तान जवाबी कार्रवाई करेगा और वे भी कहानियां बनाना शुरू कर देंगे। हमें एक बात याद रखनी चाहिए- पीओके पर कब्जा करने के लिए हमला ही एकमात्र उपाय नहीं है, हमें धीरे-धीरे इस पर कब्जा करना शुरू करना होगा। पीओके हमारा है और हम इसे लेंगे।"

उधर, पाकिस्तान की सेना ने भी भारत की एयर स्ट्राइक को स्वीकार कर लिया है। उसने कहा है कि इस एयर स्ट्राइक में आठ लोगों की मौत हुई जबकि 33 लोग घायल हैं। पाकिस्तान के 6 ठिकानों पर 24 मिसाइल अटैक हुए हैं। हालांकि आपको स्पष्ट कर दें कि भारतीय सेना ने कहा है कि यह सभी ठिकाने आतंकियों के थे और उनको ही नुकसान पहुंचाया गया है। जहां बहावलपुर में जैश-ए-मोहम्मद के ठिकानों पर एयर स्ट्राइक की गई है। यहां पर जैश ए मोहम्मद का मुख्यालय है। वहीं मुरीदके में लश्कर के ठिकानों को निशाना बनाया गया है। वहीं, श्रीनगर एयरपोर्ट के डायरेक्टर ने बताया है कि आज एयरफील्ड को बंद कर दिया गया है। वहीं कोई भी सिविल फ्लाइट श्रीनगर एयरपोर्ट से ऑपरेट नहीं होगी।

वहीं, भारतीय सेना के ऑपरेशन सिंदूर शुरू होने के बाद बुधवार सुबह 11 बजे सीसीएस की बैठक बुलाई गई है। इस बैठक में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी शामिल हुए और पूरे ऑपरेशन की विस्तृत जानकारी ली। इससे पहले भारतीय सेना की एयर स्ट्राइक के बाद सेना अब सुबह 10 बजे प्रेस कॉन्फ्रेंस हुई। जिसमें बताया गया है कि भारतीय सेना ने ऑपरेशन सिंदूर शुरू कर दिया है। उधर, पाकिस्तान में 48 घंटे के लिए लाहौर और सियालकोट एयरपोर्ट को बंद कर दिया गया है। पाक ने माना है कि पांच ठिकानों पर हमले किए गए हैं। सूत्रों के अनुसार भारतीय सेना ने रात करीब 1:30 बजे एयर स्ट्राइक की है और 1:44 पर इसकी जानकारी देशवासियों को दी गई है। उधर, पाकिस्तान में मस्जिदों से नागरिकों को घरों के अंदर रहने की चेतावनी दी गई है। ऑपरेशन के बाद पाकिस्तान डरा हुआ है।

भारत की ओर से 'ऑपरेशन सिंदूर' के तहत पाक अधिकृत जम्मू कश्मीर में आतंकी शिविरों पर हमला करने के कुछ घंटों बाद पाकिस्तान ने संघर्ष विराम का उल्लंघन किया गया, जिसका सेना ने उचित जवाब दिया है। भारतीय सेना ने ट्वीट करते हुए लिखा, "पाकिस्तान ने पुंछ-राजौरी क्षेत्र के भीमबेर गली में तोपखाने से गोलीबारी करके एक बार फिर संघर्ष विराम समझौते का उल्लंघन किया है। भारतीय सेना उचित तरीके से जवाब दे रही है।" वहीं, रक्षा अधिकारी का बयान आया है कि "किसी भी स्थिति से निपटने के लिए भारत-पाकिस्तान सीमा पर सभी वायु रक्षा इकाइयों को सक्रिय कर दिया गया है।" जो सही और सटीक रणनीति का तकाजा है।

अब भारत ने भी अपने आक्रामक इरादे से दुनिया को बता दिया है कि वह किसी परमाणु बम से डरने वाला नहीं है और किसी भी भारतीय पर हमला करने और करवाने का अंजाम और भी ज्यादा बुरा हो सकता है। भारत की गुटनिरपेक्षता स्वावलंबी है और भारत के दुश्मनों को घुटनों के बल खड़ा करने में सक्षम भी। लोग चाहते हैं कि आतंकवाद और उसके सहयोगी हाथ-नक्सलवाद और अंडरवर्ल्ड का जल्द से जल्द रणनीतिपूर्वक खात्मा किया जाए, ताकि देशवासी निर्भीकता पूर्वक अपना जीवन यापन कर सकें।

उधर, संयुक्त राष्ट्र महासचिव एंटोनियो गुटेरेस ने भारत और पाकिस्तान से अधिकतम सैन्य संयम बरतने का आह्वान किया है। वहीं, रॉयटर्स की एक रिपोर्ट के अनुसार ऑपरेशन सिंदूर पर प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने कहा है कि, "यह शर्मनाक है। हमने ओवल के दरवाज़े से अंदर जाते वक्त इसके बारे में सुना। मुझे लगता है कि लोगों को अतीत के आधार पर पता था कि कुछ होने वाला है। वे लंबे समय से लड़ रहे हैं। अगर आप इसके बारे में सोचें तो वे कई दशकों और सदियों से लड़ रहे हैं। मुझे उम्मीद है कि यह बहुत जल्दी खत्म हो जाएगा।"

वहीं, ऑपरेशन सिंदूर पर अमेरिकी कांग्रेस सदस्य थानेदार ने कहा है कि, "युद्ध कभी समाधान नहीं होता, लेकिन जब इस तरह की आतंकवादी घटनाएं होती हैं, तो यह महत्वपूर्ण है कि आतंकवादियों को ढूंढा जाए, उन्हें दंडित किया जाए। यह महत्वपूर्ण है कि आतंकवाद का समर्थन करने वाला कोई भी देश देखे कि ऐसी कार्रवाइयों के परिणाम होंगे और अमेरिका को शांतिपूर्ण देशों, लोकतंत्रों के पीछे खड़ा होना चाहिए। अमेरिका और भारत को दुनिया भर में आतंकवाद के खिलाफ लड़ने के लिए सहयोग करना चाहिए।"

अमेरिका में भारतीय दूतावास ने कहा, "भारत की कार्रवाई केंद्रित और सटीक रही है। वे जिम्मेदार और प्रकृति में गैर-उग्रवादी थे। किसी भी पाकिस्तानी नागरिक, आर्थिक या सैन्य ठिकानों को निशाना नहीं बनाया गया। केवल आतंकी शिविरों को ही निशाना बनाया गया। हमलों के तुरंत बाद, एनएसए अजीत डोभाल ने अमेरिकी एनएसए और विदेश मंत्री मार्को रुबियो से बात की और उन्हें की गई कार्रवाई के बारे में जानकारी दी।"

वहीं, एएनआई ने बताया कि, "ऑपरेशन सिंदूर के तहत पाकिस्तान और पाकिस्तान के कब्जे वाले कश्मीर में कई ठिकानों पर हमले भारतीय सेना और वायु सेना द्वारा सटीक हमला करने वाले हथियारों का इस्तेमाल करके एक संयुक्त अभियान था।"

वरिष्ठ पत्रकार व राजनीतिक विश्लेषक

'सिंदूर' की जय! भारतीय रणबांकुरों की वीरता से पाक पस्त

डॉ घनश्याम बादल

22 अप्रैल को पहलगाम में आतंकवादियों द्वारा बहाए गए खून और मारे गए पर्यटकों के सगे संबंधियों के आंसुओं का जवाब सात मई प्रातः 1:05 से 1:30 के बीच पाकिस्तान स्थित नौ आतंकवादी ठिकानों को जिस तरह भारतीय सेनाओं ने ध्वस्त करके दिया वह भारतीय सेवा के पराक्रम का एक अद्भुत उदाहरण बनकर सामने आया है। इससे पहले भी भारतीय सेना ने उड़ी में हुए हमले का जवाब बालाकोट पर सर्जिकल स्ट्राइक करके दिया था तब ऐसा लगा था कि वहां आतंकवाद की कमर टूट चुकी है लेकिन जब उसे वहां से ऑक्सीजन, संरक्षण एवं संसाधन मिलते गए तो वह किसी दैत्य की तरह एक बार फिर से खड़ा हो गया मैं केवल खड़ा हो गया अपितु भेड़िए की तरह गुर्राने लगा, उसे अपनी ताकत का कुछ ज्यादा ही घमंड हो गया, और भारत की संपन्नता, ताकत, समृद्धि और विश्व भर में उसके रसूख और लगातार प्रगति के रास्ते पर बढ़ने से डाह का मारा आतंकवाद पहलगाम में एक बार फिर 26 लोगों की जान लेकर गया । जब ये निर्दोष लोग मारे गए सभी तय हो गया था कि आतंकवाद को मिट्टी में मिलाने वाला ऑपरेशन जरूरी है । उसी दिन प्रधानमंत्री मोदी ने दो लाइन के वक्तव्य में साफ कर दिया था कि धरती के आखिरी छोर तक भी उसे नहीं छोड़ेंगे और यह घृणित कृत्य करने वाले तथा उनके आकाओं को मिट्टी में मिलाकर दम लेंगे। उन्हें ऐसी सजा मिलेगी जिसकी भी कल्पना भी नहीं कर पाएंगे। तब इस वक्तव्य को एक बार बोला पान समझ गया था खासतौर पर मोदी एवं उनकी सरकार के आलोचकों का मानना था कि यह एक प्रकार का इज्जत फेस सेविंग स्टेटमेंट है और जल्दी ही लोग इसको भूल जाएंगे इस पर भी जब भी बजाएं सर्व दलीय बैठक में शामिल होने के बिहार गए और वहां से उन्होंने तब कड़ी आलोचना की गई और कहा गया कि यह केवल चुनाव के मद्दे नज़र किया गया ड्रामा है।

लेकिन मोदी को जानने एवं समझने वाले लोग जानते हैं कि वह भले ही राजनीति करते हुए अतिशयोक्ति भरे भाषण देते हों मंचों पर दहाड़ते हों और विपक्षियों पर तीखे प्रहार करते हों यानी प्रधानमंत्री रहते हुए भी खुलकर खुलकर राजनीति करते हैं लेकिन जब बात देश की आती है तब वह ना चूकते हैं और न टूटते हैं इसका प्रमाण पिछले दो सर्जिकल स्ट्राइक एवं एयर स्ट्राइक से मिल भी चुका था मगर उनके इस वक्तव्य को पाकिस्तान ने हल्के से लिया ।

जब उन्होंने पाकिस्तान पर सिंधु नदी संधि स्थगित की , व्यापार के सारे रास्ते बंद कर दिए, हवाई रास्ते बंद करके एवं वहां के दूतावास में रक्षा विशेषज्ञ सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को भारत से विदा किए और बाघा बॉर्डर एवं दूसरी सीमाओं को सील करने के कदम उठाए तब उसकी बौखलाहट बढ़ गई और वहां के आतंकी सरगने तथा सेना के जनरल और शाहबाज शरीफ के प्यादे मंत्री परमाणु बम की धमकियां देने लगे बिना यह सोचे हुए कि यदि उन्होंने भूले से भी परमाणु बम का उपयोग कर लिया तो फिर दुनिया से उसका अस्तित्व ही खत्म हो जाएगा।

मोदी सरकार यहीं पर नहीं रुकी और उसने ताबड़तोड़ एक के बाद एक उच्च स्तरीय बैठकें की और 7 मई को युद्ध की तैयारी के लिए देशभर के 300 जिलों में युद्ध की मॉक ड्रिल एवं ब्लैक आउट के अभ्यास के भी आदेश दे दिए तब शायद पाकिस्तान के फौजी और सरकार यह सोच रहे होंगे कि अभी तो हमले की कोई संभावना ही नहीं बनती । लेकिन 'मोदी है तो मुमकिन है' के नारे को सिद्ध करते हुए 6 मई की रात और 7 मई की प्रातः पूर्व की बेला में 1:05 से 1:30 के बीच केवल 25 मिनट की स्ट्राइक में भारतीय जांबाजों ने वहां के आतंकी ठिकानों पर जो तांडव मचाया वह उसे वर्षों तक याद रहेगा।

बंदूकों की गोली का उत्तर सद्भाव नहीं होता !

कवि हरिओम पंवार ने अपनी एक कविता में क्या खूब कहा है कि- '...नागफनी पर बेला चंपा कभी नहीं खिलने वाले।पत्थर की आंखों में आंसू कभी नहीं मिलने वाले। ।बंदूकों की गोली का उत्तर सद्भाव नहीं होता।हत्यारों के लिए अहिंसा का प्रस्ताव नहीं होता। ।कोई विषधर कभी शांति के बीज नहीं बो सकता है। और भेड़िया शाकाहारी कभी नहीं हो सकता है। ।'पंवार जी यह कविता पाकिस्तान पर बिलकुल सटीक बैठती है, क्यों कि पाकिस्तान वह नागफनी(आतंकवाद) है, जिसको बार-बार समझाने पर भी उसमें कोई बदलाव नहीं आता है। हाल ही में भारतीय सेना ने पाकिस्तान पर एयर स्ट्राइक कर उसे यह संदेश देने का काम किया है कि 'हत्यारों के लिए अहिंसा का कोई प्रस्ताव नहीं होता है।' पाठकों को बताता चलूं कि 22 अप्रैल 2025 को जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में आतंकी हमले के मात्र दो सप्ताह के भीतर भारतीय सेना ने 'ऑपरेशन सिंदूर' के तहत पाकिस्तान और पीओके के 9 आतंकी ठिकानों पर एयर स्ट्राइक की, हम सभी को भारत की इस सख्त कार्रवाई पर गर्व है।पाठक जानते हैं कि ये हमले मंगलवार- बुधवार की दरम्यानी रात(6-7 मई 2025) को बहावलपुर, मुरीदके, बाघ, कोटली और मुजफ्फराबाद में किए गए। पहले भारत की पाकिस्तान पर वाटर स्ट्राइक, बाद में वीजा रद्द और अब 'ऑपरेशन सिंदूर', यह सब दर्शाता है कि भारत किसी भी हाल और परिस्थितियों में आतंकवाद और आतंकियों को नेस्तनाबूत करके छोड़ेगा। भारत की आतंकवाद के प्रति नीति हमेशा हमेशा से 'जीरो टोलरेंस' यानी कि 'शून्य सहनशीलता' की रही है। पाठक जानते होंगे कि बैसरन घाटी जिसे 'मिनी स्विटज़रलैंड' के नाम से भी जाना जाता है, 22 अप्रैल, 2025 की दोपहर को अचानक गोलियों की तड़तड़ाहट से गूंज उठी थी और इस दौरान कुछ आतंकियों ने मिलकर घाटी की खूबसूरती को पर्यटकों के खून से रंग दिया था। इस कायरतापूर्ण आतंकी हमले में जहां 26 लोगों की मौत हो गई थी वहीं, 16 लोग घायल भी हुए थे। भारत ने इसी का बदला लेते हुए आतंकवाद और आतंकियों के खिलाफ 'ऑपरेशन सिंदूर' को अंजाम दिया है और अब पाकिस्तान भारत की इस कार्रवाई के बाद तिलमिला रहा है। भारतीय सेना ने रात करीब दो बजे 'ऑपरेशन सिंदूर शुरू किया, और पाकिस्तान और पाकिस्तान के कब्जे वाले कश्मीर(पीओके) में आतंकी ठिकानों को निशाना बनाया। यहां पाठकों को बताता चलूं कि पहलगाम में आतंकी हमले के बाद प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने अपराधियों को न्याय के कटघरे में लाने की कसम खाई थी और उन्होंने यह बात कही थी कि उनका 'दुनिया के अंत तक' पीछा किया जाएगा। यहां यह भी उल्लेखनीय है कि 29 अप्रैल, 2025 को सुरक्षा समीक्षा बैठक में प्रधानमंत्री मोदी ने सशस्त्र बलों को 'ऑपरेशनल फ्रीडम' प्रदान करते हुए यह बात कही थी कि 'थल सेना, नौसेना और वायुसेना को आतंकवाद के खिलाफ कार्रवाई के लिए किसी भी प्रकार की बाधा नहीं होगी। भारत आतंकवाद के खिलाफ जीरो टॉलरेंस की नीति पर अडिग है और सेनाएं इस खतरे को जड़ से उखाड़ फेंकने के लिए स्वतंत्र हैं।'

बहरहाल, पाठकों को बताता चलूं कि भारतीय सेना ने एक पोस्ट में लिखा थाः 'प्रहाराय स्नहिताः, जब प्रशिक्षिताः।' यानी कि 'हमला करने के लिए तैयार, जीतने के लिए प्रशिक्षित।' यहां यह उल्लेखनीय है कि भारतीय सेना द्वारा एयर स्ट्राइक के बाद सीमा पार अफरा-तफरी का माहौल बन गया, लेकिन इस ऑपरेशन के दौरान भारतीय सेना द्वारा पाकिस्तान के सैन्य ठिकानों को टारगेट नहीं किया गया। वास्तव में इस संदर्भ में भारतीय सेना ने संयम का परिचय दिया।वास्तव में भारत इस कार्रवाई का असल मकसद आंतक को खत्म करना है, न कि पड़ोसी मुल्क के साथ संघर्ष को बचाना। गौरतलब है कि पहलगाम में हुए आतंकी हमले की जिम्मेदारी लश्कर-ए-तैयबा से जुड़े एक संगठन 'द रेसिस्टेंस फ्रंट'(टीआरएफ) ने ली थी और भारत की एयर स्ट्राइक से लश्कर का मुख्यालय मिट्टी में मिल गया, तथा जैश के ठिकाने तबाह हो गए। दरअसल, भारतीय वायुसेना के हमलों में जैश-ए-मोहम्मद के 4, लश्कर-ए-तैयबा के 3 और हिज्बुल मुजाहिदीन के 2 आतंकी ठिकानों को निशाना बनाया गया। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक पाकिस्तान के बहावलपुर से लेकर पीओके के कोटली तक आतंकियों के ठिकाने ध्वस्त कर दिए गए हैं।सच तो यह है कि भारत ने अपने 'ऑपरेशन सिंदूर' के लिए पाकिस्तान के 100 किलोमीटर के दायरे में आतंकियों के 9 ठिकानों पर हमला कर उन्हें तबाह कर दिया। वास्तव में सबसे बड़ा हमला बहावलपुर में किया गया, जो अंतरराष्ट्रीय सीमा से करीब 100 किमी अंदर स्थित है और यहां पर जैश-ए-मोहम्मद का मुख्यालय है।सांबा सेक्टर की सीमा से 30 किमी अंदर मुरीदके में भी लश्कर-ए-तैयबा का कैंप था,उसे भी भारतीय सेना द्वारा जमीन में मिला दिया गया है। मीडिया रिपोर्ट्स बतातीं हैं कि तीसरा हमला गुलपुर में किया गया।पीओके के तंगधार सेक्टर में 30 किमी के अंदर सवाई जहां लश्कर का कैंप था, उसे भी निशाना बनाया गया है।यह कैंप 20 अक्टूबर 2024 को सोनमर्ग, 24 अक्टूबर 2024 को गुलमर्ग और 22 अप्रैल 2025 को पहलगाम हमले के लिए जिम्मेदार है। भारतीय सेना ने बिलाल कैंप(जैश-ए-मोहम्मद का लॉन्चपैड), लश्कर कोटली कैंप (लश्कर का बमबारी प्रशिक्षण केंद्र),बरनाला और सरजाल कैंप(जैश का कैंप) और महमूना कैंप (हिज्बुल मुजाहिदीन का ट्रेनिंग सेंटर) को निशाना बनाया और आतंकियों और पाकिस्तान को 'छठी का दूध' याद दिला दिया। पाकिस्तान को यह याद रखना चाहिए कि भारत ने अपनी एयर स्ट्राइक आतंकवाद और आतंकियों पर की है और भारत का मकसद हमेशा-हमेशा से शांति, सद्भाव, अहिंसा, भाईचारे और इंसानियत के पाठ पढ़ाने का रहा है, (युद्ध का कभी नहीं), ताकि आने वाली नस्लों को जीने के लिए एक बेहतर जगह मिल सके।अंत में बशीर बद्र जी के शब्दों में पाकिस्तान को यही कहूंगा कि-'सात संदूक़ों में भर कर दफ़्न कर दो नफ़रतें।आज इंसाँ को मोहब्बत की ज़रूरत है बहुत।।'

सुनील कुमार महला, फ्रीलांस राइटर, कालमिस्ट व युवा साहित्यकार, उत्तराखंड।

हवाई दुर्घटनाओं की पुरानी तस्वीरें साझा कर दुष्प्रचार कर रहे पाकिस्तान समर्थक, PIB ने किया सतर्क

भारत ने बुधवार को कहा कि पाकिस्तान ने दुष्प्रचार अभियान छेड़ रखा है। प्रेस सूचना ब्यूरो (पीआइबी) की फैक्ट चेकिंग यूनिट के पोस्ट में कहा गया है कि पाकिस्तान समर्थक इंटरनेट मीडिया हैंडल भारतीय वायुसेना के विमानों की दुर्घटनाओं की पुरानी तस्वीरें साझा कर दावा कर रहे हैं कि बुधवार को ऑपरेशन सिंदूर के दौरान पाकिस्तान ने इन विमानों को मार गिराया था।

भारत ने बुधवार को कहा कि पाकिस्तान ने दुष्प्रचार अभियान छेड़ रखा है। प्रेस सूचना ब्यूरो (पीआइबी) की फैक्ट चेकिंग यूनिट के पोस्ट में कहा गया है कि पाकिस्तान समर्थक इंटरनेट मीडिया हैंडल भारतीय वायुसेना के विमानों की दुर्घटनाओं की पुरानी तस्वीरें साझा कर दावा कर रहे हैं कि बुधवार को ऑपरेशन सिंदूर के दौरान पाकिस्तान ने इन विमानों को मार गिराया था। पीआइबी फैक्ट चेक ने कहा, असत्यापित जानकारी साझा करने से बचें और सटीक जानकारी के लिए केवल भारत सरकार के आधिकारिक स्त्रोतों पर ही भरोसा करें। लड़ाकू विमानों के बारे में पाकिस्तान समर्थक हैंडलों द्वारा इंटरनेट मीडिया पर किए गए वीडियो का हवाला देते हुए कहा गया है, साझा किया जा रहा वीडियो फरवरी का है। इसमें मध्यप्रदेश के शिवपुरी के पास वायुसेना के मिराज 2000 विमान के दुर्घटनाग्रस्त होने की तस्वीर दिखाई गई है। यह दुर्घटना नियमित प्रशिक्षण के दौरान हुई थी। ऑपरेशन सिंदूर के तहत भारत के निर्णायक हमले के बाद, पाकिस्तान ने दुष्प्रचार अभियान शुरू कर दिया है। यह झूठ के जरिये ध्यान भटकाने का हताश प्रयास है। पाकिस्तान समर्थक इंटरनेट मीडिया हैंडल और यहां तक कि राजनीतिक हस्तियां जानबूझकर फर्जी खबरें फैला रही हैं।

सैन्य जीत और वीरतापूर्ण प्रतिशोध की कहानियां गढ़ रही हैं। वह इतनी अधिक झूठी खबरें फैलाना चाहते हैं कि तथ्य और कल्पना में अंतर करना मुश्किल हो जाए। यह सुनियोजित, समन्वित अभियान है जो जनता को गुमराह करने के लिए चलाया जा रहा है।

पाकिस्तानी समर्थकों के एक अन्य पोस्ट में झूठा दावा किया गया कि पाकिस्तानी सेना ने बहावलपुर के पास भारतीय राफेल जेट को मार गिराया है। पीआइबी फैक्ट चेक टीम ने पाया कि यह तस्वीर 2021 में पंजाब के मोगा में हुए मिग-21 दुर्घटना की थी।

पाकिस्तान के रक्षा मंत्री ख्वाजा आसिफ ने भी निराधार दावा किया था कि हालिया सैन्य हमलों के दौरान भारतीय सैनिकों को पकड़ लिया गया था, हालांकि बाद में इस बयान का खंडन किया गया और बयान वापस ले लिया गया।

एएनआइ के अनुसार ऑपरेशन सिंदूर' से आतंकियों को प्रश्रय को लेकर पोल खुलने के बाद पाकिस्तान इंटरनेट मीडिया पर यह झूठा दावा भी कर रहा है कि उसने 'ऑपरेशन सिंदूर' के जवाब में एक भारतीय ब्रिगेड मुख्यालय को नष्ट कर दिया है। पीआइबी फैक्ट चेक यूनिट ने स्पष्ट किया है कि यह जानकारी भी फर्जी है।

सिंदूर तो सिर्फ झांकी है मेहंदी और हल्दी बाकी है

सिर्फ सिंदूर से क्या होगा,
आग अभी सीने में बाकी है।
खून में जो लावा बहता है,
उसमें हल्दी की तासीर बाकी है।

फिर से हवाओं को रुख देना है,
इंकलाब की आंधी बाकी है।
धधकते शोलों में रंग भरना है,
अभी मेहंदी की सरगर्मी बाकी है।

रास्तों पर बिछी हैं दीवारें,
पर हमारे इरादों की ऊँचाई बाकी है।
सिर्फ झांकी दिखी है दुश्मन को,
हमारी असली अंगड़ाई बाकी है।

सिंदूर से कह दो धीरज रखे,
अभी हल्दी का रंग बाकी है।
हम जिंदा हैं तो यह दुनिया है,
हमारे खून में बगावत की रवानी बाकी है।

- डॉ सत्यवान सौरभ

मुंहतोड़ जवाब : आगाज अच्छा, बस अंजाम सदियों याद रहे..

सुशील कुमार 'नवीन'

पहलगाम हादसा हर किसी को झकझोरने वाला रहा है। आतंकियों द्वारा केवल हिंदुओं को टारगेट करना भारत के प्रत्येक हिन्दू की अस्मिता पर सीधी चोट से कम नहीं था। बांग्लादेश के बाद इस तरह से हिंदुओं को निशाना बनाना हर किसी को अखर रहा था। सरकार से भी पहले ही दिन से इस पर कड़ा एक्शन लेने की मांग लगातार उठाई गई। देशभर में प्रदर्शन भी हुए। सत्ता का गलियारा भी एकजुट दिखा। केंद्र सरकार भी इस मामले में शुरुआत से ही अपने रुख को स्पष्ट किए हुए थी। मंगलवार रात को आतंकियों के ठिकाने ध्वस्त करने की कार्रवाई ने गुस्साए कलेजों को ठंडक देने का काम किया है। जवाबी कार्रवाई का आगाज अच्छा हुआ है, उम्मीद है अंजाम भी उम्मीदों से परे होगा। कुछ ऐसा हो कि सदियां याद रखें।

भारत शुरुआत से ही शांतिप्रिय देश रहा है। प्राचीन काल से ही अहिंसा परमो धर्म : को ध्येय वाक्य मानने वाले भारत को अहिंसा का पुजारी भी कहा जाता है। अहिंसा को हमने अपने जीवन में महत्वपूर्ण मूल्य के रूप में स्वीकार किया हुआ है। इतिहास गवाह है कि बल शक्ति ने सदैव अपने बल का दुरुपयोग कर अनैतिकता का बढ़ावा दिया है। पर भारत ने कभी भी किसी को दबाने या उस पर कब्जा करने की नीति नहीं रखी। प्राचीन भारत से आधुनिक भारत तक जब-जब भारत की अखंडता को प्रभावित करने का प्रयास किया है, भारत ने सदैव वसुधैवकुटुम्भकम् को आत्मसात करते हुए प्रत्येक मामले को शांति और सौहार्द के साथ निपटाने का प्रयास किया है। कहा भी जाता है कि महान व्यक्ति और धार्मिक परंपराएं सदा अहिंसा का पालन करते हैं। हां कई बार अहिंसा को कुछ लोग अलग अर्थ निकाल कर भारत को नुकसान पहुंचाने का प्रयास करते हैं। उनको जवाब ऐसे ही देना जरूरी हो जाता है।

अहिंसा का सीधा सा भाव है दूसरों को शारीरिक या मानसिक नुकसान न पहुंचाना। हिन्दू धर्म में अहिंसा को जीवन का एक अनिवार्य हिस्सा माना गया है। हम तो सुबह उठते ही सबसे पहले प्रार्थना करते हैं कि धर्म की जय हो, अधर्म का नाश हो। प्राणियों में सद्भावना हो विश्व का कल्याण हो। हर धार्मिक कार्यक्रम, स्कूल प्रार्थना समय इसे दोहराकर अपने मन को संबल प्रदान करते हैं। हम अपने कल्याण की बात न कर विश्व के कल्याण की बात कर अपनी प्राचीन संस्कृति की अवधारणा को सबके सामने प्रस्तुत करते हैं। पर कई बार हमारी इसी भावना को कुछ लोग हमारी कमजोरी समझ लेते हैं। उनके लिए हम अहिंसक न होकर हिंसा से घबराने वाले दब्बू किस्म के व्यक्तित्व हो जाते हैं। उन्हीं के लिए अहिंसा परमो धर्मः श्लोक के अगले हिस्से को याद कराना पड़ता है। इस पूरे श्लोक को फिर हमें इस तरह से दोहराना पड़ता है कि

अहिंसा परमो धर्मः, धर्म हिंसा तथैव च
धर्म एव हतो हन्ति धर्मो रक्षति रक्षितः।

अर्थ है कि अहिंसा परम धर्म है, लेकिन धर्म की रक्षा के लिए हिंसा भी उचित है। जो धर्म का नाश करता है, धर्म उसका नाश करता है, और जो धर्म की रक्षा करता है, धर्म उसकी रक्षा करता है।

पुराने समय से ही राजा का पहला और सबसे महत्वपूर्ण धर्म प्रजा की सुरक्षा और संरक्षण माना गया है। इसके तहत राजा को प्रजा के लिए आंतरिक कुचेष्टाओं के साथ-साथ किसी भी प्रकार की ऐसी गतिविधि जिससे देश की अस्मिता को नुकसान पहुंचे, उससे खुले रूप में निर्भीक होकर अस्त्र और शस्त्र से मुकाबला करें। युद्ध की नैतिकता पर भी चर्चाएं लगातार हुई है। वैदिक ग्रंथों और पौराणिक कथाओं में युद्ध के सिद्धांतों के बारे में बहुत कुछ लिखा गया हैI परिस्थितियों को ध्यान में रखकर उचित युद्ध को आवश्यक माना गया है। ऐसा नहीं है कि हम अगले को अवसर नहीं देते। सनातन संस्कृति अहिंसा और संघर्ष के शांतिपूर्ण समाधान को प्रमुखता देती है। सशस्त्र बल का सहारा लेने से पहले शांतिपूर्ण समाधान हमारी प्राचीन सोच रही है। लेकिन इसे कोई कमजोरी समझे, यह उसकी सबसे बड़ी भूल है। हमारे आराध्य प्रभु श्रीराम है। रावण को खूब समझाया कि वो अपनी भूल स्वीकार कर शरण में आ जाए। नहीं माना तो उसके साथ जो हुआ, उससे हम सब परिचित हैं। कौरव अधर्म पर अड़े रहे तो स्वयं विष्णु अवतार कृष्ण को धर्म की लड़ाई में अग्रणी होना पड़ा।

रामायण, महाभारत, और मनुस्मृति जैसे कई प्राचीन भारतीय ग्रंथों में युद्ध के बारे में कई नैतिक उपदेशों का भी hउल्लेख है। मनुस्मृति में कहा गया है कि

अनित्यो विजयो यस्माद् दृश्यते युध्यमानयोः।
पराजयश्च संग्रामे तस्माद् युद्धं विवर्जयेत ।।

इस श्लोक के अनुसार युद्ध में जय तथा पराजय अनिश्चित होती है। जहां तक हो सके युद्ध से बचने का प्रयास करना चाहिये। इसी बात को आगे बढ़ाते हुए यह भी कहा गया है कि जब कोई उपाय शेष न रहे तो -

साम्ना दानेन भेदेन समस्तैरथवा पृथक्।
विजेतुः प्रयतेतारीन्न युद्धेन कदाचन।

इस श्लोक के अनुसार जीत की इच्छा करने वाले राजा को साम, दाम तथा भेद की रणनीति का सहारा लेना चाहिये। किसी भी विधि से शत्रु को अपने अनुकूल बनाने के प्रयास में असफल होने पर युद्ध का विचार करना चाहिये। पहलगाम हादसे के जवाब में भारत द्वारा पड़ोसी को सबक सिखाने की शुरुआत कर दी गई है। भारत ने शुरुआत नहीं की है। जब कोई घर में घुसकर हमला करेगा तो जवाब तो देना ही होगा। चर्चित हरियाणवी गायक कलाकार मासूम शर्मा का खटोला गीत आज के समय में सही बैठता है।

तख्ती-तख्ती पोत दी जागी,
सबकी गोभी खोद दी जागी।
पिछले गेड़े छोड़ दिए थे,
इबके सीधी मौत दी जागी।

विश्व रेड क्रॉस दिवस 8 मई पर विशेष

पीड़ित मानवता के लिए 'फरिश्ता' है रेड क्रॉस

प्रदीप कुमार वर्मा

विश्व के किसी भी कोने में युद्ध हो या फिर विश्व युद्ध, सीरिया में आईएसआईएस द्वारा मचाई गई तबाही, या फिर वर्तमान में रूस और यूक्रेन के बीच चल रहा युद्ध, हर मुश्किल घड़ी में रेड क्रॉस के वालंटियर पीड़ितों के लिए फरिश्ता बनकर उन तक हर संभव मदद पहुंचाते हैं। रेड क्रॉस एक ऐसी संस्था है जो आपदाओं और आपातकाल और अन्य संकटों में पीड़ितों की सहायता करने के लिए समर्पित है। यह एक ऐसा संगठन है जो युद्ध और आपदाओं के समय घायलों और बीमारों की देखभाल भी करता है। रेड क्रॉस द्वारा प्रदान की जाने वाली सहायता के बारे में जागरूकता बढ़ाने और लोगों को दूसरे की मदद करने के लिए प्रेरित करने के लिए प्रति वर्ष 8 मई को विश्व रेडक्रास दिवस मनाया जाता है। हमारे भारत देश में रेड क्रॉस की 700 से अधिक शाखाएं हैं।

रेड क्रॉस की स्थापना आज से करीब 162 साल पहले वर्ष 1863 में हुई थी। आज 8 करोड़ से अधिक लोग इसके वॉलेंटीयर हैं। यही नहीं दुनिया के लगभग हर देश में इसकी शाखा है। रेड क्रॉस की स्थापना करने वाले हेनरी ड्यूनेंट का जन्म 8 मई 1828 में जेनेवा स्विट्जरलैंड में हुआ था। इसलिए उनके जन्मदिन के मौके पर 8 मई को रेड क्रॉस दिवस के रूप में मनाते हैं। रेड क्रॉस की स्थापना और इसके शानदार कार्यों के लिए हेनरी को नोबेल शांति पुरस्कार से नवाजा गया था। वैश्वीकरण के इस दौर में तेल और परमाणु हथियारों पर प्रभुत्व स्थापित करने के लिए युद्ध की बढ़ती आशंका और समय-समय पर भूकंप,सुनामी, तूफान और इसी तरह की अन्य अप्रत्याशित प्राकृतिक आपदाओं में मुश्किल हालात से निपटने में रेडक्रॉस जैसी संस्था का महत्व और अधिक बढ़ गया है।

भारत में रेड क्रॉस सोसायटी की शुरुआत 1920 में हुई थी। यह संगठन भारत में आपदा प्रबंधन, स्वास्थ्य सेवाओं में सुधार, और सामुदायिक स्वास्थ्य जागरूकता बढ़ाने के कार्य में सक्रिय है। भारतीय रेड क्रॉस सोसायटी ने कई राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय आपदाओं में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है और निरंतर मानवता की सेवा में अग्रणी रही है। आजादी प्राप्त होने के बाद भारत ने वर्ष 1949 में जिनेवा कन्वेंशन में भाग लिया इसमें रेड क्रॉस और रेड क्रिसेंट के चिन्ह को सेना के मेडिकल सर्विस में उपयोग करने पर के लिए हस्ताक्षर किये गए। भारत में 10 वर्षों के पश्चात जिनेवा कन्वेंशन के कुछ नियमों को भारतीय संसद ने जिनेवा कन्वेंशन एक्ट ऑफ़ 1960 के द्वारा लागू कर दिया।

रेड क्रॉस प्राकृतिक आपदाओं, आर्म्ड कॉनफ्लिक्ट और चिकित्सा देखभाल, आश्रय और भोजन सहित अन्य संकटों से प्रभावित लोगों को तत्काल सहायता प्रदान करता है। रेड क्रॉस आम लोगों और समुदायों को फर्स्ट एड ट्रेनिंग देता है, जिससे उन्हें आपातकालीन परिस्थितियों में लोगों का जीवन बचाया जा सके। रेड क्रॉस ब्लड और ब्लड प्रोडक्ट्स को एकत्रित करता है, उनका परीक्षण और वितरण करता है, जिससे अनगिनत लोगों की जान बचाने में मदद मिलती है। रेड क्रॉस वैक्सीनेशन कार्यक्रम, बीमारियों की रोकथाम और स्वास्थ्य शिक्षा सहित स्वास्थ्य सेवाएं प्रदान करता है। कोरोना काल में रोगियों की देखभाल के साथ-साथ कोविड टीकाकरण में भी रेड क्रॉस ने सराहनीय भूमिका निभाई थी।

इसके साथ ही कोरोना काल में रेड क्रॉस ने लोगों में जागरूकता के साथ-साथ लोगों को भोजन तथा मेडिकल किट भी उपलब्ध कराई थी। रेड क्रॉस शरणार्थियों और शरण चाहने वालों को चिकित्सा देखभाल और मनोवैज्ञानिक सहायता सहित मानवीय सहायता प्रदान करता है।

यह संस्था लोगों को रक्तदान की प्रेरणा देती है, ताकि लोग अधिक से अधिक संख्या में रक्तदान करें। यह संस्था स्वयं शिविर लगाकर हर साल बड़ी मात्रा में रक्त एकत्र करती है, ताकि जरूरत के समय किसी प्रकार की कमी न रहे। वर्तमान समय और परिस्थितियों में रेडक्रॉस की भूमिका केवल युद्ध के दौरान बीमार और घायल सैनिकों, युद्ध करने वालों और युद्धबंदियों को सुरक्षित स्थान पर पहुँचाना और उचित उपचार की सुविधाएँ उपलब्ध कराना ही नहीं रह गया है।

अब उसके दायित्व का दायरा और अधिक बढ़ गया है। पिछले कुछ सालों के दौरान आई भयंकर बाढ़ और सुनामी लहरों के तांडव तथा अमेरिका में कैटरीना तूफान के दौरान और उसके बाद अंतरराष्ट्रीय रेडक्रॉस ने जो भूमिका निभाई थी। वर्तमान समय में भारत में भारतीय रेडक्रॉस सोसायटी देश के विभिन्न भागों में यह संस्था बहुत ही सफलता के साथ कार्य कर रही है। चिकित्सा एवं समाज सेवा तथा जन जागरूकता के क्षेत्र में रेड क्रॉस के कार्य सराहनीय है। यही नहीं, इसमें शामिल होने वाले कर्मठ एवं मानवता के लिए समर्पित स्वयंसेवकों की संख्या भी निरंतर बढ़ती जा रही है। पीड़ित मानवता के लिए रेड क्रॉस के सरहनीय कार्यों को देखते हुए रेड क्रॉस को मानवता के लिए फरिश्ता माना जाता है।

प्रदीप कुमार वर्मा

सैनिकों का सम्मान: समर्पण और बलिदान की पहचान

हमारे सैनिक, जो सीमाओं पर अपने प्राणों की बाजी लगाते हैं, हमारे असली नायक हैं। युद्ध की आशंका में लौटते सैनिकों को ट्रेन में सीट दें, सड़क पर मिलें तो अपने वाहन से आगे छोड़ें, और होटलों में निशुल्क ठहरने की सुविधा दें। उनका सम्मान हमारा कर्तव्य है, न कि महज़ औपचारिकता। जहाँ भी मिले, सलाम करें – देश में इनसे बढ़कर कुछ नहीं। देवताओं के लिए भंडारे लगाते हो तो इन सैनिकों को भी माँ जैसा सम्मान दो। कहना कि ये तो सरकारी तनख्वाह लेते हैं, एक अपराध है। तनख्वाह सभी कर्मचारी लेते हैं, लेकिन ये अपने जीवन की बाजी लगाते हैं, अपने घर-परिवार से दूर रहते हैं, और हमारी सुरक्षा के लिए हर कठिनाई सहते हैं। आइए, इस परंपरा को मजबूत करें और सैनिकों का मान बढ़ाएं। जय हिंद!

डॉ. सत्यवान सौरभ

हमारे देश के सैनिक, जो सीमाओं पर अपने प्राणों की आहुति देकर हमारी रक्षा करते हैं, केवल वर्दी का बोझ नहीं उठाते, बल्कि वे हमारे चैन और स्वतंत्रता की सुरक्षा का भी भार संभालते हैं। ऐसे वीरों का सम्मान हमारा नैतिक और सामाजिक कर्तव्य है। यह केवल औपचारिकता नहीं, बल्कि हमारी संस्कृति, परंपरा और राष्ट्रीय चरित्र का मूल आधार होना चाहिए।

सैनिकों का बलिदान: एक अविस्मरणीय सेवा

सीमाओं पर खड़े सैनिक केवल गोलीबारी और बर्फीली तूफानों का सामना नहीं करते, वे उन अदृश्य दुश्मनों से भी लड़ते हैं, जो हमारे चैन और सुरक्षा के पीछे छिपे हैं। वे अपनी जान जोखिम में डालकर आतंकवाद, घुसपैठ और प्राकृतिक आपदाओं से हमें सुरक्षित रखते हैं। इनका जीवन एक स्थायी संघर्ष है – न दिन का पता, न रात का चैन।

कल्पना कीजिए, जब हम त्योहारों पर अपनों के बीच हँसते-गाते होते हैं, तब वे बर्फ से ढके पहाड़ों पर, तपती रेत में या समुद्र की उफनती लहरों से जूझते हैं। वे अपनी जान हथेली पर रखकर देश की अखंडता और स्वतंत्रता की रक्षा करते हैं।

यात्रा में सैनिकों का सम्मान

अगर किसी ट्रेन में बिना रिजर्वेशन के खड़े सैनिक नजर आएं, तो अपने सीट का छोटा सा त्याग कर उन्हें बैठने का सम्मान दें। यह न केवल उनके प्रति सम्मान है, बल्कि उनके साहस और बलिदान की कद्र है। वे वे लोग हैं जो सीमा पर खड़े रहकर हमें चैन की नींद सुलाते हैं। यह छोटी सी पहल उनके

साहस का सम्मान है।

सड़क पर दिखें तो मदद करें

अगर सड़क पर सैनिक अपने गंतव्य की ओर जाते दिखें, तो अपने वाहन में उन्हें अगले मुकाम तक छोड़ने में संकोच न करें। यह न केवल उनके प्रति सम्मान है, बल्कि हमारी राष्ट्रीय जिम्मेदारी भी है।

रहने और खाने की सुविधा

होटलों, ढाबों और रेस्तरां में अगर कोई सैनिक ठहरने आए तो उसे निशुल्क रहने और खाने की सुविधा दी जानी चाहिए। यह एक छोटा सा योगदान है, लेकिन इसके माध्यम से हम अपने सैनिकों को यह महसूस करवा सकते हैं कि पूरा देश उनके साथ खड़ा है। उनके लिए हर दरवाजा खुला रहे, हर रास्ता आसान हो।

सैनिकों के परिवारों का सम्मान

सैनिकों के परिवार भी इसी सम्मान के हकदार हैं, जो अपनों को सीमाओं पर भेजकर राष्ट्र सेवा में अप्रत्यक्ष रूप से योगदान दे रहे हैं। उनका सम्मान करना भी उतना ही आवश्यक है जितना सैनिकों का। ये परिवार भी अपनी कठिनाइयों को सहते हुए अपने सैनिकों को मानसिक और भावनात्मक समर्थन देते हैं।

सैनिकों के सम्मान की नई परंपरा

हमारे समाज में त्योहारों और विशेष अवसरों पर हम देवताओं का पूजन, भंडारे और कीर्तन करते हैं, लेकिन क्या हमने कभी सोचा है कि वे सैनिक, जो हमारी स्वतंत्रता की रक्षा के लिए सीमा पर लड़ते हैं, उनके लिए क्या किया? क्या हम उनके लिए भी एक नई परंपरा की शुरुआत नहीं कर सकते? जैसे हर शहर, हर गाँव में सैनिकों के सम्मान में छोटे-बड़े समारोह हों, स्कूलों और कॉलेजों में 'सैनिक सम्मान दिवस' मनाया जाए, जहाँ उनके साहस की कहानियाँ सुनाई जाएँ।

सरकारी सहायता और नागरिक पहल

सरकार और नागरिक समाज को मिलकर सैनिकों के सम्मान को एक राष्ट्रीय परंपरा बनाना चाहिए। इसके लिए स्थानीय संगठनों, सामाजिक समूहों और व्यापारिक प्रतिष्ठानों को प्रेरित किया जाना चाहिए कि वे सैनिकों को विशेष सुविधाएं दें। उदाहरण के लिए, होटलों में उनके ठहरने की व्यवस्था, रेस्तरां में भोजन और परिवहन में रियायतें दी जा सकती हैं।

एक नई परंपरा की शुरुआत

आइए, हम एक नई परंपरा की शुरुआत करें, जहां हर सैनिक को उसकी बहादुरी और त्याग के लिए सर्वोच्च सम्मान दिया जाए। यह न केवल हमारे राष्ट्रीय चरित्र का प्रतीक होगा, बल्कि हमारे समाज की एक सकारात्मक छवि भी प्रस्तुत करेगा।

सैनिकों के प्रति हमारा सम्मान केवल भाषणों और नारों तक सीमित न रहे। यह हमारे व्यवहार और आचरण में झलकना चाहिए। हमारे सैनिक हमारे असली नायक हैं, और उन्हें हर कदम पर सम्मानित करना हमारा कर्तव्य है।

हमारे सैनिकों का बलिदान और उनके द्वारा किए गए संघर्षों का मूल्यांकन केवल शब्दों से नहीं किया जा सकता। वे हमारे असली नायक हैं, जो बिना किसी शिकायत के अपनी जान की बाजी लगाकर हमें सुरक्षा प्रदान करते हैं। उनका सम्मान केवल सरकारी दायित्व नहीं, बल्कि प्रत्येक नागरिक का नैतिक कर्तव्य है। हम अपने दैनिक जीवन में छोटे-छोटे कार्यों से उनकी बहादुरी को सम्मानित कर सकते हैं—चाहे वह ट्रेन में एक सीट का त्याग हो, सड़क पर मदद करना हो, या उन्हें निशुल्क सेवाएं प्रदान करना हो।

सिर्फ सैनिकों को ही नहीं, उनके परिवारों को भी उतना ही सम्मान मिलना चाहिए, क्योंकि वे भी अपने प्रियजनों को राष्ट्र सेवा में भेजकर मानसिक और भावनात्मक संघर्ष का सामना करते हैं। यह हम सबकी जिम्मेदारी है कि हम उन्हें अपनी आदतों, व्यवहारों और परंपराओं के माध्यम से सम्मानित करें।

देशभर में एक ऐसी संस्कृति का निर्माण करना चाहिए, जहाँ सैनिकों को केवल औपचारिक सम्मान न मिले, बल्कि वे समाज के एक अहम अंग के रूप में सम्मानित हों। यह न केवल उनके साहस का सम्मान होगा, बल्कि यह हमारी राष्ट्रीय एकता और शक्ति को भी मजबूत करेगा।

जय हिंद!

राष्ट्र रक्षकों का सम्मान

युद्ध की आहट से लौटते कदम,
वो वीर, जो सीमाओं का श्रृंगार हैं,
छुट्टियों से अपने कर्तव्य की ओर,
बिना आरक्षण, बिना थके, बढ़ते हौसले हैं।

अगर रेलगाड़ी में उन्हें टॉयलेट के पास,
या किसी कोने में खड़ा पाएं,
तो अपने आरक्षित स्थान पर बैठाएं,
क्योंकि वे हमारे राष्ट्र की ढाल हैं।

सड़कों पर चलें अगर उनकी थकी पगडंडियाँ,
तो अपने वाहनों से अगले पड़ाव तक छोड़ आएं,
ये वही कंधे हैं, जिन्होंने सीमाओं को थामा है,
ये वही कदम हैं, जिन्होंने सरहदों को सजाया है।

राष्ट्र रक्षकों का सम्मान करें,
उनके बलिदानों का मान करें,
क्योंकि जब हम चैन से सोते हैं,
तब वे नींद का त्याग कर,
देश का कर्तव्य निभाते हैं।

-डॉ सत्यवान सौरभ

ऑपरेशन सिंदूर

नाम में एक शक्ति है,
एक गर्व, एक पहचान,
मांग का सिंदूर, रक्षा का प्रण,
धधकते सूरज सा वीरता का सम्मान।

यह सिर्फ एक शब्द नहीं,
यह हृदय की ललकार है,
यह मातृभूमि की माटी में,
शौर्य का सिंदूर भरने का अधिकार है।

जब सीमाएं पुकारें,
तो यह नाम गूंजता है,
हवा में गर्जन बनकर,
शत्रु के हौसलों को कुचलता है।

यह वो पुकार है,
जो बिछुड़ते परिवारों की आँखों में,
आंसुओं के बीच मुस्कान भरती है,
यह वो शक्ति है जो बलिदान की नींव रखती है।

नाम में एक शक्ति है,
एक ज्वाला, एक अभिमान,
यह सिर्फ 'सिंदूर' नहीं,
यह राष्ट्र के स्वाभिमान का ऐलान है।

- प्रियंका सौरभ

भारत छोड़ेगा नहीं सिंधु और सिंदूर की यह चोट दुश्मन भूल नहीं पायेंगा

सिंधु और सिंदूर की प्रबलता से भारत ने यह बता दिया कि हम आतंक का खत्मा दुश्मनों की जमीन पर करने में पूर्ण रूप से सक्षम है। एक और विकसित भारत का डंका जब पूरे विश्व में बज रहा है,वहीं हम विश्व को अपनी ताकत भी दिखा रहे हैं। यह कन्याकुमारी से कश्मीर तक भारत एक है। तभी तो इसकी संस्कृति के सभी कायल हो गए हैं। भारत की एकजुटता व भाईचारे-सौहार्द से दुनिया भी मुरीद है, फिर ऐसे समय में भारत को तिरछी नजर से देखने वाले दुश्मनों को यह बात अच्छी नहीं लग रही है। तभी तो दुश्मनों की नजर हमारे भारत के जम्मू-कश्मीर को लग गई है। जम्मू कश्मीर की फिजा , अमन व शांति के तराने गाते हुए युवा पीढ़ी आगे बढ़ रही है , केसर की क्यारियों में जो सकारात्मक ऊर्जा आ रही थी, वह स्थानीय जनमानस के लिए ज़िंदगी का सुकून था, जिसे एक बार फिर इन देशद्रोही और दुश्मनों के इस आतंक के काले चेहरों ने अपना नकारात्मक खेल दिखाना शुरू कर दिया । आज़ादी के बाद जम्मू कश्मीर में यहाँ डर, भय, नफ़रत और आपसी मतभेद के बीज इतने बो रखे थे कि शांति आते-आते इतने वर्ष लग गए थे। जहां पत्थरबाज़ी, गोलीबारी और बम धमाके से दहलते कश्मीर में अब कुछ वर्षों से अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का स्वाद आया था। तभी पड़ोसी दुश्मनों की पनाह में रहने वाले आतंकवादियों ने आतंक का ऐसा काला साया फैला दिया, जिसकी दहशत सालों तक कश्मीर स्थित पहलगाम में बनी रहेगी। भयभीत मंजर के कारण अब तो शब्द जो मौन हो गए हैं, जिसने भी इस दृश्य को देखा, वह थम सा गया है। ऐसी खौफनाक मौत, जो उन बहन, बेटियों, महिलाओं और बच्चों ने अपने परिजनों की सामने देखी, जिनका सिंदुर उजड़ा गया वह कभी भूल नहीं सकेंगे। जब भारतीय सुहागन स्त्रियों का सुहाग उनके सामने आतंकवादियों ने उजाड़ दिया। हम उसी न्याय के लिए भारत ने आपरेशन सिंदुर से उनके परखच्चे उड़ा दिए। उन नारी शक्ति ने जो आतंक का काला साया देखा, उनसे वह कभी भी नहीं भूलेगी। उन विधवा स्त्रियों सुहाग को मरने वालो को ऐसा ही दर्द दे कि उनकी सात पुश्तें भी डर व भय में जिएंगी । उसी बात को भारत सरकार ने अपनी एकता व संयुक्त पहल से ऐसा ज़बाब दिया कि उनकी आवाज ही नहीं निकल रही होगी । बहुत हो चुका अब पड़ोसी दुश्मन पकिस्तान को आर- पार की लड़ाई में जबाब देने का सही समय है । निहत्थे लोगों को धर्म के आधार पर मारने वाले इन आतंकियों को नेस्तनाबूद करने का यह प्रयास की प्रतीक्षा हम भारतीय को थी । आखिर भारत के लोग आतंक के काले साए के तले कब तक दबे रहेंगे ? हम भी अपनी आवाज को बुलंद कर देंगे।

सदियों से जम्मू-कश्मीर का पहलगाम, जो पर्यटकों के लिए जन्नत से बढ़कर था, हमेशा गुलजार रहता था, उस जगह आतंकियों ने तबाही मचाई है तो इस विनाशलीला को देखने के बाद फिर क्या कोई वहां जाएगा ? विकास यात्रा को रोकने वाले यह देशद्रोही है । इसी के दम पर तो कश्मीर के स्थानीय लोगों को रोजगार मिलता है। पर्यटन क्षेत्र को गति देने वाले लोगों को गोलियों से भून डालने वाले आतंकीयो को अब इसी तरह के सबक की जरूरत है ।

बेगुनाह पर्यटकों को मौत के घाट उतारने और नापाक इरादे रखने वालों ने बहुत कायराना हरकत की थी। एक खुशहाल राज्य में पहलगाम हमला एक काला दाग़ है, जो बहुत सालों तक भी नहीं मिटने वाला नहीं है। कश्मीर का लाल चौक, जहां तिरंगा शान से लहरा रहा है, लेकिन वहाँ की आबो-हवा में अब न जाने कैसी हवा चल रही है ?ऐसा न हो ऐसी जगहों पर इन पर्यटकों की चहल-पहल खत्म हो जाए। इसकी चिंता करते हुए राज्य व भारत सरकार को मिलकर लोगों की सुरक्षित वातावरण मुहैया कराने की जरूरत है। भारत सरकार को मज़बूत जवाबदेही लेनी होगी। ऐसा सुरक्षित वातावरण व सुरक्षा की व्यवस्था करनी चाहिए, जिससे यहाँ का करोबार बर्बाद न हो।

कुछ साल पहले ही कश्मीर ने अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता को सही अर्थ में करीब से देखा है, कश्मीर के लोगों ने सही तरीके से ज़ीना सीखा है, तब पड़ोसी दुश्मन के नकाबपोश आतंकियों ने उन पर कहर बरपाया है। इस बार तो आतंक ने धर्म को देखकर मौत दी। ऐसा लगता है कि हमारी एकता, अखंडता, भाईचारे व भारतीय संस्कृति को खण्डित करने का कुचक्र रच रहे इन दुश्मनों को सबक सिखाने का सही समय आ गया है । जो प्रहार भारत पर आतंकवादियों ने किया है, तो इन्हें भारत अब छोड़ने वाला नहीं है। इनके आकाओं को भी हमारी देश की सेना ठिकाने लगाएगी। यही सही वक्त है, जब पाकिस्तान में बैठे इन आतंकवादियों के आकाओं को खत्म में पूरी ताकत भारत ने झोंक दी है । इस का जीता-जागता सबूत आपरेशन सिंदुर है । इसी के इंतजार में हमारी सुरक्षा एजेंसियों व तीनों सेना कर रही थी। हम सभी लोग यही चाहते हैं कि कश्मीर में अमन-चैन बना रहे । भारत ने हमेशा विश्व को बताया कि दुश्मन पाकिस्तान का काम आपस में दुश्मनी बढ़ाने का है। इस बार तो इस बात पर मुहर भी लग गई कि धर्म के नाम से भारत को घुसपैठिए, और आतंकवादी सहित दुश्मन पाकिस्तान बांट रहा है, पर हम भारतीयों को बांटने का काम दुश्मन देश कितना भी कर ले, उनके आतंकी हमारे मनोबल को कमजोर कभी भी नहीं कर सकते हैं।

भारत कभी भी यह नहीं चाहता कि यहाँ का नागरिक आपस में लड़ें। हमें आपस में लडाने की साज़िश दुश्मन कर रहा है। जम्मू- कश्मीर के विकास व अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के पंख लगाने के बाद कुछ देशद्रोही लोग भी हैं, जो उनका साथ अभी भी दे रहे हैं। हिन्दुओं को निकाल-निकाल कर मारने वाले लोग इंसान नहीं, बल्कि जानवर से भी गए-बीते थे। मानवीय मूल्यों को धराशायी करने वाले आतंकवादियों को चुन-चुन कर मारने की भारत की क़सम पूरी हो रही है । यही सही समय है । भारत के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने साफ-साफ कह दिया है कि अब जैसे को तैसा जबाब दिया जाएगा। अब भारत मकबूल जबाब देने की और अग्रसर है । नारीशक्ति के त्याग को समर्पित आपरेशन सिंदुर से दुनिया अब भारत की ताकत को विश्व देखा रहा है । कब तक हम सत्य, अहिंसा व भाईचारे के संवादों से मैत्रीपूर्ण संबंध रखें, जबकि आतंकवाद के बदनुमा चेहरे से लिप्त पाकिस्तान को सीधी बात समझ में नहीं आती है। इसलिए, अब ईंट का जवाब पत्थर से देने का निर्णायक समय आ गया है। जो आतंकी बोल रहा था कि मोदी को बता देना। तभी तो भारत के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने यहां बता दिया। आतंकवादियों को जबाब दिया आपरेशन सिंदुर का नाम देकर उनके घरों में घुस कर उनके ठिकाने को तहस-नहस कर दिया। और यह भी बता दिया कि दुश्मन पाकिस्तान आतंक को पनाह देना बंद करें , नही तो भविष्य में फिर इससे भी घातक क़दम उठाने में भारत पीछे नहीं हटेगा। धर्म पूछ के मारने वाले देखो क्या है हमारा धर्म क्योंकि सिंधु और सिंदूर ने भारत की ताकत बता दी है।

हरिहर सिंह चौहान

युद्ध की छाया में दुकानें सामान खरीदने वाले लोगों से भरी हुई हैं

मनोरंजन सासमल , स्टेट हेड ओड़िशा

भूबनेश्वर : यह अज्ञात है कि युद्ध होगा या नहीं। केवल नागरिक सुरक्षा मॉक ड्रिल का आदेश दिया गया है। लोग बहुत मूर्ख हैं. शाम को, टीवी पर युद्ध के बारे में सुनने के बाद, मैं सीधे बाजार की ओर चल पड़ा। आलू और प्याज की दुकानों पर भीड़ उमड़ पड़ी। यूनिट-1 परिबा हाट में मंगलवार शाम को काफी चहल-पहल थी।आलू की दुकान पर विशेष रूप से भीड़ थी। आलू-प्याज खरीदने की होड़ मच गई। बाजार ही नहीं, बल्कि दाल, चावल, चटनी और जरूरी सामान बेचने वाली दुकानों पर भी आज शाम पहले से ज्यादा भीड़ थी। लोग अपनी आवश्यकता से अधिक खरीद रहे हैं। सिर्फ बाजारों में ही नहीं, शहर की विभिन्न छोटी किराना दुकानों, मॉल और पारिवारिक दुकानों में भी भीड़ देखी गई। लोगों का डर देखकर व्यापारी भी घबरा रहे हैं। बाजार में आलू की भरपूर आपूर्ति के बावजूद कुछ

दुकानदारों ने आज आलू नहीं बेचा। वे इसे काले बाजार के लिए जमा कर रहे थे। कुछ स्थानों पर इसे ऊंचे दामों पर बेचे जाने की भी शिकायतें मिली हैं। आलू 20 रुपये की जगह 25 रुपये प्रति किलो बिक रहा है। इसी तरह प्याज 30 से 35 रुपये बिक रहा है और परीबा का दाम भी पहले से थोड़ा अधिक है। कुबेरपुरी आलू व्यापारी संघ के संपादक शक्तिशंकर मिश्रा ने बताया कि अभी भंडारण में पर्याप्त मात्रा में आलू है। इसलिए डरने की कोई जरूरत नहीं है. लोगों को बाजार से उतना ही आलू खरीदना चाहिए, जितनी उन्हें जरूरत हो। अन्यथा आलू की कमी हो जायेगी। भुवनेश्वर के अतिरिक्त जिला मजिस्ट्रेट रुद्रनारायण मोहंती ने कहा कि कालाबाजारी की कोई सूचना नहीं मिली है। यदि कालाबाजारी हुई तो सख्त कार्रवाई की जाएगी।

ओडिशा के इन 12 जिलों को निशाना बना सकता है पाकिस्तान

मनोरंजन सासमल , स्टेट हेड ओड़िशा

भुबनेश्वर: युद्ध की आशंका के चलते ओडिशा के 12 जिलों को अलर्ट पर रखा गया है। निशाने पर अंगुल, खोरधा, बालासोर, भद्रक, केंद्रपाड़ा, जगतसिंहपुर, गंजम, ढेंकानाल, पुरी, कोरापुट और सुंदरगढ़ हैं। इन जिलों की पहचान एमसीडीआरएल के लिए की गई है क्योंकि ये अत्यधिक संवेदनशील क्षेत्र हैं।तालचेर श्रेणी 1 में है, जबकि बालासोर, कोरापुट, भुवनेश्वर, गोपालपुर, हीराकुंड, राउरकेला और पारादीप श्रेणी 2 में हैं। श्रेणी 3 में भद्रक, ढेंकनाल, जगतसिंहपुर और केंद्रपाड़ा जिले शामिल हैं। इसी प्रकार, कटक, पुरी और पारादीप बंदरगाह क्षेत्रों की पहचान उच्च जोखिम वाले क्षेत्रों के रूप में की गई है। हालाँकि, इस बारे में काफी जानकारी प्राप्त हो चुकी है कि इन जिलों को रक्षा तैयारी मॉक ड्रिल के लिए क्यों चुना गया है। औद्योगिक क्षेत्र होने के कारण तालचेर को अत्यधिक

संवेदनशील क्षेत्र के रूप में श्रेणी-1 में शामिल किया गया है। तालचेर कोयला निर्यात केंद्र है, इसलिए इस औद्योगिक क्षेत्र में दुर्घटनाओं का खतरा अधिक रहता है। यहां की जनसंख्या भी अधिक है क्योंकि यहां कई औद्योगिक स्थल बने हैं। यदि युद्ध की स्थिति उत्पन्न होती है तो यहां काफी जनहानि होने की संभावना है।

इसी प्रकार, श्रेणी-2 के क्षेत्रों बालासोर, कोरापुट, भुवनेश्वर, गोपालपुर, हीराकुंद, राउरकेला और पारादीप में युद्ध का खतरा है, क्योंकि ये तटीय क्षेत्र हैं तथा यहां बंदरगाह और उद्योग विकसित हैं। चूंकि गोपालपुर और पारादीप समुद्री सीमा पर स्थित हैं, इसलिए पानी के रास्ते हमला होने की संभावना बनी रहती है। मछुआरों की जान खतरे में है। हमलावर जहाज पर नियंत्रण कर सकते हैं, लोगों को बंधक बना सकते हैं, तथा अपनी मांगें मनवा सकते हैं। श्रेणी 3 में भद्रक, ढेंकनाल, जगतसिंहपुर और केंद्रपाड़ा शामिल हैं, जो तटीय और विकसित जिले हैं, इसलिए हमलावर निश्चित रूप से इन जिलों को नुकसान पहुंचाना चाहेंगे। इसलिए इन सभी क्षेत्रों को हाई अलर्ट पर रखा गया है।

सालासर बालाजी महाराज का दर्शन किया

राजस्थान चुरु स्थित सालासर बालाजी महाराज दर्शन व पुजा अर्चना में उपस्थित विकास कुमार शर्मा राजेंद्र प्रसाद शर्मा अध्यापक भगवती देवी रेखा शर्मा प्रियंका शर्मा अध्यापिका विकास महर्षि किरण शर्मा (सहाक्षयक नर्सिंग अधीक्षक भोपाल एम्स भोपाल) ने सालासर बालाजी महाराज के दरबार में पहुँच कर लिया आशीर्वाद साथ में राम जी पुजारी व अन्य उपस्थित रहे।

झारखंड आन्दोलन कारी भाई कपूर बागी को श्रद्धांजलि देने चांडिल पहुंचे मुख्यमंत्री

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट झारखंड

सरायकेला। अलग झारखंड राज्य निर्माण के आंदोलन में जिन लोगों का योगदान रहा उसमें तत्कालीन सिंहभूम अब सरायकेला खरसावां जिला के कपुर बागी (टुडू) की रम भूमिका से इंकार नही किया जा सकता । जिनका कल निधन हो गया । रिश्ते में अपने फूफेरे भाई को श्रद्धांजलि देने के लिए स्वयं मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन चांडिल के विलगू-चाकुलिया स्थित उनके पैतृक आवास पहुंचे. पार्थिव शरीर पर माल्यार्पण कर भावभीनी श्रद्धांजलि दी. मुख्यमंत्री कपूर कुमार टुडू (कपूर बागी) की शेष यात्रा में भी शामिल हुए. मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ने कहा, 'कपूर टुडू का अलग झारखंड राज्य के आंदोलन में अहम योगदान था. सामाजिक सरोकार से भी उनका जीवन भर रहा नाता.' मुख्यमंत्री ने कहा कि कपूर टुडू के रूप में उन्होंने अपना एक भाई, दोस्त और झारखंड आंदोलनकारी खो दिया. उनका निधन न सिर्फ उनकी पारिवारिक क्षति है, बल्कि इस राज्य ने एक ऐसे व्यक्तित्व को खो दिया है, जिन्होंने अलग राज्य के संघर्ष से लेकर अपने पूरे जीवन काल में सामाजिक कार्यकर्ता के तौर पर आम लोगों की तकलीफों को दूर करने का प्रयास करते रहे मुख्यमंत्री ने कहा कि कपूर बागी का निधन समाज व पार्टी राजनीति के लिए अपूरणीय क्षति है. दिवंगत कपूर कुमार टुडू को अश्रुपूर्ण नमन. कपूर कुमार टुडू रिश्ते में मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन के फुफेरे भाई थे. उनके परिवार में मां सुखी टुडू, पत्नी सुकुरमनी टुडू, २ पुत्र, एक पुत्री है.

झारखंड से दो छात्रा स्कुल निर्माण कार्य मे लगे मजदुर के साथ दुमका से गायब

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड झारखंड

रांची। दुमका जिला में उसी थाना क्षेत्र स्थित एक निजी विद्यालय की कक्षा छह में पढ़ने वाली दो नाबालिग छात्राएं उम्र 12, सोमवार की दोपहर छुट्टी के बाद गायब हैं. घरवालों ने स्कूल निर्माण कार्य में लगे मजदूर साहिब सिंह पर बहला फुसलाकर बाहर ले जाने का आरोप लगाया है. परिजनों से सूचना मिलने के बाद नगर थाना की पुलिस मौके पर पहुंची और छानबीन की.

थाना प्रभारी नंद किशोर प्रसाद के नेतृत्व में पुलिस टीम दोनों छात्राओं की तलाश में स्कूल और आसपास लगे सीसीटीवी को खंगालती रही. जांच में पता चला कि दोनों छात्राएं विद्यालय से बाहर आईं और उसके बाद कहीं चली गईं. पुलिस को रेलवे स्टेशन में लगे एक सीसीटीवी से पता चला है कि दोनों छात्राएं साहिब सिंह के साथ भागलपुर जाने वाली ट्रेन में चढ़ीं. पुलिस ने युवक के मोबाइल की जांच की तो बिहार के बौंसी के बाद से उसका मोबाइल बंद था. पुलिस दोनों की तलाश में जुटी है.

दोनों छात्राएं सोमवार सुबह घर से निकलीं, दोपहर को छुट्टी होने के बाद जब घर नहीं पहुंचीं तो परिजन ने नगर थाना की पुलिस को सूचित किया. सीसीटीवी में दोनों छात्राएं एक साथ बाहर निकलते दिखीं और उसके बाद घर जाने की बजाय अंबेडकर चौक की ओर चली गईं.

पुलिस ने इस मार्ग में लगे सीसीटीवी को देखा, लेकिन पता नहीं चला. एक छात्रा के परिजनों ने पुलिस को बताया कि स्कूल परिसर में भवन निर्माण कार्य में लगे एक मजदूर साहिब सिंह से उसकी दोस्ती थी. घरवालों ने शक जाहिर किया कि साहिब सिंह ही बहला फुसलाकर कहीं ले गया है.

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095. newstransportvishesh@gmail.com
(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023